प्रो० पी.के. वार्ष्णेय

(जवागत प्राचार्य)

महाविद्यालय का लक्ष्य

महाविद्यालय का लक्ष्य छात्र/छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को एक ऐसा अनुकूल वातावरण प्रदान करना है जिसमें सभी अपनी क्षमता के अनुरुप दैनिक जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करें।

हमारा उद्देश्य

हमारा उद्देश्य राष्ट्र की युवा शक्ति को वह दिशा और सामर्थ्य प्रदान करना है। जिससे वह भविष्य के भय, शोषण, असमानता, अन्याय, भ्रष्टाचार और गरीबी से मुक्त तथा सर्वरुपेण समृद्ध भारत का निर्माण कर सके।

Email : dragdc.bisauli@rediffmail.com
Website : www.dragdcbisauli.org

दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिसौली (बदायूँ)
योग : कर्मसु कौशलम्

प्रेरणा

महाविद्यालय पत्रिका

वार्षिक पत्रिका संयुक्तांक (2021-23)

दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बिसौली, जिला बदायूँ (उ०प्र०)

NAAC ACCREDITED - GRADE "B"

महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली से सम्बद्ध
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भारत सरकार द्वारा 12-बी एवं 2 एफ में मान्यता प्राप्त

स्मार्ट फोन/टेबलेट वितरण

भाजपा जिलाध्यक्ष श्री राजीव गुप्ता उप जिलाधिकारी बिसौली सुश्री ज्योति शर्मा व सी.ओ. बिसौली टेबलेट वितरण करते हुए

लाभार्थी छात्र/छात्रायें

महाविद्यालय प्राचार्य एवं प्राध्यापक गण

प्रथम चरण के समस्त टेबलेट लाभार्थी

द्वितीय चरण में स्मार्ट फोन वितरण करते हुए एस.डी.एम बिसौली एवं प्रान्तीय उपाध्यक्ष भाजपा श्री दुर्गेश वार्ष्णेय

द्वितीय चरण के लाभार्थी

स्मार्ट फोन/टेबलेट वितरण

जिला सेवायोजन कार्यालय बदायूँ के सौजन्य से महाविद्यालय में बृहद रोजगार मेले का शुभारंभ करती एस.डी.एम. बिसौली

रोजगार मेले में पंजीकरण कराते हुए महाविद्यालय के छात्र/छात्रायें

रोजगार मेले में आई कम्पनी के समक्ष साक्षात्कार देते हुए महाविद्यालय के छात्र/छात्रायें

बृहद रोजगार मेले में एस.डी.एम. बिसौली, जिला क्षेत्रीय सेवायोजन अधिकारी श्री सचिन कुमार, परवेज खान, प्राचार्य डॉ० सपना भारती कैरियर एवं काउंसिलिंग प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ० एम.एम. वार्ष्णेय, अन्य

बृहद रोजगार मेले में उपस्थित रोजगार हेतु आवेदक महाविद्यालय के छात्र/छात्रायें

सफल रोजगार मेले की शुभकामनायें देती हुई एस.डी.एम बिसौली

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027
22 मार्च 2023

सत्यमेव जयते

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ द्वारा वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिकाएं छात्रों एवं अध्यापकों की सृजन क्षमता को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होती हैं। मुझे आशा है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका में ऐसी ज्ञानवर्द्धक और रचनात्मक पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ जन सामान्य के लिये भी उपयोगी होगी।

वार्षिक पत्रिका श्प्रेरणा के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

भवदीय
आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

डॉ0 मदन मोहन वार्ष्णेय (मुख्य संपादक) ''प्रेरणा''
दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ।

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल www.upgovernor.gov.in

प्रो० ब्रह्मदेव
निदेशक उच्च शिक्षा, उ.प्र.

उच्च शिक्षा निदेशालय उ.प्र.
सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001
0532-2623874 (का०)
0532-243919 (फैक्स)
Email : infodheup21@gmail.com
Date : 12/04/2023

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ अपनी वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' के पंचदश (संयुक्तांक) का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का अवसर प्राप्त होगा।

मैं आशा करता हूँ कि वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए अभिव्यक्ति का एक अच्छा मंच साबित होगी तथा इसमें महाविद्यालय से सम्बंधित अनेक महत्वपूर्ण जानकारियों का समावेश किया जायेगा।

वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' के सफल प्रकाशन हेतु मैं सम्पादक मण्डल छात्र-छात्राओं एवं समस्त महाविद्यालय परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

प्रो० (ब्रह्मदेव)

प्रतिष्ठा में,

डॉ० सपना भारती (प्राचार्या)
दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ।

प्रो. के. पी. सिंह
Prof. K.P. Singh
कुलपति
Vice-Chancellor

महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली – 243006
MAHATMA JYOTIBA PHULE ROHILKAND UNIVERSITY,
BAREILLY - 243006

चरैवेति चरैवेति

महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

दिनांक: 24.03.2023

सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, जिला बदायूँ अपनी पत्रिका *''प्रेरणा''* के पंचदश (संयुक्तांक) का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सार्थक एवं प्रेरणादायी पाठ्य-सामग्री उपलब्ध होगा, इसके साथ-साथ विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को लेख के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर भी मिल सकेगा।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को ज्ञानवर्द्धक, रोचक साहित्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

शुभकामनाओं सहित!

(के0पी0 सिंह)

डा0 मदन मोहन वार्ष्णेय (मुख्य संपादक)
दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ।

Ph./फोन : कार्या./off.+91-581-2527282, निवास/Resi. +91-581-2523378, फैक्स/Fax कार्या-/off. +91-581-2528384,
निवास/Resi. +91-581-2523334, e mail : vcoffice@mjpru.ac.in

डॉ0 बिन्द्रावन लाल शर्मा
सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय उ.प्र.
प्रयागराज
0532-2623874 (का०)
8299795178 (मो०)
दिनांक : 16/05/2023

सन्देश

मैं यह जानकर अति प्रसन्न हूँ कि दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ अपने महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में लेखन प्रतिभा को विकसित करने तथा उनकी अभिव्यक्ति को मौलिकता प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय की पत्रिका ''प्रेरणा'' के पंचदश (संयुक्तांक) प्रकाशित कराने जा रहा है। यह एक प्रशंसनीय कार्य हैं। महाविद्यालय परिवार के साथ देश एवं समाज के सर्वांगीण विकास की दिशा में ''प्रेरणा'' पत्रिका सशक्त माध्यम बन सकती है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका के माध्यम से शिक्षक/शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र/छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा साथ ही उनका ज्ञान संवर्द्धन भी होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्य एवं महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

प्रो० (बी.एल. शर्मा)

प्रो० डॉ0 सपना भारती (प्राचार्या)
डॉ0 मदन मोहन वार्ष्णेय (मुख्य संपादक) ''प्रेरणा''
दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ।

प्रो० (डॉ०) सन्ध्या रानी शाक्य

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी,
बरेली एवं मुरादाबाद मण्डल बरेली
दूरभाष 0581-2423799, 9410219915
दिनांक 20.03.2023

सन्देश

आदरणीय महोदया,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि दमयन्ती राज आनन्द राजकीय महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ अपनी वार्षिक पत्रिका *''प्रेरणा''* के पंचदश (संयुक्तांक) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ऐसे लेखों व तथ्यों को स्थान दिया जायेगा जो सभी विद्यार्थियों व पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होगें व इससे एकेडमिक गतिविधियों को बढ़ावा भी मिलेगा। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं में लगन से अपने क्षेत्र में अग्रसर होने, बौद्धिक विकास व भविष्य को और अधिक बेहतर बनाने में सफल सहयोग करेगी। सम्पादक मण्डल व महाविद्यालय का यह पत्रिका सम्पादित करने का कार्य एक सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सादर।

भवनिष्ठ

प्रो० डॉ० सन्ध्या रानी शाक्य

प्रतिष्ठा में,

डॉ० सपना भारती (प्राचार्या)

दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ।

प्राचार्य की कलम में

प्रो० सपना भारती
प्राचार्या

महाविद्यालय की पत्रिका ''प्रेरणा'' पंचदश समग्र अंक प्रकाशित होने जा रहा है यह मेरे लिए बड़े ही गौरव का विषय है। मैं अपने कुछ विचार साझे कर रही हूँ।

सफलता की तीन सहेलियाँ है- ''समझदारी, ईमानदारी जिम्मेदारी''

इन्ही का अनुसरण करते हुए महाविद्यालय की उन्नति के लिए महाविद्यालय परिवार निरन्तर प्रयासरत है। महाविद्यालय का उद्देश्य है, राष्ट्र की युवा शक्ति को नयी दिशा और दशा प्रदान करना ताकि आज का युवा न केवल श्रेष्ट नागरिक बल्कि युवा वर्ग भारतीय मूल्यों एवं आदर्शो को अपने जीवन का आधार बनाकर वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना सके।

युवा पीढ़ी के सर्वांगीण विकास को ध्यान रखते हुए शासन ने ''नयी शिक्षा नीति'' को लागू किया। अध्ययन के साथ युवा अन्य कौशल को भी सीख सकें। शिक्षा में अन्तराल को खत्म किया गया जिससे किसी कारण से शिक्षा पूर्ण न होने के कारण युवा किसी भी स्तर पर शिक्षा (डिग्री) व्यर्थ न हो इसी का वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा/कम्प्यूटर ज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए वाई-फाई सुविधा दी गयी तथा महाविद्यालय में ई-लर्निंग पार्क को विकसित किया गया जिससे विद्यार्थियों को ऑन लाइल अध्ययन सुगम हो सके शासन ने डिग्री स्तर पर टेबलेट व स्मार्ट फोन भी उपलब्ध कराये हैं। जिसका विद्यार्थियों द्वारा सदुपयोग किया जा रहा है। युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से सत्र 2020-21, 2022-23 में रोजगार मेले का आयोजन कराया गया जिसमें लगभग 344 विद्यार्थियों को रोजगार दिलाया गया। तथा सत्र 2021-22, 22-23 में लगभग 125 टेबलेट फोन और 404 स्मार्टफोन 529 टेबलेट/स्मार्टफोन वितरित किये गये तथा उद्यमिता रोजगार मेले के माध्यम से विद्यार्थियों को लघु उद्योग धंधे की जानकारी दी।

महाविद्यालय में रुसा के अर्न्तगत कम्प्यूटर लैब तथा छात्राओं के लिए शौचालयों का निर्माण कराया जा रहा है जिसमें कम्प्यूटर लैब दि0 28-01-23 को हस्तगत कर लिया गया है। वर्ष 2023-24 में नैक (NAAC) का पुनर्गठन किया जाना है तथा एक वृहद्ध (100 सीट का) सुसज्जित (AUDITORIUM) (प्रेक्षा गृह) का प्रस्ताव भेजा जा चुका है। महाविद्यालय में विज्ञान संकाय में परास्नातक (भौतिकी, रसायन, जीव तथा वनस्पति विज्ञान) स्तर पर भी प्रस्ताव भेजा जा चुका है तथा कला संकाय में (संस्कृत) विषय में परास्नातक स्तर पर भी प्रस्ताव भेजा जा चुका है। महाविद्यालय के सभी विद्वान जन लगातार महविद्यालय को बुलंदियों पर पहुंचाने के लिए प्रयासरत है।

''जो बीच राह में बैठ गये, वो बैठे ही रह जाते हैं।
जो लगातार चलते रहते हैं, वो निश्चय ही मंजिल को पाते है।

अंत मे महाविद्यालय पत्रिका ''प्रेरणा'' के पंच दश (समग्र) अंक के प्रकाशन की श्रृंखला को सफलता पूर्वक बनाये रखने हेतु समस्त सम्पादक मण्डल छात्र/छात्राओं, कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाई देती हूँ।

प्रसंगवश .....

गंगा जमुनी संस्कृति की अविरल धारा में अभिसिंचित, सौहार्द के प्रतीक बिसौली नगर के हदय अंचल में स्थित दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिसौली की पत्रिका 'प्रेरणा' को आपके हाथों में सौंपते हुए असीम हर्षानुभूति हो रही है, महाविद्यालय से प्रकाशित होने वाली पत्रिका में एक ओर उसकी समस्त विकासात्मक गतिविधियों का प्रतिबिम्बन होता है दूसरी ओर यह अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता एवं उनके भीतर स्फुरित होती लेखन अभिरूचि को उजागर करने का माध्यम बनती है। पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति क्षमता को एक दिशा एवं स्वरूप प्राप्त होता है, जो भविष्य में उनकी रचनात्मक प्रतिभा के उन्नयन का उत्सर्जन बिन्दु बन जाता है। ज्ञान के व्यापक धरातल पर चिन्तन तथा आत्मबोध का यह प्रयास भविष्य में लेखन हेतु अभिप्रेरित ही नहीं करता अपितु उनमें उच्च संस्कार, बौद्धिक लगन एवं ज्ञानात्मक बोध का अभिसंचरण भी करता है।

निसदेंह महविद्यालय का उद्देश्य शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना, नारी उन्नयन एवं स्वावलम्बन की ओर दिशा गामी करना ही नहीं अपितु अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के भीतर ज्ञान की पिपासा भरना, उन्हें आत्मविश्वासी बनाना भी है। 'प्रेरणा' वह विचार मंच है जिसके माध्यम से छात्र-छात्राओं की भाव संवेदनाएं स्वत: स्फूर्त होने का अवसर प्राप्त कर सके, हमारी युवा पीढ़ी रचनात्मकता की ओर बढ़ सके, अपने आसपास घट रही घटनाओं के प्रति सजग रहें जीवन के मूल्य मर्यादाओं को समझें, उनका चारित्रिक विकास हो, यही हमारा प्रयास है।

विगत दो सत्रों में छात्र-छात्राओं द्वारा जो लेखन सामग्री 'प्रेरणा' में प्रकाशनार्थ दी गयी उसका अवलोकन करने पर प्रतीत हुआ कि आज की युवा पीढ़ी अपने समसामयिक सामाजिक, राष्ट्रीय ज्वलन्त विषयों के प्रति संजीदा ही नहीं हैं, अपितु उसकी अपनी प्रतिक्रियाएं भी है, निजी विचारणाएं भी हैं। कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की प्रतिक्रिया होती है। छात्र-छात्राओं के युवा मन के जो सपने हैं, आशा आकाक्षांएं हैं, जो प्रश्न प्रति प्रश्न हैं वही उनकी कविताएं है और प्रेरणा की सार्थकता भी है।

इस अंक में कुछ आलेख महाविद्यालय परिवार के सदस्यों के भी है जो छात्र-छात्राओं कोस्वस्थ लेखन की प्रेरणा देगें ऐसा हमारा विश्वास है।

'प्रेरणा' के प्रकाशन के अन्तराल में महाविद्यालय की प्राचार्या महोदया का दिशा निर्देशन हमेशा प्रेरणाष्पद रहा। महविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग एवं शुभकामनाओं के परिणाम स्वरूप ही पत्रिका का प्रकाशन सम्भव हो सका।

हम महाविद्यालय में शिक्षा अर्जित कर रहे छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं, वे शिक्षा, संस्कार, आत्म विश्वास एवं कौशल विकास की सम्पूर्ण सम्भावनाओं से मंडित अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं का उपयोग समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में करेगें। ऐसा हमारा विश्वास है, इन्ही शब्दों के साथ.....

डॉ० मदन मोहन वार्ष्णेय
मुख्य सम्पादक

ज्योति वर्मा
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

सरस्वती वन्दना

हे ज्ञान दायिनी माँ हम शीश झुकाते हैं
शतवार नमन तुमको हम पुष्प चढ़ाते हैं।
हे .....।
बुद्धि का वर दो माँ बुद्धि की दाता हो
हम बच्चे है तेरे तु जग की विधाता है
यह प्यार न टूटे माँ यह विनय सुनाते हैं।
हे .....।
वह ज्ञान हमें दो माँ सारा जग मुस्काये
वह ज्ञान का दीप जलादो अज्ञान न रूक पाये।
अज्ञान हटा दो माँ सुविचार चाहते हैं।
हे .....।
कृपा माँ तुम कर दो सहभाग यह चाहते है।
सहज्ञान जगा दो माँ दुर्भावि उखड़ आये
अन्धकार मिटा दो माँ सहभाव चाहते है।
हे .....।

मुझको मेरा हक दो

मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी,
लेने दो खुली हवा में सांसे बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊंगी
मुझको ..... दिखलाऊँगी,
उड़ने दो किसी पतंग के जैसे,
आसमान को छूँ कर दिखलाऊँगी।
क्या डरते हो हैवानी दुनिया से,
अकेली सब पर भारी पड़जाऊँगी
मुझको ..... दिखलाऊँगी,
माना डगर कठिन है, मंजिल तक फिर भी जाऊँगी
मुझ पर करो भरोसा तुम, कभी न दुःख पहुँचाऊँगी।
मुझको..... दिखलाऊँगी,
लेने दों खुली हवा में सांसे, बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊंगी
उड़ने दो किसी पतंग के जैसे, आसमान को छूँ कर दिखलाऊँगी।
क्या डरते हो हैवानी दुनिया से, अकेली सब पर भारी पड़जाऊँगी
मुझको ..... दिखलाऊँगी।
माना डगर कठिन है मंजिल तक फिर भी जाऊँगी,
मुझ पर करो भरोसा तुम कभी न दुःख पहुचाऊँगी।
मुझको ..... दिखलाऊँगी। करो
हौसले मेरे बुलंद तुम, अधुरे सपने पूर कर दिखलाऊँगी
मत आंको कम मेरी ताकत, संतान का हर फर्ज निभाऊँगी
मुझको ..... दिखलाऊँगी,
समझा देना माता मेरी को, जिसने नारी का हर दुःख झेला हैं
रखे हौसला अब दिन वो दूर नहीं, जब तुम दोनों का सम्मान बढ़ाऊँगी
आएगा कभी बुरा वक्त भी, हर सुख दुःख में, साथ निभाऊँगी
नहीं बनूंगी कमजोर कड़ी में, अपने घर की ताकत बन जाऊँगी।
शान हूँ अपने घर की, कभी न नीचा दिखलाऊँगी,
खेले अगर कोई मेरी आन से, रूप दुर्गा का भर आऊँगी।
मुझको ..... दिखलाऊँगी।
लेने दो खुली हवा में सांसे, बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊँगी।

ऊँची सोच

पैर की मोच और छोटी सोच हमें आगे नहीं बढ़ने देती
टूटी कलम और औरों से जलन खुद का भाग्य लिखने नहीं देती,
काम का आलस और पैसों का लालच हमें महान बनने नही देती।
अपना मजहब ऊँचा और गैरों का ओछा,
ये सोच हमें इन्सान बनने नहीं देती।

जितनी भीड़ रही जमाने में लोग,
उतने ही अकेले होते जा रहे हैं,
इस दुनिया के लोग भी कितने अजीव है ना,
सारे खिलौने छोड कर जज्बातों से खेलते है,
तब दौर पत्थर का था अब लोग पत्थर के है।

सफर का अच्छा हो तो साथ में सामान कम रखिए
तजुर्बा है मेरा मिट्टी की पकड़ मजबूत होती हैं संगमरमर हो तो पर
तो हमने पाँव फिसलते देखे हैं,
पानी मर्यादा तोड़े तो सर्वनाश।

इसलिए हमेशा अपनी वाणी पर सयंम रखो
निखर कर बिखर जाये वो कर्तव्य है,
और जो बिखर कर निखर जाए वो व्यक्तित्व है ।
नाम और बदनाम में क्या फर्क है?
नाम खुद कमाना पड़ता है। बदनामी आपको
कमा के देती है।

अरविन्द कुमार
कक्षा - बी.ए. तृतीय वर्ष

नव भारत निर्माण करेंगे,
इस नव युग के युवा।
युवा युवा युवा, युवा.....।
हम सब मिलकर आगे बढेंगे,
इस भारत के युवा।
नव भारत निर्माण करेंगे हम भारत के युवा
युवा .....युवा॥
सत्य अहिंसा का नारा गाँधी का ले के चलेगें
कौटिल्य और सरदार की नीति से आगे बढेंगे।
नव भारत निर्माण करेंगे हम भारत के युवा
युवा .....युवा॥
दहाड़ सिंह, सी लेकर के दुश्मन पर टूट पडेंगे,
दुश्मन की छाती चीर फाड़ कर भूसा हम भर देंगें
नब भारत निर्माण करेंगे इस नव युग के युवा,
हम सब मिलकर आगे बढेंगे इस भारत के युवा।
युवा .....युवा॥
दीन दुखी और मासूमों को राह सही दिखलाऐं
जाति-पाति और भेद-भाव को जड़ से नष्ट कर जाऐंगे॥
नव भारत निर्माण करेंगे इस नवयुग के युवा,
युवा .....युवा॥
भगत सिंह और सुभाष चन्द्र की छवियों में ढल जाएंगे,
क्रूर घमण्डी और मक्कारों को नीचा हम दिख लांएगें।
नव भारत निर्माण करेंगे इस नव युग के युवा॥
युवा .....युवा॥

वन्दना यादव
कक्षा - बी.ए. द्वितीय वर्ष

इन्तजार करती हैं माँ

घर वापस आने में हो जाती पल भर भी देर
बेचैन हो जाती है माँ,
पूछती है सवाल इतने सांस भी नहीं लेती है
माँ चंद सेकंड को भी घंटे में बदल देती है माँ,
संजोकर सामान को बड़े हिफाजत से रखती है माँ,
बेटी की खुशियों में ही अपनी खुशी ढूंढ लेती है माँ,
पीले हाथ देख बेटी को फफक कर रो पड़ती है माँ,
अपने कलेजे के टुकडे को जाने कैसे भेज देती है माँ, सच ही
है उसूलों के कारण वेबस हो जाती है माँ।

औरत बदल गई

दुत्कार, अपमान और तानों का भार, सहते-
सहते जाने कब बड़ी हो गई, परंपराओं
और मर्यादा की बेदी पर उसकी अपनी
इच्छाएं सूली चढ़ गई।
सबने जताया उस पर अधिकार,
उसकी पवित्रता पर उगली उठाई गई,
कभी अग्निपरीक्षा ली सबने तो कभी, वस्तु
सी जुए में दाव पर लगाई गई।
खून-पानी से सींचा हर रिश्ता उसने,
पर हर रिश्ते में रही सदा बो पराई,
एक रोज बन-दुर्गा कहकर पूजा उसे
माँ, पत्नी, बहन, बेटी, भाभी, सास इनमें औरत
ऋतुओं सी बदलती गई, सांस लेती रही
हर एक रिश्ते में वो, मगर उसके
अंदर की औरत मर गई।

माँ

मिली
कक्षा - बी.ए. द्वितीय वर्ष

लवों पर, जिसके कभी बद्दुआ नहीं होती,
एक माँ ही है जो हमसे कभी खफा नहीं होती।
दिल के टुकडे करने वाला, दिल का टुकड़ा करता है,
नालायक बेटा भी माँ को राजा बेटा लगता है।
माँ की ममता जैसा निर्मल कोई दर्पण क्या होगा,
जिसको धूल सना बच्चा भी चन्दा जैसा लगता है।
पूछो तो नन्हे पंक्षी से जब धधकता है मौसम,
माँ के पंखो में छिप जाना कितना अच्छा लगता है।
जिसके चरणो में ज्ञानीजन, तीन लोक बताते हैं,
मुझको माँ के चरणों में, सारा जग सिमटा लगता है।
चुम्बन अंकित करती है जब सिर पर हाथ फिराकर माँ,
अम्बर से भी ऊँचा मुझको अपना माथा लगता है।
गंगा जल की पावनता की मानो महिला है,
लेकिन माँ मुझको हल्का लगता कि मानो महिला भारी है,
लेकिन माँ के आसूं से वह मुझको हल्का लगता है।

शायरी

उस गुलाब से पूछो कि दर्द क्या होता है
देता है पैगामे मौहब्बत पर खुद काँटो की चुभन में रहता है

जिदंगी में शान्ति से जीने को ही तुम भूल नहीं सकते।
भूल जाओ उनको जिनको, तुम माफनहीं कर सकते।

कहानी भूल जायेगे

अपनी राष्ट्र भाषा का जो यूं ही मान घटाता रहा,
अपनी बात अपनी ही, जवानी भूल जायेंगे, पाश्चात्य
संस्कृति जो हदय में समाती रही,
अपनी सभ्यता की हर निशानी भूल जायेगे,
मम्मी डैडी अंकल आंटी हैलो हाय याद रहेगा,
अम्मा चाचा-चाची, नाना-नानी भूल जायेगें।
टिंक्कंल टिंक्कंल लिटिल स्टार याद होगा बच्चे चन्दा
मामा की कहानी भूल जायेगे।
अपनी राष्ट्र भाषा का जो यूं ही मान घटाता रहा।
अपनी सभ्यता के संस्कार भूल जायेगें
पाश्चात्य संस्कृति की कथायें जो पढते रहे गीता,
रामायण का भी सार भूल जायेगें।
अपने पांव यूँ ही यदि डिस्को पर थिरकते रहे।
पायलों की वो मीठी झंकार भूल जायेगें।
कान्वेन्ट स्कूलों में बच्चियाँ जो पढ़ती रही,
सावन के महीने में मल्हार भूल जायेगे।
अपनी गीत रस्मों का जो यूँ ही मान घटाता रहा,
राग रागिनी और हीर ही भूल जायेगें।
रूना लैला माइकल जैक्सन जैसे लोग याद होगें
मीरा, सूर, तुलसी और कबीर भूल जायेंगे।
सीता और सावित्री जो वालो को कटाती रही
ओढनी दुपट्टा और चीर भूल जायेगें।
अपने-अपने जन्म दिन में केक जो खिलाते रहे।
लोग हलुआ-पूरी और खीर भूल जायेंगे।

शायरी

जिदंगी एक गिफ्ट है कबूल कीजिए,
जिदंगी एक एहसास है महसूस कीजिए।
जिदंगी एक दर्द है बाँट लीजिए,
जिदंगी एक प्यास है प्यार दीजिए।
जिदंगी एक मिलन है मुस्करा लीजिये,
जिदंगी एक जुदाई है, सवर कीजिए।
जिदंगी एक आँसू है पी लीजिये,
जिन्दगी आखिर जिन्दगी है जी लीजिये।

मेरे पापा

मिली
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

मेरे जमीन आसमा मेरे पापा
मैं हूँ जहाँ हैं बहाँ मेरे पापा
मेरे पापा मेरे पापा
तुम साँसो की साँस हो
शाम शहर मेरे पास हो
जहाँ मेरे आँसू ही घने
नहीं मुझे हँसके मिले मेरे पापा,
रूठ जो में तुमसे कितना डरते हो
रव की तरह जिद मेरी पूरी करते हो,
होने न दिये कभी मुझको गिले मैं चाँद कहूँ मुझे
चाँद मिले कैसे–कैसे जादू करें।
मेरे पापा मेरे पापा, मेरे पापा
एक सिलवट चेहरे पर सह न पाते हो
मेरे लिए किस्मत से भी लड़ जाते हो
मेरे पास कोई दु:ख आ न सके
मेरा साया बनके चले, मेरे पापा,
मेरे पापा, मेरे पापा।

पापा के लिए बोझ नहीं मैं

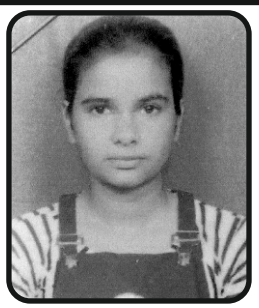

आकांक्षा सिंह
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

शाम हो गयी अभी तो घूमने चलो न पापा
चलते चलते थक गई कंधे पे बिठालो न पापा
अँधेरे से डर लगता सीने से लगा लो न पापा
मम्मी तो सो गई आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा
स्कूल तो पूरी हो गयी अब कॉलेज जाने दो न पापा
पाल पोस कर बड़ा किया अब जुदा तो मत करो न पापा
अब डोली मे बिठा ही दिया तो आँसू तो मत बहाओ
न पापा आपकी मुस्कुराहट अच्छी है एक बार मुस्कुराओ न पापा आप ने मेरी हर बात मानी एक बात और मान जाओ न पापा इस धरती पर बोझ नहीं मैं दुनियाँ को समझाओ न पापा ।

शायरी (परिवार)

मिली
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

हर मुसीबत में, जो साथ मे खड़ा
एक दिवार होता है,
हमारी ताकत हमारी जान वही
परिवार होता है।
ये खून के रिश्ते बड़े मजबूत होते है साहब
बस किस्मत वालो के नसीब में
ऐसा प्यार होता है।

शिक्षक का अर्थ

शि – शिखर तक ले जाने वाला
क्ष – क्षमा की भावना रखने वाला
क – कमजोरी दूर करने वाला –
अर्थात – जो विद्यार्थी की हर गलती को
क्षमा करने की भावना है
और उसकी हर कमजोरी दूर कर उसको
शिखर (सफलता) तक ले जाता है
वही सच्चा शिक्षक होता है।

शायरी

खुश्बु बनाकर गुलो से उड़ा करते है,
धुंआ बनकर पर्वतो से उड़ा करते है,
ये कैचियाँ खाक हमे उड़ने से रोकेगी,
हम परो से नहीं हौसलो से उड़ा करते है।

चुटकुला

एक काली अफ्रीकन लड़की को भगवान ने पंख दिए तो
वह खुशी से बोली WOW
भगवान क्या अब में परी बन गयी हूँ
भगवान – नहीं रे पगली, तुम अब चमगादड़ बन गई हो

(2) एक गांव मे शादी समारोह चल रहा था सरपंच
ने स्टेज पर खडे होकर कहा यदि किसी को इस शादी पर
आपत्ति है तो अभी ही कहे
शादी होने के बाद कोई मसला होता है तो दोनो की
जिन्दगी का सवाल है
जिसे कुछ कहना अभी सामने आकर कहे तभी
बारातियो मे पीछे खडी एक युवती गोद मे बच्चा लिए
आगे आई
पूरे सभा मंडप मे खुसुर– पुसुर, स्टेज पर खडी दुल्हन ने
दूल्हे को तमाचा जड़ दिया
दुल्हन का बाप बदूंक लाने दौड़ पड़ा
दुल्हन की माँ ने जहर की बोतल निकाल ली
अफरातफरी मच गई
तभी सरपंच ने उस युवती से पूछा–
आपको क्या परेशानी है
युवती बोली ... जी वो आप क्या बोल रहे थे पीछे कुछ
सुनाई नही दे रहा था तो इसलिए आगे आ गई।

चुटकुला

सवाल जवाब, और ऐसा क्यों

सवाल – स्त्री हमेशा सीता ही क्यो होती है
उसे बुद्ध भी तो होना चाहिये
जबाव – क्योंकि अगर वो बुद्ध की तरह अपने सोते पति और
बच्चे को छोड़कर जाएगी तो ये समाज पहले ही घोषित कर
देगा कि प्रेमी के साथ भागी होगी, कभी समाज ये जानना
नही चाहेगा कि खुद की तलाश मे निकली होगी !!

यह समाज बड़ा भेदभाव भरा है स्त्री के लिए बुद्ध जंगल से
लौटते है तो महात्मा की उपाधि से नवाजे जाते है और सीता
लौटती है तो कलकिंत हो जाती है, और उसे खुद को सही
साबित करने के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है ऐसा क्यों ,
बाप की जिंदगी गुजर जाती है।
बेटे की जिंदगी बनाने में और बेटा लिखता हैं!!

MY WIFE IS MY LIFE

माता-पिता पर दिल को छू लेने वाली शायरी

रूबी

कक्षा – एम.ए.

माँ बाप का दिल जीत लो कामयाब हो जाओगे,
वरना सारी दुनिया जीत कर भी हार जाओगे।

मेरी दुनिया में इतनी जो शौहरत है।
मेरी माता पिता को बदौलत है।

माता पिता के बिना दुनिया की हर चीज अधूरी है,
दुनियां का सुन्दर गीत माँ की लोरी है।

चाहे लाख करो पूजा और तीर्थ करो हजार,
अगर माँ बाप को ठुकराया तो सब है बेकार।

न जरूरत उसे पूजा और पाठ की,
जिसने सेवा की हो आपने माँ-बाप की।

शिक्षक के लिए शायरी

दिया ज्ञान का भण्डार हमें,
किया भविष्य के लिए तैयार हमें
हैं आभारी उन शिक्षकों के हम,
जो दिया ज्ञान अपार हमें।

लक्ष्य प्राप्त कर सकूँ,
आपने मुझे इस योग्य बनाया
जब महसूस किया मैं ने,
आपका दिया ज्ञान बहुत काम आया

सत्य और न्याय के पथ पर,
चलना शिक्षक हमें बताते है,
संघर्षो से लड़ कर जीतना,
शिक्षक हमें सिखाते है।

अज्ञानी से ज्ञानी बनाया,
शिक्षा का महत्व समझाया,
सत्य की राह पर चलना सिखाया,
शिक्षक ने हमे नेक इंसान बनाया।

जल जाता है वो दिए की तरह,
कई जीवन रोशन कर जाता है,
कुछ इसी तरह हर शिक्षक,
अपना फर्ज निभाता है।

यह मातृ-भूमि मेरी

डौली यादव
कक्षा - बी.ए. द्वितीय वर्ष

यह मातृ-भूमि मेरी यह पितृ-भूमि मेरी
पावन परम जहाँ की मन्जुल महात्म्य धारा
पहले ही पहले देखा जिसने प्रभात प्यारा
सरलोक से भी अनुपम ऋषियों ने जिसको गाया
देवेश को यहां पर अवतार लेना पाया
वह मात-भूमि मेरी वह पितृ-भूमि मेरी ॥
ऊँचा ललाट जिसका हिमगिरी चमक रहा है
सुवरण किरीट जिसपर आदित्य रख रहा है
साक्षात् शिव की मूरत जो सब प्रकार उज्ज्वल
बहता है जिसके सिर से गंगा का चीर निर्मल
यह भूमि मेरी वह पितृ भूमि मेरी
यह मातृ - भूमि मेरी
सर्वोपकार जिसके जीवन का व्रत रहा है।
प्रकृति पुनीत जिसकी, निर्मल मृदुल रहा है॥
जहां शान्ति अपना करतब करना न चूकती है।
कोयल कलाप कोकिल कमनीय कूकती थी ।
वह मातृ-भूमि मेरी वह पितृ-भूमि मेरी॥

यह मातृ भूमि - मेरी

यह वीरता का वैभव छाया जहां घना था ।
छिटका हुआ यहां पर विद्या का चांहना था ।
पूरी हुई सदा से जहाँ धर्म की पिपासा,
सत् संस्कृत मनोरम जहाँ की थी मातृ भाषा
वह मातृ-भूमि मेरी भाषा वह पितृ भूमि मेरी
यह मातृ-भूमि मेरी

शायरी

(1) जब प्यार किसी से होता है, हर दर्द दवा बन जाता है।
क्या चीज मोहब्बत होती हैं, एक शख्स खुदा बन जाता है।
ये लव चाहे खामोश रहे, आँखों से पता चल जाता है।
कोई लाख छुपा ले इश्क मगर, दुनिया को पता चल जाता है।

(2) मंजिल, तुम पाओ रास्ता हम बनायेंगे खुश, तुम रहो खुशियां, हम दिखायेंगे तुम तो सिर्फ दोस्त बने रहो, दोस्ती तो हम निभायेंगे।

(3) आसूँ न होते तो आँखे इतनी खूबसूरत न होते दर्द न होता तो खुशी की कीमत न होती अगर मिल जाता कोई चाहने से तो दुनिया में ऊपर वाले की जरूरत न होती।

(4) आँसू आ जाते हैं रोने से पहले ख्वाब टूट जाते हैं सोने से पहले लोग कहते हैं मोहब्बत गुनाह सा है काश कोई रोक लेता यह गुनाह होने से पहले।

(5) एक दिन हम एक भी कफन ओड़ जायेगें हर एक रिश्ता इस जमीन से तोड़ जायेंगे जितना भी चाहो सतालो गुझको एक दिन रूलाते हुये हम सबको छोड़ जायेगें ।

बेटियाँ

चिड़िया होती है, लड़कियाँ मगर पंख नहीं होते
लड़कियों के मायके भी होते है
ससुराल भी होते है मगर घर नहीं होते
लड़कियों को.....
मायका कहता हैं, ये बेटियाँ तो पराई है
ससुराल कहता है ये पराये घर से आयी है
ऐ खुदा अब तू ही बता
आखिर ये बेटियां किस घर के लिए बनाई है।

सच्ची प्रेरणा

नीरज
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

जिंदगी की हकीकत को बस इतना ही जाना है।
दर्द मे अकेले है।
और खुशियो का जनाजा है।
इंसान के जीवन मे तीन चीजें बड़ी उलझी हुई होती है।
दिल दिमाग और तकदीर
हम इंसान भी कितने अजीब है। ना और
लेकर जाना है, उसे छोडे न जाना
और जो यहाँ रह जाना है, उसे जोडे जा रहे है।
बोल मीठे न हो तो हिचकिया भी वही आती
कीमती मोबाईल पर घंटियाँ भी नही आती।
घर बड़ा हो या छोटा अगर मिठास न हो तो,
इंसान तो क्या चीटियाँ भी नहीं आती।
प्यार वांटा तो रामायण लिख गई,
सम्पति वाटी ता महाभारत लिखी गई
बुद्धिमान इंसान आपका दिमाग खोलता है
सुंदर इंसान आपको खोलता है।
लेकिन प्रेम करने वाला
इंसान आपका हृदय खोलता है,
इंसान मात्र एक ऐसा प्राणी है।
जो गिरना चाहे तो जानवर से भी नीचे गिर सकता है।
और उठना चाहे तो देवताओं से भी उपर उठ सकता है।
हर कोई चाहता है, यहाँ की सब उनकी तारीफ
करे लेकिन ये इच्छा इस दुनियाँ से
रूखसत होने के वाद ही पूरी होती है,
बक्त दिखाई तो नहीं देता पर बहुत कुछ दिखा देता है।
अपना पन तो सब दिखाते पर अपना कौन है?
ये वक्त ही दिखाता है।
जिनको खुश रहना है,
ये देखे की दो दिन के बीच एक रात है।
और जिनको उदास रहना है,
ये देखे की दो रातों के बीच एक दिन है।
हर किसी के बीच अंदर अपनी
ताकत और अपनी कमजोरी होती है।
मछली जल में दौड़ नहीं सकती और शेर
पानी का राजा नहीं वन सकता हर किसी की अपनी
खुशी है, अपनी अहमियत है,
परेशानी आये तो ईमानदार रहिये धन आये
तो सरल रहिये अधिकार मिलने पर
मौन रहिये और क्रोध आने पर शांत रहीये
यही है। जीवन का सही प्रबन्ध इच्छाओ के रहने
यानि प्रान चले जाय तो
वो हुई मृत्यु और प्राणों के रहते
इच्छाएं चली जाये तो वो हुई मुक्ति।
अगर आप वो चीज खरीदंते है,
जिसकी आपको जरूरत नहीं
तो जल्द ही आप वो चीज बेचेगें जिनकी
आपको जरूरत है।

माँ

नीरज
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ अपनी सारी खुशियाँ हर पल लुटा देती है,
माँ तुम इतना कैसे कर लेती हो।
जब जब भी ये तकदीर दगा देती है,
माँ की मुस्कुराहट उम्मीद जगा देती है।
मेरे हौसलों को उड़ान तुम देती हो,
माँ तुम इतना केसे कर लेती हो।
दूर जब भी तुम मुझसे हो जाती,
सच कहु में रोती हुँ।
सच की राह पर चलना सिखाया है,
हमको जीने का मतलब बताया है
हमको जीवन की अनमोल बातें सिखा देती हो,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
मेरे दुखी होने पर तकलीफ मुझसे ज्यादा तुम्हें होती,
मेरे खुश होने पर तुम्हें खुशी ज्यादा होती है।
मुझे जरा सी चोट लगने पर आसूँ वहा देती हो,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
अपनी खताओं की माफी मांगती हूँ,
कभी वताया नहीं माँ कि तुम्हें कितना चाहती हुँ।
विना जताये भी हमे इतना प्यार कैसे कर लेती हो,
माँ तुम इतना सब कुछ कैसे कर लेती हो।
अपनी सारी खुशियाँ हम पर लुटा देती हो,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।

सच्ची कविता
बेटी और पिता

सच बात पूछती हूँ। वताना न बाबूजी क्या याद मेरी आती नहीं पैदा हुई, घर मेरे मातम सा छाया था, पापा मेरे खुश थे, मुझे माँ ने बताया था ले लेके नाम प्यार जताते भी मुझे थे आते थे कहीं से बुलाते भी मुझे थे, मैं हुँ नहीं किसको बुलाते हो बाबूजी क्या याद मेरी.....

कि हर जिद मेरी पूरी हुई हर बात मनाते बेटी थी मगर बेटा से ज्यादा थे मानते, घर में कभी होली कभी दीपावली आई सैंडिल भी मेरी आई मेरी फ्राँक भी आई, अपने लिए बंडी भरी ना लाये थे बाबूजी। क्या कमाते हो बाबूजी क्या याद.....

कि सारी उमर खर्चे में कमाई में लगा दी दादी बीमार थी दबाई में लगा दी, पड़ने लगे हम सब पड़ाई में लगा दी वाकी वचा वो मेरी सगाई में लगा दी, अब इतना किसको कमाते हो बाबूजी बचाते हो बाबूजी क्या याद मेरी .....

कि कहते थे मेरा मन कहीं एक पल न लगेगा बिटियाँ विदा हुं तो घर ये घर न लगेगा कपडे कभी गहने कभी समान सजोते तैयारिया भी करते थे छुप छुप के रोते थे कर करके यादअब न रोते हो बाबूजी न सोते हो बाबूजी क्या याद .....

कि कैसी परंपरा है। ये कैसा बिधान है। पापा बताओं कौन सा मेरा जहान है। आधा यहाँ आधा बहां जीवन है।अधूरा पीहर मेरा पूरा है। न ससुराल है। पूरा क्या आपका भी प्यार अधूरा है। बाबूजी न पूरा है बाबूजी सच बात पूछती हूँ वताना न बाबूजी छुपाना न बाबूजी क्या याद मेरी आती नहीं।

कुछ शब्द पिता के लिए

नीरज
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

कभी ख्याव को पूरा करने की जिम्मेदारी है। पिता कभी आशुँ में चुपचाप छुपी लाचारी है। पिता कभी हँसी तो कभी अनुशासन है। पिता कभी मौन तो कभी भाषण है।

पिता माँ अगर घर में रसोई है, तो चलता है। जिसमें घर वो राशन है। पिता माँ अगर बेच सकती, जरूरत पे गहने तो जो अपने को बेच दे वो व्यापारी पिता कभी हँसी कभी खुशी का मेला है।
पिता माँ तो कह देती है।

अपने दिल की बात पर सब कुछ समेट कर आसमान सा फैला है। पिता कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है। पिता कभी धरती तो कभी आसमान है। पिता कभी ताकत तो कभी वलिदान है। पिता सच्च में इस दुनिया में पापा की जगह कोई नहीं ले सकता ।

हमारे जीवन में पिता बहुत अनमोल प्राणी है। घर में एक ऐसा प्राणी है। अक्सर जिसका त्याग उपेक्षित ही रहता है। वास्तव में भले पिता माँ की तरह अपनी कोख से जन्म न दे पाय मगर सच तो यह है।
कि हर बच्चे के जीवन में अपने पिता का स्थान बहुत बड़ा है।

ये दिन है। पिता को धन्यवाद कहने का उनके लिए कुछ खास करने की जिदंगी में कुछ अच्छा लिबास हो तो उसे कुदरत कहते है। रंगीन दोस्त हो तो उसे जन्नत कहते है। हसीन हम सफर हो तो उसे मोहब्बत कहते है। और जिदंगी में आप जैसे पापा हो तो उसे किस्मत कहते है।

शायरी

सरिता शर्मा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

ताश के पत्तों से ताजमहल नहीं बनता,
नदीं कें रोकने से समंदर नहीं बनता,
लड़ते रहो जिंदगी से हरपल,
एक जीत से कोई सिकंदर नहीं बनता।

हर कदम पर इम्तिहान लेती है जिंदगी
हर वक्त नया सदमा देती है जिंदगीं
जिंदगी से क्या शिकवा करें।
आप जैसे दोस्त भी तो देती है जिंदगीं,

मैं इस देश का हनुमान हूँ। ये मेरा श्री राम है।
दिल चीर के देखो तो इसमें हिन्दुस्तान है।

हर आरजू कभी अधूरी नहीं होतीं,
दोस्तों में कभी दूरी नहीं होती,
जिनके दिल में आप जैसें दोस्त रहते है।
उनकें लिए तो धड़कन भीं जरूरी नहीं होतीं ।

फूलों की तरह महकतें रहों
सितारों की तरह चमकते रहों
किस्मत से मिली है। ये जिंदगी,
खुद भी हँसो औरों को भी हंसातें रहों।

बिजली के तार को डोरीं कहतें है। अगर हों जायें दोस्ती में कोई कमी, तो उसे सॉरी कहतें है।–

सरिता शर्मा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

आज का युग

कोई टोपी तो कोई अपनी पगड़ीं बेच देता है। मिलें हर भाव अच्छा तो जज भीं कुर्सी बेच देता है। जला दी जाती है, ससुराल में अक्सर वही बेटी जिस बेटी की खातिर बाप किडनीं भीं बेच देता है। जान दे दीं वतन पर जिन बेनाम शहीदों ने एक सफेद पोश नेता तो बतन तक बेच देता है।

माँ के लिए शायरी

माँ कीं ज्योति से नूर मिलता है।
सबके दिलों को सकून मिलता है।
जो कोई जाता है। माँ के द्वारे पे,
उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है।
किसी ने रोजा रखा किसी ने उपवास रखा
कबूल उसका हुआ जिसने माँ बाप को पास रखा।

कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ

दीपक श्रीवास्तव
कक्षा – बी.कॉम. प्रथम सेमेस्टर

1. दुनिया में 2755 अरबपति हैं जिनके पास दुनिया की संपत्ति का 60: हिस्सा (8 ट्रिलियन डॉलर) है।
2. दुनिया के 140 अमीर लोगों के पास दुनिया के बाकी 99% लोगों के वराबर संपत्ति है।
3. न्यूयॉर्क में सबसे ज्यादा (92) अरबपति रहते है।
4. दुनिया के सबसे अमीर इंसान जेफ बेजोस हर सेकंड में 1. 83 लाख रूपया कमाते हैं।
5. हर्षद मेहता ने 1992 में **ACC Cement** के शेयर को तीन महीने में ही 200 से 9000 तक बढ़ा दिया था।
6. यदि आप आज एक ऐसी चीज खरीदते हैं, जिसकी आपको जरूरत नहीं है, तो कल आपको वो चीज बेचनी पड़ सकती है, जिसकी आपको सख्त जरूरत होगी।
7. दुनिया के सबसे सफल निवेशक, वॉरेन बफे ने जब 11 साल की उम्र में एक कंपनी के 6 शेयर खरीदे थे, तो उनके शेयर खरीदते ही उनके दाम कम हो गये। फिर जैसे ही उन्होने शेयर बेच दिए तो उनके दाम 500: बढ़ गए।
8. वॉरेन बफे ने अपने संपत्ति का 99% हिस्सा अपनी मौत के बाद दान कर देने का फैसला ले लिया है।
9. बचपन में गरीबी से तंग आकर वॉरेन बफे ने कहा था कि या तो मैं 35 साल तक की उम्र तक मिलेनियर बनूँगा या फिर ओमाहा की सबसे ऊँची बिलडिंग से छलांग लगा दूँगा।
10. अमीर बनना है तो ये मोबाइल गेम खेलो **Cashflow Quadrant.**
11. अमीर बनना है तो ये किताबें पढ़ो–

Rich dad poor dad, Think and grow rich, The Psychology of money. The Science of getting rich. The billionaire mind set, Rich dad investing, The Intelligent Investor.

सरिता शर्मा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ के लिए शायरी

आज फिर ठंडी रोटी खाई,
आज फिर माँ तेरी याद आई।
माँ मेरे जीवन का हर एहसास हो तुम,
बेराक पास नहीं पर आज भी सबसे खास हो तुम।
तुझसे प्यार कितना है बताना जरुरी नहीं,
बस इतना जाने ले तेरे बिना जिंदगी मेरी दूरी नहीं।
क्या सही और सही गलत हमेशा मुझे समझाती थी।
ये खाना नहीं खाता था, तो वो भी कुछ नही खाती थी।
और अपने बच्चों के लिए कुछ पैसे बचा लूँ,
ये सोचकर मेरी माँ पदैल घर आती थी।
पहले ये काम बड़े प्यार से करती थी माँ,
आज हमें धूप जगाती है, तो बड़ा दुख होता है।
किसी भी मुश्किल का अब हल नहीं मिलता,
शायद अब घर से कोई माँ के पैर घूकर नहीं निकलता।
दोस्तों ये सारी दुनिया सूनी और बीरान हो जाती है,
इसलिए प्लीज अपनी माँ को कोई दर्द न होने देना,
उनकी आँखों में कभी आंसू न आने देना।
काश .... मेरी माँ जिंदा होती।

कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ के लिए शायरी

हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।
यह देश जल रहा है शोले उगल रहा है।
अस्तिाव आदमी का पल-पल पिघल रहा है।
हम सब को में बिषैले हालात खा न जाएँ।
हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।

इसका नही भरोसा उसका नहीं भरोसा।
क्या जाने कौन किस पल दे जाय हमको धोखा।
किस-किस की साजिशो से खुद को फिरे बचाएं।
हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।

कर में छुपाए नश्तर वोटों के है ये तरकर!
हिन्दू न ये मुसलमान चोके का है ये लश्कर।
सुख शान्ति-चेन पल भर इनको न भाँए!
हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।

छोटे हो या मोटे हो जीन्स या लंगोटे!
हर आदमी ने पहने चेहरे पे सौ मुखौटे!
किसको करे पुरस्कृत किस-किस को दे सजांएँ!
हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।

इनको भी आजमाया, उनको भी आजमाया!
इस सिलसिले में क्या-क्या नही गँवाया!
मुश्किल है बताओ अब किसको आजमाएँ!
हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।

सूखी हुई है फसले बदले हुई है नसले!
कल क्या हो कौन जाने, आओ जरा सा हँय लें!
संदेश दे रही है जलतीं हुई चिताएँ!
हर ओर बेवसी है फिर कैसे मुस्काएँ।

जिन्दगी जीने की कला

गुन्जन
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

जहाजों से जो टकराये, उसे तूफान कहते हैं,
तूफानों से जो टकराये, उसे इंसान कहते है,
हमें रोक सके ये जमाने में दम नहीं,
हमसे है जमाना, जमाने से हम नहीं॥
जिन्दगी के बोझ को हँस–हँसकर उठाना चाहिए,
राह की दुश्वारियों पे मुस्कुराना सीख ले,
अपने दु:ख में रोने वाले मुस्कुराना सीख लें,
दूसरों के दु:ख दर्द में आँसू बहाना सीख ले,
जो खिलाने में मजा वो खाने में नहीं,
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले,
खून पसीना बहाना जा तान के चादर सोता जा,
यह नाव तो हिलती जाएगी,
तू हँसता जा या रोता जा॥
खुद को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से पुछे बता तेरी रजा क्या है।
जो बीत गई सो बात गई,
तकदीर की शिकवा कौन करे,
जो तीर कमान से निकल गया,
उस तीर का पीछा कौन करे॥

''मेरा वतन''

जमाने भर में मिलते हैं, आशिक कई,
मगर वतन से खूबसूरत कोई सनम नहीं होता।
नोटों में लिपट कर सोने में सिमट कर मरे हैं कई,
मगर तिरंगे से खूबसूरत, कोई कफन नहीं होता॥

''खुश रहो''

छोटी सी जिन्दगी है हर बात में खुश रहो,
जो पास में न हो उसकी आवाज में खुश रहा,
कोई रूठा है तुमसे तो उसके इस अंदाज में खुश रहो।,
जो लौट के न आने वाले हैं,
उन लम्हों की याद में खुश रहो।
कल किसने देखा अपने आज में खुश रहो,
खुशियों का इंतजार किसके लिए
दूसरों की मुस्कान में खुश रहो,
क्यों तडफते हो हर पल किसी के साथ को,
कभी तो अपने आप में खुश रहो॥

सुन स्त्री

दीपमाला
कक्षा – एम. ए. प्रथम वर्ष

सुन स्त्री .....
तू पंख फैला ले.....
थोड़ी हिम्मत कर उस नभः तक उड़ना सुन स्त्री.....
अपना अस्तित्व खुद तलाश कर वुन सपने और नई राह
पकड़ना सुन स्त्री.....
तू लड़ हैवानियत से फूँलन वन बंदूक पकड़ना सुन स्त्री.....
नहीं आते अब कृष्ण बचाने वन... वन चंडी हत्यारों से लड़ना
सुन स्त्री....
है पाषाण युग अमानवीय समाज तेरे लिये
छोड दलीले सीता की अब आगे बढ़ ना सुन स्त्री....
जो हाथ छुए घूरे उसका हाथ तोड़ दे,
मैरीकॉम है तू मुक्का जड़ना,
सुन स्त्री ...
न तब समझी गयी तू
न आज समझी जा रही
कल का इन्तजार मत कर
वन अरुणिमा एवरेस्ट पर चढ़ना

जय हिन्द

मै भारतवर्ष का हरदम
अमिट सम्मान करती हूँ
यहाँ की चांदनी मिट्टी का ही
गुणगान करती हूँ,
मुझे चिंता नही है
स्वर्ग जाकर मोक्ष पाने की,
तिरंग हो कफन मेरा,
बस यही अरमान रखती हूँ ॥

Some Lines For Mother And Father

माँ तो जन्नत का फूल है, प्यार करना उसका उसूल है, दुनिया की मोहब्बत फिजूल है माँ की हर दुआ कुबूल है ऐ इंसान..... माँ को नाराज करना तो तेरी भूल है माँ की कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है।

मुफ्त में सिर्फ माँ – बाप का प्यार मिलता है वरना हर रिश्ते की कीमत चुकानी पड़ती है। जिस घर में बेटियाँ पैदा होती है, उस घर का पिता राजा होता है। क्योकि परियाँ पालने की औकात हर किसी की नहीं होती। माँ और हिम्मत कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ती, चाहे वक्त खराब हो या किस्मत।

हर मुश्किल भी आराम से निकल जाती है क्योंकि मेरे माता–पिता की नजर मुझपर बाकी है घटा ले मुझसे और जोड़ दे माता–पिता मे, खुदा जितनी भी उम्र अब मेरी वाकी है।

जिन्दगी जीने की कला

जीवन मे सफल होना है तो पांच वाक्यों को कचरे के
डिब्बे मे डाल दो:–
लोग क्या कहेंगे?
मुझ से नहीं होगा।
मेरा मूड़ नहीं है।
मेरी किस्मत खराव है
मेरे पास टाइम नहीं है।
''परिवार के बिना कोई जीवन नही''
परिवार से बड़ा कोई धन नहीं...
पिता से बड़ा कोई सलाहकार नही..
माँ की छाव से बड़ी कोई दुनिया नही
भाई से अच्छा कोई भागीदार नही.....
बहन से बड़ा कोई शुभ चिंतक नही...
इसी लिए परिवार के बिना जीना वो जीवन नहीं।

जिन्दगी जीने की कला

चाँदनी यादव

कक्षा - एम. ए. प्रथम वर्ष

मालिक ने नौकर से कहाः- मच्छर मार दो।
आजकल बहुत ज्यादा हो गए हैं।
नौकर आलस में पड़ा रहा। थोड़ी देर बाद
जोर-जोर से मच्छर गुनगुनाने लगे।
मालिक ने नौकर से पूछा।- मच्छर मारे नहीं क्या?
नौकर बोलाः- मच्छर तो कबके मार दिए वे तो उनकी
विधवा पत्नियों के रोने की आवाज है।

दोहों के रंग

दुराचार की सज रही, चोरों ओर दुकान।
कौड़ी में बिकने लगा, मानव का ईमान।
कौए से कोयल कहे, अहंकार को त्याग।
वक्त पड़ा तो मिट गए, रावण जैसे घाव।
बेटे-बहुओं को लगे, बूढ़ी अम्मा भार।
दो रोटी के वास्ते, रोज चले तकरार॥
जीवन भी एक व्यंग्य है, इसको पढ़ ले यार।
जिसने खुद को पढ़ लिया, उसका बेड़ा पार।
सच का दें हम साथ तब, खुले झूठ की पोल ।
ये तो सच्ची बात है, है ना सच-सच बोल॥
मानव को भगवान। हर चेहरा बांटे सदा,
फूलों-सी मुस्कान॥

जरा हँस भी लो

चाँदनी यादव

कक्षा - एम. ए. प्रथम वर्ष

1. एक मुर्गी फार्म के मालिक ने एक दिन सभी मुर्गियों को हुक्म दिया - कल से सबको दो-दो अंडे देने हैं। जो नहीं देगा, उसे मैं काट डालूंगा।

अगली सुबह सभी मुर्गियों ने दो-दो अंडे, दिए, मगर एक ने सिर्फ एक ही अंडा दिया। मालिक ने इसकी वजह पूछी तो जवाब मिला- जनाब वह भी आपके डर से दिया, वरना मैं तो मुर्गा हूँ।

2. **जजः-** संता तुमने गाड़ी तेज चलाते हुए 25 लोगों को उड़ा दिया, तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है?

3. **संताः-** मैंने जब ब्रेक मारी तो पता चला कि ब्रेक तो फेल हैं। सामने देखा तो एक तरफ दो आदमी जा रहे थे, और दूसरी ओर एक बरात। आप ही बताओ मैं गाड़ी किधर मोड़ता,

4. **जजः-** सिंपल सी बात है, जिस तरफ दो आदमी थे नुकसान कम होता।

5. **संताः-** बिल्कुल सही। मैंने भी यही सोचा। पर वो दोनों गाड़ी देखकर बरात में घुस गए।

एक दादा दादी ने अपनी जबानी के दिनों को याद करने का फैसला किया। अगले दिन दादा फूल लेकर वहीं पहुंचे, जहां वो दोनों जबानी में मिला करते थे। बहुत देर तक खड़े होने के कारण दादा कै पैरों में दर्द हो गया, लेकिन दादी नहीं? घर आकर दादा गुस्से से

6. **बोलेः-** आई क्यों नहीं? दादी ने शर्माते हुए जवाब दिया- मम्मी ने आने नहीं दिया।

7. **पेसेंट :-** डॉ0 साहब इस प्रिस्क्रिप्शन में आपने जो दवाइयां लिखी हैं, उनमें से सबसे ऊपर की नहीं मिल रही है।

डॉ0- वो दवाई नहीं है। मैं पेन चलाकर देख रहा था!

8 **पेसेंट :-** तुम्हारी हैंडराइटिंग के चक्कर में न जाने मैं कितने मेडिकल शॉप घूम कर आया हूँ।

एक ने कहा कि कल मंगा दूंगा। दूसरा कह रहा था कि ये कंपनी बंद हो गई। तीसरा कह रहा था कि ये दवा तो ब्लैक में ही मिल पाएगी। और चौथा तो बहुत एडवांस था, बोला- ये तो कैंसर की दवाई है। विदेश से मंगानी पड़ेगी।

जिन्दगी जीने की कला

चाँदनी
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष

माँ तो जन्नत की फूल है,
प्यार करना उनका उसूल है,
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ की हर दुआ कुबूल है,
माँ को नाराज करना,
इंसान तेरी करना भूल है,
माँ के कदमों की मिट्टी,
जन्नत की धूल है।

शायरी

मुझे मोहब्बत है अपने हाथों
की सब उंगलियों से
ना जाने कौन – सी उंगली पकड़ के
'माँ' ने चलना सिखाया होगा।
अपनी माँ को कभी न
देखूँ तो चैन नहीं आता है
दिल न जाने क्यूँ माँ का
नाम लेते ही संभल जाता है।
शख्त राहों ये भी आसान सफर लगता है
ये मेरी माँ की दुआओं का असर लगता हैं।

दोस्ती के ऊपर कविता

प्रेम और त्याग के धागे से जुड़ा,
एक विश्वास है दोस्ती।
दुनिया के सभी रिश्तों में,
सबसे खास है दोस्ती।
जीवन में घोलदे जो रस,
वह मिठास है दोस्ती।
पूरी हो जाये जो हृदय,
वह आस है दोस्ती।
होठों पर लादे जो मुस्कुराहट,
वह हास है दोस्ती।
जीवन में भर दे संगीत,
वो साज है दोस्ती।

शायरी

दोस्ती जिदंगी में रौशनी कर देती है,
हर खुशी को दोगुना कर देती है,
कभी झूम के बरसती है बंजर दिल पे,
कभी अमावस को चांदनी कर देती है।
कुछ वक्त का इंतजार मिला मुझको,
पर खुदा से बढ़कर यार मिला मुझको,
न रही तमन्ना किसी जन्नत की मुझे,
तेरी दोस्ती से वो प्यार मिला मुझको।

स्वीटी वार्ष्णेय
कक्षा – बी.एससी. प्रथम वर्ष

मुझे जीने का अधिकार दो

मैं हूँ एक लड़की, मैं भी एक इंसान,
मुझे जीने का अधिकार दो।
ना आधा ना कम, मुझे पुत्र के समान प्यार दो।
घर का चूल्हा नहीं, ना ही झाड़ू लगाना,
मुझे भी पढ़ने का अधिकार दो।
मै हूँ एक लड़की, मैं भी एक इंसान,
मुझे जीने का अधिकार दो।
मैं कोई सतयुग की 'सीता' नहीं,
जिसे शक के कारण राम ने त्याग दिया।
ना ही कालिदास की 'विधोत्मा' हूँ,
ना ही मैं दुष्यंत की शकुन्तला हूँ जिसे वे भूल जाये।
मुझे कल्पना चावला बनकर नीले गगन को छूने दो,
मुझे पी.टी. ऊषा बनकर देश का गौरव बनने दो।
मुझे इंदिरा गाँधी बनकर देश को चलाना है,
एक सफलता भरी कहानी को लाना है।
किस देवी दुर्गा, लक्ष्मी को पूजते हो,
उसी का करते हो अपमान,
लड़की को लक्ष्मी कहते हो,
तो फिर क्या लक्ष्मी को बोझ समझते हो।
नहीं बढ़ेगें पुरूषों से आगे,
केवल साथ चलने का तो अधिकार दो।
मैं हूँ एक लड़की, मैं भी एक इंसान,
मुझे जीने का अधिकार दो।

बेटी पर कविता

सब रोगी की दवा है बेटी,
जीवन की एक आस है बेटी,
ममता का सम्मान है बेटी,
माता पिता का मान है बेटी,
आगन की तुलसी है बेटी,
पूजा की कलसी है बेटी,
सृष्टि है, शक्ति है बेटी,
दृष्टि है, भक्ति है बेटी,
श्रद्धा है, विश्वास है बेटी,
जीवन की एक आस है बेटी।

हमारा महाविद्यालय

हर्षवती

कक्षा – एम. ए. प्रथम वर्ष

1. इस अपने महाविद्यालय को बन्धु मत जाना तुम भूल, सज्जन इसके अध्यापक है, अच्छे इसके रूल चारों ओर बनी है बिल्डिंग सुन्दर पौधे लगे हुए है। ऑफिस के सम्मुख ही देखो सुन्दर पौधे सजे हुए हैं फूलो की खुशबू के आगे हम सब कुछ जाते हैं। भूल इसे अपने महाविद्यालय को.....।

2. प्राचार्य डॉ0 सपना भारती सभी तरह से रखती घ्यान, बड़े योग्य है सभी अध्यापक जो विद्या का करते दान यह कॉलेज तो सभी तरह से है बच्चों के अनुकूल इस अपने कॉलेज को तम जाना तुम भूल।

3. यह अपना डी0 आर0 ए0 महाविद्यालय सदा बढ़ाओ इसकी शान, चरित्र और स्वास्थ्य बढ़ाओ, और बढ़ाओ अपना ज्ञान।

4. मैं भी इस महाविद्यालय का छोटा सा हूँ फूल जब तक पढ़ते रहो अनुशांसन में रहना है शिक्षा पूरी करके तुमको भी परहित में रहना हैं अपने प्यारे महाविद्यालय के महकाओ तुम फूल, इस अपने महाविद्यालय को बन्धुभत जाना तुम भूल।

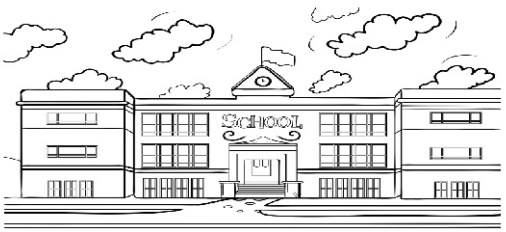

कैसे कहू थक गई हूँ मैं

1. मेहनत अभी काफी नही ख्वाबों को पाने के लिए थोड़ा सा पसीना बहाना होगा। अपना किरदारो को निभाने के लिए।

2. जिंदगी मे जीत और हार तो हमारी सोच वताती है जो मान लेता है वो हार जाता है जो ठान लेता है वो जीत जाता है।

3. अगर मरने के बाद भी जीना है तो एक काम जरूर करना पढने लायक कुछ लिखा जाना या फिर लिखने लायक कुछ कर जाना।

The Heart of Mother's - And Father's

A mother's heart is the key, The key to success.
A mother's heart is a ribbon, That ties your future together.
A mother's heart is a meal that satisfies your hunger.
A mother's heart is a crayon that colours your life in rainbow.
A mother's heart is a song that puts rhythm in your soul.
A mother's heart is bracelet that accessories your dreams.
A mother's heart is a book that entertain your mind.
A mother's heart is an ocean that waves as your go by.
A father's heart is a tissue that wipes your tears.
A father's heart is muscles that pick you up.
A father's heart is clothes that you wear to cover.
A father's heart is money that brings good to the table.
A father's heart is a pencil that writes down your plans. A father's heart is love that you fall in love with.

सुविचार

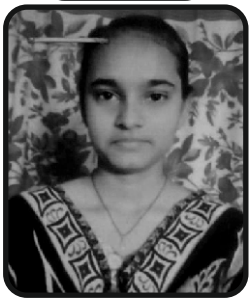

नीता यादव
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष

अतीत को बदला नहीं जा सकता, वर्तमान से बचा नहीं जा सकता केवल भविष्य को संवारने का कार्य ही वर्तमान मे किया जा सकता है।

वक्त तुम्हारा है सपने भी तुम्हारे है, पूरे भी तुमको करने है माना डगर थोड़ी मुश्किल है मगर नामुमकिन नहीं करना यही है समय यही चाहे तो सोना बना लो, या सोने मे विता दो।

अपनी कमजोरी उन्हें ही बताये, जो हर हाल मे आपके साथ खड़े हो, क्योंकि रिश्ता हो मोबाइल नेटवर्क न हो तो लोग गेम खेलने लगते है।

इंसान की चाहत की उड़ने को मिले पर और परिदे सोचते है रहने को घर मिले।

मंजिले बड़ी जिद्दी होती है। हासिल कहाँ नसीब से होती है। मगर वहाँ तूफान भी हार जाते है जहाँ कश्तियाँ जिद पर होती है।

अगर जीवन मे सफलता प्राप्त करनी है तो मेहनत पर विश्वास करे किस्मत की आजमाईश तो जुए मे होती है।

शिक्षक

रूपशीला
कक्षा – एम.ए. द्वितीय वर्ष

जीवन में जो राह दिखाए, सही तरह चलना सिखाए।
माता–पिता से पहले आता, जीवन में सदा आदर पाता।

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे, सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रही न दूर मैं जिससे, बह मेरा पथदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता ।वह मेरा शिक्षक कहलाता ।

कभी हैं शांत, कभी है धीर, स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहें यें इच्छा, काश मैं उस जैसी वन पाती,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

दिल की सुनो

मनोरमा
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष

दिल की सुनो तुम दुनिया की नहीं।
अपनी खुद की सुनो औरों की नहीं।

औरो की सुनते–सुनते हम पीछे रह जाते है।
दिल चाहता है। कुछ और कुछ और कर जाते है।

दुनिया की सुनते रहने से हम खुद की नहीं सुनते,
खुद के लिए नहीं जीते जाए सपने अपने नहीं बुनते

दुनिया की परवाह ना कर दिल की आवाज सुनो,
लोगों की चितां छोड़कर अपनी मजिल चुनो।

शिक्षक

वन्दना
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

अभी कहाँ खुद को, पूरा लिख पाई हूँ,
अभी तो बस शुरू, ही कर पाई हूँ।
जिन्दगी तूने मौके, तो खुब दिए पर,
तुझे भी शिद्दत, से कहाँ जी पाई हूँ।
शिकवा या शिकायत, नहीं है किसी से,
पर बस मन कभी, नहीं कर पाई हूँ।
सबको खुश रखना, मुनासिव नहीं है
अब जाकर यह बात, समझ के पाई हूँ
छोड़ चुकी हूँ, रुठने–मनाने के सिलसिले,
जुस्तजू इस वात, को ही कर पाई हूँ,
आरजू है खुद से, खुद को मिला लूं,
इसी बात की अब,पहल कर पाई हूँ।

मेरी प्यारी दीदी

नेहा रानी
कक्षा – बी. ए. प्रथम वर्ष

मेरी जान मेरी शान है तू, मेरी नाम की पहचान है तू, मेरी दुनिया मेरा जहान है तू, मेरे आँखों का तारा है तू,

कभी हँसी न कोई ऐसी हँसी, जिसके पीछे तेरी खुशी ना हो,जिसके आगे तु खड़ी ना हो।

ऐसा किया न कोई फैसला जिसमें तेरी कभी मर्जी ना हो, वात की ना कभी उससे जिसे तु अभी समझी ना हो।

मेरे कालो के लिए महाकाल है तू, मेरे होठों की मुस्कान है तू, मेरे चेहरे का नूर है तू मेरे रंगों में बहती खून है तू, मेरे दुनिया से न्यारी दीदी है तू।

अनमोल वचन

इज्जत भी मिलेगी दौलत भी मिलेगी, सेवा करो माँ बाप की जन्नत भी मिलेगी। जिसके पास कुछ भी नहीं हैं उस पर, दुनिया हँसती है, जिसके पास सब कुछ हैं। उससे दुनिया जलती है, मेरे पास आप जैसे अनमोल रिश्ते है॥

जिनके लिये दुनिया तरसती है,

इतनी मेहरबानी मेरे ईश्वर बनाये रखना। जो रास्ता सही हो उसी पर चलाये रखना, न दुखे दिल किसी का मेरे शब्दों से इतनी कृपा मेरे ऊपर बनाये रखना।

मेरे गलतियाँ मुझसे कहो दूसरो से नही, क्योंकि सुधारना मुझे है दूसरों को नहीं खुश हूँ और सबको खुश रखती हूँ, लापरवाह हूँ फिर भी सबकी परवाह करती हूँ। मालूम है, कोई मोल नहीं मेरा फिर भी अनमोल लोगों से रिश्ता रखती हूँ।

विवाह क्या है?

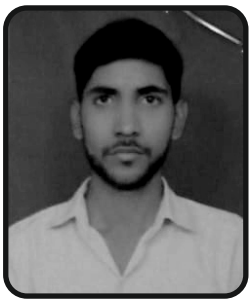

नितिन कुमार गुप्ता
कक्षा – बी. कॉम. तृतीय वर्ष

विवाह..... वह खूब सूरत जंगल है....
जहाँ.... बहादुर शेरों का शिकार .....
हिरणियाँ करती है....॥
शादी का मतलब ..... अजी सुनते हो
से लेकर..... बहरे हो गये क्या....???
तक का सफर॥
शादी मतलब..... तेरी जैसा कोई नहीं ..... से लेकर ... तेरे
जैसे बहुत देखे है ..... तक का सफर...॥
शादी मतलब .... आप रहने दीजिए ....से लेकर मेहरवानी
करके आप रहने दो ... तक का सफर॥
शादी मतलब ..... कहाँ गई थी जान ..... से लेकर .....
कहाँ मर गई थी.... तक सफर॥
शादी मतलब ..... आप मुझे नसीव से मिले .....से लेकर ...
.. नसीब फूटे थे, जो तुम मिले ... तक का सफर॥
शादीशुदा जिन्दगी कश्मीर जैसी है।
खूब सूरत तो है, परन्तु आतंक बहुत है॥

अजीब शब्द है,

SORRY

इंसान कहे तो झगड़ा खत्म, और डॉ0 कहे तो इन्सान खत्म
इन्सान खुद की गलती पर, अच्छा वकील बन जाता है।
और दूसरों की गलती पर, सीधा जज बन जाता है।
वक्त और किस्मत पर , कभी घमंड मत करना
क्योकि, सुबह उनकी भी होती है, जिसके दिन खराब हो ।

'मच्छर'

पागल हैं वो लोग जो प्यार मे किसी को **MISS** करते है
करना हो तो मच्छर को **Miss** करो जो जान हथेली पर
रखकर आपको **Kiss** करते है।

सौ बातों की एक बात

मिथलेश
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष

1. करने की कोई चीज है तो– प्रेम
2. छोड़ने की कोई चीज है तो– क्रोध
3. खाने की कोई चीज है तो – गम
4. देने की कोई चीज है तो – दान
5. लेने की कोई चीज है तो – ज्ञान
6. दिखने की कोई चीज है तो – दया
7. कहने की कोई चीज है तो – सत्य
8. रखने की कोई चीज है तो – मान
9. त्यागने की कोई चीज है तो – ईर्ष्या
10. छोड़ने की कोई चीज है तो – अहंकार
11. जीतने की कोई चीज है तो – मन
12. परखने की कोई चीज है तो – बुद्धि
13. सफलता की कोई चीज है तो – प्रसन्नता
14. संग्रह की कोई चीज है तो – विद्या
15. दुआ लेने की कोई है तो – माता पिता, गुरू

ओ मेरी प्यारी माँ

खुशबू आर्या
कक्षा – बी. ए. तृतीय वर्ष

ओ मेरी प्यारी माँ
सारे जग से न्यारी माँ।

हजारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए,
हजारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए,
हजारों बूंद चाहिए एक समुद्र बनाने के लिए,
पर माँ अकेले ही काफी है।
बच्चों की जिन्दगी को स्वर्ग बनाने के लिए।

प्यारी जग से न्यारी माँ, खुशियां देती सारी माँ।
चलना हमें सिखाती माँ, मंजिल हमे दिखाती माँ,

सबसे मीठा बोल है माँ, दुनिया में अनमोल है माँ
खाना हमें खिलाती है माँ, लोरी गाकर सुलाती है माँ
प्यारी जग से प्यारी माँ, खुशियां देती सारी माँ।

रानी लक्ष्मी बाई के बारे में 10 लाइन

रेनू शाक्य
कक्षा – एम.ए. प्रथम वर्ष

रानी लक्ष्मी बाई भारत के उन वीरांगनाओं में से आती है जिन्होंने देश की रक्षा के लिए के और अपनी प्राण गवा दी। रानी लक्ष्मी बाई, बहुत ही साहसी और निडर रानी थी महिला होने के बावजूद भी वह अंग्रेजों खिलाफ टक्कर का मुकाबला लिया अपनी राज्य झांसी को गुलाम होने सें बचाया इस लड़ाई में रानी लक्ष्मी बाई ने अपनी जान तक दे दी।

1. रानी लक्ष्मी बाई का जन्म 19 नवंबर 1828 में हुआ
2. इनका जन्मस्थान काशी के असीघाट वाराणसी में हुआ था।
3. इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था
4. इनका बचपन का नाम मणिकर्णिका रखा गया परन्तु प्यार से मनु पुकारा जाता था।
5. मनु जब मात्र चार साल की थी, तब उनकी मां का निधन हो गया
6. पत्नी के निधन के बाद मोरोपंत मनु झांसी लेकर चले गये।
7. रानी लक्ष्मी बाई का बचपन उनके नाना के घर बीता जहाँ वह छबीली कहकर पुकारी जाती है।

8. जब उनकी उम्र 12 साल की थी, तभी उनकी शादी झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ कर दी गई।
9. उनकी शादी के बाद झांसी की आर्थिक स्थिति में अप्रत्याशित सुधार हुआ, इसके बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया।

10. अश्रारोहण और शस्त्र –संधान में निपुण में महारानी लक्ष्मी बाई ने झांसी किले के अंदर ही महिला – सेना खड़ी कर ली थी, जिसका संचालन वह स्वयं मर्दानी पोशाक पहनकर करती थीं।

(रानी लक्ष्मी बाई के प्रसिद्ध वचन)

मैं अपने झांसी का आत्म समर्पण नहीं होने दूंगी मैदाने जंग में मारना है, फिरंगी से नहीं हारना है मेरे स्वर्गीय पति ने शान्ति की कला पर अपना ध्यान समर्पित किया हम सब एक साथ ग्वालियर में अंग्रेजो पर हमला करेंगे।
''खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी''

आखिर बहु भी किसी की बेटी होती है

प्रिया शाक्य
कक्षा – बी.एससी. द्वितीय वर्ष

नहीं करनी मुझे शादी न होना मुझे परायी है।
कैसे मैं तुमसे दूर रहूँगी माँ जब सोच आँख भर आयी है।
सुनकर बेटी की बात माँ धीरे से मुस्काती है।
सुनकर बेटी की बात पास बुला बैठा प्यार से उसको कुछ समझाती है। ये रीत पुरानी है बेटियाँ जिसे हम सबको निभाना पड़ता है आज नही तो कल बेटी को अपने घर जाना ही पड़ता है।
यह सिर्फ तुम्हारी नही यहाँ हम सबकी यही कहानी है।
जिसे बड़ा किया अरमानों से वो बेटी एक दिन बेहानी है।
अपनी क्षमता से ज्यादा हम वर तुम्हारा ढूंढेंगे कह रही हो जिन्हें पराया हमसे ज्यादा खुश रखेंगे।
कि जिस घर से इतना स्नेह मिला उस घर को भी उतना ही देना कोई गुस्से में कुछ कह भी दे, दिल पर मत लेना जो आभूषण जहाँ के लिए बना हो उसी जगह पर सजता है।
पर मत लेना और नये लोगो के बीच जगह बनाने मे बेटियाँ थोड़ा वक्त तो लगता है।
डोली में कर रहे विदा, बस अर्थी में बापस आना कभी हृदय आहत भी हो तो भी तुम खुद ही खुद को समझाना धीरे–धीरे एक दिन तुम उस घर के रंग मे रंग जाओगी इस घर के लिये परायी उस घर का हिस्सा बन जाओगी।
कि सारी बातो की गाँठ बाँध माँ, मैं अपने संग ले आयी थी पर न जाने क्यों इस घर में भी और उस घर में भी मैं ही परायी थी
हर काम मैं करना चाहती हूँ जो मुझे नहीं भी आता है। पर थोड़ी भी गलती हो जाना जैसे यहाँ गुनाह हो जाता है।
क्या यही सिखाया माँ ने तुम्हारी, तुम्हारी हर रोज मुझसे सब कहते है। सब छोड़ आयी जिनकी खातिर वो भी अकसर चुप रहते हैं।
सुबह सवेरे जल्दी उठकर हर काम मे अपना निपटाती हूँ कोशिश करके हार गयी माँ, पर मन जीत न पाती हूँ।
अपने सारे अरमानों की फिर एक चादर ओढ़ सो जाती हूँ।
समझाया तुमने जैसा वैसा तो कुछ भी न पाती हूँ।
हर रोज आँख नम होती है, हर रोज हृदय भर आता है।
बहु भी बेटी होती है, कोई क्यों समझ नही पाता है। कहने को हर रिश्ता अपना, पर अपने पन से कोसों दूरी है यह कैसी रीत है दुनिया की, माँ कैसी मेरी मजबूरी है।
न जाने कब यह मुझे पूरे मन से अपनायेगें । जो प्यार मिला माँ पापा से क्या यहाँ कभी मिल पायेगा।

जोक्स

ज्योति
कक्षा – बी.एससी. द्वितीय वर्ष

1. पेशेंटः– डॉ0 साहब इस प्रिस्क्रिप्शन में आपने जो दवाइयां लिखी है। उनमे से सबसे ऊपर की नहीं मिल रहीं है।
डॉ0ः– वो दबाई नही है। मै पेन चलाकर देख रहा था
पेशेंटः– तुम्हारी हैडराइटिंग के चक्कर में ना जाने कितने मेडिकल शॉप घूम कर आया हूँ। एक ने कहा कि माल मंगा दूंगा दूसरे ने कहा कि ये कंपनी बंद हो गई कि तीसरा कह रहा था ये तो ब्लैक मे ही मिल पाएगी और चौथा तो बहुत ही एडवांस था बोला – ये तो कैंसर की दवाई है! विदेश से मगांनी पड़ेगी।

2. एक दादा दादी ने अपनी जबानी के दिनों को याद करने का फैसला किया। अगले दिन दादा फूल लेकर वहीं पहुंचे, जहां वो दोनों जबानी में मिला करते थे। बहुत देर तक खड़े होने के कारण दादा कै पैरों में दर्द हो गया, लेकिन दादी नहीं आयी? घर आकर दादा गुस्से से बोलेः– आई क्यों नहीं? दादी ने शर्माते हुए जवाब दिया– मम्मी ने आने नहीं दिया।

3. मालिक ने नौकर से कहा – मच्छर मार दो आजकल मच्छर बहुत ज्यादा हो गए है। नौकर बहुत ज्यादा आलस मे पड़ा रहा थोड़ी देर बाद जोर जोर से मच्छर गुनगुनाने लगे मालिक ने नौकर से पूछा मच्छर मारे नहीं क्या। नौकर बोला मच्छर तो कब के मार दिये हैं। ये तो उनको बिधवा पत्नियो के रोने की आवाज है,

4. होली पर बलम पिचकारी जैसा गाना देने को लिए यह जबानी है दीवानी, बनाने वालों को तहे दिल से शुक्रिया बरना सालो से रंग बरसे सुन सुन के, जीवन ही खत्म हो चला था।

5. सभी बीमारियो का रामबाण इलाज होली की शाम अपने सिर पर से 7 बार मोबाइल घुमाकर आग मे। फेकें और पीछे मुड़कर न देखे। एक–दो दिन परेशानी होगी, गुस्सा आएगा फिर इन सारी बीमारियों मे आराम आ जाएगा।

6. अगर आपके पापों का घड़ा भर जाए तो उसे हटाकर एक बड़ा सा ड्रम लगा दे।

दहेज की दीवार

संजीव कुमार "सागर"
कक्षा – बी.कॉम. तृतीय वर्ष

आज बिक गया फिर घर किसी का
इन काफिरों की होड में
दहेज का ये सिल सिला
बढ़ता चला कुछ यूँ गया।

दहेज की इन आँधियों में पिता का
फिर पतन हुआ, दहेज का ये सिल–
सिला चराग बन के जल उठा
आज बेटियों के बाप का उजड़ ये घोंसला गया।

आज बिक गया फिर घर किसी का
इन काफिरों की होड में
दहेज का ये सिल – सिला
बढ़ता चला कुछ यूँ गया।

है भीख पुरानी वही फिर तरीका
क्यों बदल गया।
जिसे गिफ्ट का है नाम दें
पिता फिर सूली चढ़ गया।
ये काफिरों का सिल – सिला
यूँ इस कदर कुछ बढ़ गया
किसी बाप की कमाई का
मजाक बन के गया।

आज बिक गया फिर घर किसी का
इन काफिरों की होड में
दहेज का ये सिल सिला
बढ़ता चला कुछ यूँ गया।

दहेज के इस फर्ज़ में कुछ कर्ज़
ऐसे बढ गया।
इन साहूकारों जैसे
होंसला फिर बढ़ गया
उतार पग रखनी पड़ी लेनदारों के
पैर में
पिता का ये बजूद फिर सदा के
लिए मर गया।

आज बिक गया फिर घर किसी का
इन काफिरों की होड में
दहेज का ये सिल सिला
बढ़ता चला कुछ यूँ गया।

अब हर बेटी पड़ेगी

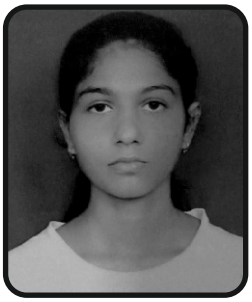

मोहिनी शर्मा
कक्षा – बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

18 बरस की हर बेटी पड़ेगी
21 तक अपना फ्यूचर गड़ेगी,
पैरों पर अपने खड़े होकर दम से
सबको बढ़ाएगी खुद भी बढ़ेगी।
बेटा–बेटी बराबर देश में,
खिलाड़ी भी है नारी सिपाही भी है नारी,
मत्रांलय में है नारी की भागीदारी,
मिसयूनिवर्स पर नाज है,
बेटी कल की बेटी आज है।
लड़ सकती हूँ कहकर डर से लड़ेगी,
सबको बढ़ाएगी खुद भी बढ़ेगी,
बेटा–बेटी बराबर देश में।
जमीन के हर पायदान पर पायलट है आसमान में,
रॉकेट के पर लगाकर उड़ेगी,
मंगल से जब चाँद को उड़ेगी,
सबको बढ़ायेगी खुद भी बढ़ेगी।
बेटा – बेटी बराबर देश में।
छोरा–छोरी बराबर देश में॥

''घर की जान होती है बेटियाँ
पिता का गुमान होती है बेटियाँ
यूँ समझ लो बेमिशाल होती है, बेटियाँ
हकीकत में इस धरती का ताज है बेटियाँ''

आज समय की शिलालेख पर अंकित स्वर्ण कहानी है।
भारत के उज्ज्वल भविष्य की जोतम दार निशानी है।
क्रांति जनक है नई धमक है नए जोश के तेवर है।
हर मुश्किल से लड़ जाने का रखती आज कलेवर है।
दिल ए वतन की ही धड़कन है बेटी हिन्दुस्तान की।
सारे जग में No- 1 है बेटी हिन्दुस्तान की।
बेटियाँ है कमजोर बातें ये पुरानी हुई,
संकट से आँख भी मिलाना जानती है ये।
मेहंदी या चौकपूर्णा ना ही आता इन्हें।
पत्थरों में फूल भी खिलाना जानती है ये।
पानी पूरी खाने वाली सिर्फ मत जानिएगा,
पापियों को पानी भी पिलाना जानती है ये।
अब है हुनर वाली शेरनी जिगर वाली,
घर नहीं देश भी चलाना जानती है।
ये चाहे जो भी मिले भूमिका हर दायित्व निभाती है,
अबला कहने वालों को बन सबला पाठ सिखाती है।
शक्ति शौर्य सच का दर्पण है बेटी हिंदूस्तान की,
सारे जग मे No- 1 बेटी हिन्दुस्तान की।
खेल और खेल–खेल में ही जीत लेती है,
ये एवरेस्ट सा बुलंद ख्वाब जीत लेती है
रास्ते के कष्ट 3–4 पृष्ठ नहीं कामयाबी की पूरी किताब जीत लेती हैं।
आंधियों में अड़ी रही तूफानों में खड़ी रही जो,
बाजुओं से सारा ही सैलाब जीत लेती है।
पश्चिम की चकाचौंध और, खुले दौर बीच विश्व सुंदरी का भी खिताब जीत लेती है।
इन्हें निबल कहने वालों के मुंह पर लटका ताला है,
किचन संभाला करती थी जो सरहद आज संभाले हैं,
नई सदी का परिवर्तन है बेटी हिन्दुस्तान की,
सारे जग में No- 1 बेटी हिन्दुस्तान की।

"Before you Speak"
(Think)

T – Is it True
H – Is it Helpful
I – Is it Inspiring
N – Is it Necessary
K – Is it Kind

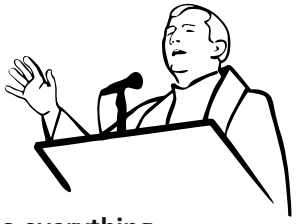

You can do everything

Life is the most precious gift given to us by God. All of us want to achieve the "Success in the life". There is no shortcut to success. Nor is any formula for finding it.

There are only two things which we all need in order to be successful. "Hardwork" and "Faith" must be maintained.

But in real life only that person can understand the importance of hardwork and faith has faced failures in life. Failures are nothing but stepping steps to success. Our faith, single minded devotion toward God given us great determination to win over all odds and have courage to face harsh realities.

Swami Vivekanand has said," "Stand up. Be bold and brave. Be strong all power is within you can do anything and everything."

Two Sides of Money

Money can buy the body – Not soul
Money can buy a book – Not Knowledge
Money can buy an idol – God cannot
Money can take life – it cannot give
Money can buy opulence – Not peace of mind
Money can buy a sword – Not courage
Money can buy songs – Not vocals
Money can buy bed – But not sleep
Money can buy food – But not appetite
Money can buy medicine – But not health
Money can buy a house – But not home
Money can buy fashion – But not beauty

प्रेरणादायक

शैली मिश्रा
कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष

क्यों हो गये हम ऐसे–

थोड़ा सा व्यापार बड़ा – अहंकारी हो गये।
थोड़ा से धन मिला – बेकाबू हो गये
थोड़ा सा ज्ञान मिला – उपदेश की भाषा सीख गये
थोड़ा सा सम्मान मिला – पागल हो गये
थोड़ा सा यश मिला – दुनियापर हँसने लगे
थोड़ा सा रूप मिला – दर्पण ही तोड़ दिया।

मेहनत का फल

मेहनत से सब मिल जायेगा,
बस थोड़ी मेहनत कीजिए
हाँ लक्ष्य कठिन है थोड़ा सा,
हर सम्भव कोशिश कीजिए
पथ में कठिनाईयाँ आयेगी,
कुछ तो निराश कर जायेगी
पर अगर यकी हैं खुद पर तो,
इन काटो को सॉफ कीजिए।
एक बात यहाँ विशेष है,
गुरूओं का आदर कीजिए।
वे हमारे पथ प्रदर्शक है

समझने की कोशिश कीजिए

समझने की कोशिश कीजिए,
इन सब बातों से बढ़कर,
एक और बात भी कहनी है,
उस परम–पिता परमेश्वर का,
थोड़ा सा स्मरण कीजिए।
बह जगत पिता सब कुछ देगा,
कुछ समय प्रतीक्षा कीजिए,
मेहनत के बल पर ही,
सब कुछ अपना कर लीजिए।
समय बड़ा अनमोल है,
यूँ इसको न जाने दीजिए,
हर क्षण का सदुपयोग कर,
तारों को भी हासिल कर लीजिए।
मेहनत से सब मिल जायेगा,
बस थोड़ी मेहनत कीजिए,
हाँ लक्ष्य कठिन है थोड़ा सा,
हर सम्भव कोशिश कीजिए।
''यदि खड़े रहो तो एक ''पेड़'' की तरह ताकि
सभी को छाया दे सको.....
और यदि शिरों तो एक ''बीज'' की तरह ताकि
फिर उठ कर खड़े हो सको।''

शैली मिश्रा
कक्षा – बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

सहयोग

एक जगंल में नदी के किनारे बहुत सी बकरियां रहती थी। नदी के ऊपर सकंरा पुल बना हुआ था, जिस पर से बकरियाँ तट पार करती थी, परन्तु पुल इतना संकरा था कि उस पर एक बार में एक बकरी ही पुल पार कर सकती थी। एक बार दो बकरियाँ आमने सामने से तट के बीच आ गयीं दोनो को ही विपरीत दिशाओं में जाना था। विकट समस्या थी पुल से केवल एक ही बकरी तट पार कर सकती थी 'परन्तु कौन पहले जाए' दोनों बड़ी जिद्दी बकरियाँ थी, व पहले पार जाने के लिए आपस में लड़ने लगी। जब बात मारपीठ तक पहुंची तो उनका सन्तुलन बिगड़ गया और वह सीधी पानी में जा गिरी और मर गयी। कुछ समय बाद फिर से ऐसे ही दो बकरियाँ विपरीत दिशा से आमने–सामने आयीं। उनका आमना–सामना हुआ उन दोनों के समझ भी यही समस्या थी परन्तु वें दोनो नेक और समझदार बकरियाँ थी वे लड़ी नहीं वे दोनो मिलकर उपाय सोचने लगी तभी उनमें से एक बोली ऐसा करते है मैं बेठ जाती हूँ तुम मेरे ऊपर से अपनी दिशा की और चली जाओं बहन दूसरी बहुत प्रसन्न हुई और बोली ठीक है तो चलो मैं बैठ जाती हूँ तुम मुझे लाद कर पुल पार कर लेना' इतना कह कर वह लेट गयी पहली बकरी उसे लांघ कर पुल पार कर चली गयी व दूसरी बकरी भी उठकर अपनी दिशा में चली गयी।

शिक्षा– सहयोग, प्रेम, अपनापन, समझता, दयालुता ये सभी हमारे गुण दुसरो के प्रति ही नहीं अपितू हमारे स्वयं के जीवन हेतू भी लाभदायक है ''सहयोग ही जीवन है''

नियर्थक घमण्ड, अहंकार हमारे विनाश के सूचक है–

अत: विनाश से बचे विकास कि ओर बढ़े'

गौरव – गान

मीनाक्षी
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

अमरपुरी से भी बढ़कर के जिसका गौरव गान है–
तीन लोक से न्यारा अपना प्यारा हिंदुस्तान है।
गंगा, यमुना सरस्वती से सिंचित जो गत–क्लेश है।
सजला, सफला, शस्य श्यामला जिसकी धरा विशेष है।
ज्ञान–रश्मि जिसने बिखेर कर किया विश्व–कल्याण है–
सतत– सत्य–रत, धर्म–प्राण वह अपना भारत देश है।
यहीं मिला आकार ज्ञेय को मिली नई सौगात है–
इसके दर्शन का प्रकाश ही युग के लिए विहान है।
वेदों के मंत्रों से गुंजित स्वर जिसका निर्भ्रांत है।
प्रज्ञा की गरिमा से दीपित जग–जीवन अक्लांत है।
अंधकार में डूबी संसृति को दी जिसने दृष्टि है–
तपोभूमि वह जहाँ कर्म की सरिता बहती शांत है।
इसकी संस्कृति शुभ्र, न आक्षेपों से धूमिल कभी हुई–
अति उदात्त आदर्शों की निधियों से यह धनवान है॥
योग–भोग के बीच बना संतुलन जहाँ निष्काम है।
जिस धरती की आध्यात्मिकता, का शुचि रूप ललाम है।
निस्पृह स्वर गीता–गायक के गूँज रहें अब भी जहाँ–
कोटि–कोटि उस जन्मभूमि को श्रद्धावनत प्रणाम है।
यहाँ नीति–निर्देशक तत्वों की सत्ता महनीय है–
ऋषि–मुनियों का देश अमर यह भारतवर्ष महान है।
क्षमा, दया, धृति के पोषण का इसी भूमि को श्रेय है।
सात्विकता की मूर्ति मनोरम इसकी गाथा गेय है।
बल–विक्रम का सिंधु कि जिसके चरणों पर है लोटता–
स्वर्गादपि गरीयसी जननी अपराजिता अजेय है।
समता, ममता और एकता का पावन उद्गम यह है
देवोपम जन–जन है इसका हर पत्थर भगवान है।

विद्यार्थियों के लिये प्रेरणादायक

दीनदयाल
कक्षा – बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

1. यूँ जमीन पर बैठकर क्यूँ आसमान देखता है,
   पँखों को खोल जमाना सिर्फ उड़ान देखता है।
2. ना दान है वो बच्चे, जो माँ बाप का अपमान करते है।
   अहम रखते है वो माँ बाप,
   जिन्हें देवता भी प्रणाम करते है।
3. बिना सावन बरसात नहीं होती,
   सूरज डूबे बिना रात नहीं होती।
   ऐ मेरे दोस्त तू किसी का दिल मत तोड़ना
   क्योंकि दिल टूटने पर आवाज नहीं होती॥
4. खुशबु बनकर गुलों से उड़ा करते हैं,
   धुआं बनकर पर्वतों से उड़ा करते है।
   ये कैंचियाँ खाक हमें उड़ने से रोकेगी,
   हम परो से नहीं हौसलों से उड़ा करते है।
5. मंजिल उन्ही को मिलती है।
   जिसके सपनों में जान होती है
   पंख से कुछ नहीं नहीं होता,
   हौसलों से उड़ान होती है।
6. इज्जत भी मिलेगी दौलत भी मिलेगी।
   सेवा करो माँ बाप की जन्नत भी मिलेगी।
7. एक माँ की ममता, एक बाप का प्यार
   वाकी सारी दुनिया, मतलब की है प्यार।

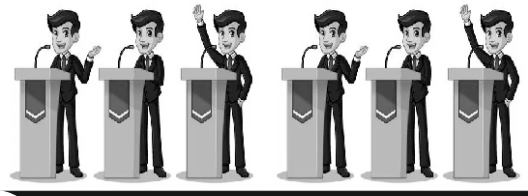

Friends Are Forever

दीनदयाल
कक्षा – बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

इश्क और दोस्ती मेरे दो जहान है,
इश्क पर मेरी रूह तो दोस्ती मेरा ईमान है।
इश्क पर तो फिदा कर दूँ अपनी पूरी जिंदगी,
पर दोस्ती पर तो मेरा इश्क भी कुर्बान है।

दोस्ती वो नहीं जो जान देती है,
दोस्ती वो भी नहीं जो मुस्कान देती है,
अरे अच्छी दोस्ती तो वो है....
जो पानी में गिरा हुआ आंसू भी पहचान लेती है।

रिश्तों से बड़ी चाहत और क्या होगी,
दोस्ती से बड़ी इबादत और क्या होगी,
जिसे दोस्त मिल सके कोई आप जैसा,
उसे जिन्दगी से कोई और शिकायत क्या होगी।

सादगी किसी श्रृंगार से कम नहीं होती,
चिंगारी किसी अंगार ये कम नहीं होती,
ये तो अपनी अपनी सोच का फर्क है बर्ना,
दोस्ती किसी प्यार से कम नहीं होती।

अच्छा और सच्चा दोस्त एक फूल है,
जिसे हम तोड़ भी नहीं सकते,
और अकेला छोड़ भी नहीं सकते,
अगर तोड़ लिया तो मुरझा जायेगा,
और छोड़ दिया तो कोई और ले जायेगा।

आपकी दोस्ती ने हमें जीना सिखा दिया,
रोते हुए दिल को हँसना सिखा दिया,
कर्जदार रहेंगे हम उस खुदा के,
जिसने आप जैसे दोस्त से मिला दिया।

एक रात खुदा ने मेरे दिल से पूछा
तू दोस्ती में इतना क्यों खोया है
दिल वोला दोस्तों ने ही दी है सारी खुशियाँ
वरना प्यार करके तो दिल हमेशा रोया है।

नाजुक सा दिल कभी भुल से न टूटे,
छोटी छोटी बातों से आप न रूठे,
थोड़ी सी भी फिकर है अगर आपको हमारी
तो कोशिश करना की ये दोस्ती कभी न टूटे।

दोस्ती नजारों से हो तो उसे कुदरत कहते है,
चाँद-सितारों से हो तो जन्नत कहते है,
हसीनों से होतो मोहब्बत कहते है,
और आपसे हो तो उसे किस्मत कहते है।

वक्त की राहों में तुम भुला दो चाहे हमें,
पर हम तुमको न भूल पायंगे,
तेरी दोस्ती की कसम ऐ दोस्त तू आवाज दे ख्वाबों में
हम हकीकत में चले आएंगे।

"Heart Touching" Poem By "A Soldier"

Richa Mishra
B.A. IInd Year

If I die in a war zone,
Box me up and send me Home.
Put my medals on my chest,
Tell my Mom I did my best.
Tell my Dad not to Bow,
He won't get tension from me how.
Tell my bro to study perfectly,
Key of my Bike will be his permanently.
Tell my sister not to be upset,
Her bro will take a sleep after sunset.
"Tell my Nation not to cry,
Because I am a soldier, Born to Die".

TRUTH OF LIFE

Vidur Parashari
B. Com (1st)

According different peoples
A rich man burst into laughter and said
– Money is Life
A poor man tremble with cold and said
– Life is Struggle
A lazy man dreaming in his sleep said
– Life is Bed of Roses
A saint in his speech said
– Life is only way to reach God
A famous poet said
– Life is full of care
A lover waiting for his beloved & said
– Love is Life
But I says,"Life is an unsolved mystery

Some characteristic of life

Life's friend	Confidence
Life's song	Smile
Life's recognization	Behaviour
Life's fuel	Hardwork
Life's enemy	Anger
Life's joy	Success
Life's sorrow	Failure
Life's dream	Superb

Motivation Lines

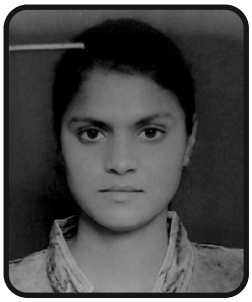

लक्ष्मी
कक्षा - एम.ए. प्रथम वर्ष

1. सपने और लक्ष्य में एक ही अंतर है, सपने के लिए बिना मेहनत की नींद चाहिए और लक्ष्य के लिए, बिना नींद की मेहनत।
2. कोशिश आखिरी साँस तक करनी चाहिए या तो लक्ष्य हासिल होगा या अनुभव।
3. लक्ष्य एक होता है, और रास्ते अनेक, कभी रास्ता बंद हो जाए तो रास्ता बदलो, लक्ष्य नहीं।
4. हर शक्स की उदासी का मसला इश्क नही होता जिन्दगी और परिवार की कुछ उलझने भी इंसान को उदास होने पर मजबूर कर देती है।
5. टूटे हुए काँच की तरह चकनाचूर हो गए किसी को लग ना जाये इसलिए सबसे दूर हो गए
6. अपने मन और शरीर को इस तरह से तैयार करे कि हर स्थिति में शान्त रहे।
7. खुद पर इतना काम करो कि लोग कहने लगे यार इसके जैसा बनना है 1
8. जिनके ऊपर जिम्मेदारियों का बोझ होता है, उनको रूठने और टूटने का हक नही होता ..
9. Dear Girls, don't depend on others Just study well, Work hard, earn money and make your Parents proud-

Eight wonderful thoughts

Before you speak, listen
Before you write, think
Before you spend, earn
Before you pray, forgive
Before you hurt, feel
Before you hate, love
Before you quit, try
Before you die, live

All the beautiful things start from the heart. All the bad things start from the mind. Never let the mind rule your heart. Let the heart your mind.

कोई अर्थ नही

नित जीवन में संघर्षो से,
जब टूट चुका हो अर्न्तमन तब सुख के मिले समन्दर का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं जब फसल सूख कर जल के
बिन, तिनका-तिनका बन गिर जाए,
फिर होने वाली वर्षा का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं सम्बन्ध कोई भी हो लेकिन,
यदि दुख में साथ न दे अपना फिर सुख में
उन सम्बन्धों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।
छोटी-छोटी खुशियों के क्षण निकले जाते हैं,
रोज नही फिर सुख को नित्य प्रतीक्षा का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं मन कटुवाणी से आहत है,
भीतर तक छलनी हो जाए फिर बाद कहे प्रिय वचनों का,
रह जाता कोई अर्थ नहीं सुख साधन चाहे जितने हो,
पर काया रोगों का घर हो, फिर उन अगणित
सुविधाओं का रह जाता कोई अर्थ नहीं।

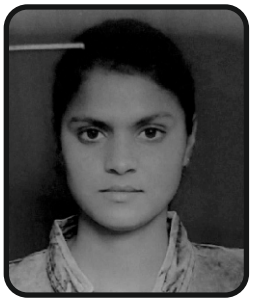

लक्ष्मी
कक्षा – एम.ए. प्रथम वर्ष

सत्य

सर्वोत्तम दिन	–	आज
सबसे उपयुक्त समय	–	भय
सबसे बड़ा पाप	–	घृणा
सबसे बुरी भावना	–	ईर्ष्या
सबसे बड़ी आवश्यकता	–	सामान्य ज्ञान
सबसे बड़ी भूल	–	समय की बर्बादी
सबसे विश्वसनीय मित्र	–	आपका अपना हाथ
सबसे बड़ा शिक्षक	–	जो आपको सीखने की प्रेरणा दे।
सबसे बुद्धिमान मनुष्य	–	जो वह करें जिसे वह स्वयं ठीक समझे
सबसे सरल कार्य	–	दूसरों की कमी निकालना
सबसे बड़ा दिवालिया	–	जिसने अपना उत्साह खो दिया हो
सबसे भाग्य शाली व्यक्ति	–	जो अपने काम में संलग्न हो
सभी धर्मों का निचोड़	–	सच्चाई, ईमानदारी, विनम्रता

मेहनत

जलधारा के विपरीत चले – जो असीम साहस दिखजाते :
नित मेहनत करने वाले बाधा में भी मुस्काते॥
मेहनत के परचम फहराते, गिरकर, फिर उठतेः
कर्मवीर कहलाते वो–जो तूफानों से नहीं डरते॥
कुछ हो जाते अर्पित धारा में, दोष भाग्य का बन जाताः
मन टूटा तो टूटी हिम्मत दोष दुर्भाग्य के सर जाता।
कर्महीन बन वे फिर–हस्त रेखाओं को रोते॥ अरे,
किस्मत बनाते वे भी जिनके हाथ्ज्ञ नही होते॥
कभी न टूटो–कभी न हारो बस आगे ही बढ़त रहना,
निश्चय जानो होगी जीत, धैर्य–लगन से सब सहना॥
कुछ भी नहीं असंभव यदि निष्ठा करने की ठानीः
मेहनत ही भाग्य बनाती ये है सतों की बानी।

प्यारे पापा

लक्ष्मी
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

बेटी ''बनकर आई हूँ माँ बाप के जीवन में बसेरा होगा मेरा कल किसी और ''आँगन'' में क्यूँ ये रीत रब ने बनाई होगी। कहते है! आज नहीं तो कल बेटी ''पराई'' होगी देके ''जन्म'' पाल पोषकर जिसने हमें बड़ा किया और वक्त आया तो उन्हीं हाथों ने हमें ''विदा'' किया पर फिर भी उस बंधन में प्यार मिले जरूरी तो नहीं.... क्यों वस यही बेटियों का नसीब होता है।

माँ – बाप

बहुत देखे अपने मगर माँ बाप के सिवा कोई अपना ना दिखा। बहुत मिले झूठे प्यार का दिखावा करने वाले, मगर माँ बाप के सिवा कोई चाहने वाला ना मिला। वहुत मिले साथ निभाने के वादे करने वाले, मगर माँ बाप के जैसा कोई साथी ना मिला बहुत देखे मैने चाँद तारे को तोड़ कर जमीन पर लाने के बादे करने वाले, मगर माँ–बाप के सिवा कोई ख्वाहिश पूरी करने वाला ना मिला।

माँ क्या है?

श्रीकान्ता
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

समुन्द्र ने कहा – माँ ऐसी सीप है, जो अपने बच्चो के हजारो राज सीने में छिपा जाती है।

बादल ने कहा – माँ बर्षा का पानी है, जिसके प्यार में नहाकर मन खुश हो जाता है।

शायर ने कहा – माँ एक ऐसी गजल है, जो हर सुनने वाले की रूह में उतर जाती है।

बच्चों ने कहा – माँ ममता की अनमोल दास्तान है, जो हर दिल में अंकित है।

वृक्ष ने कहा – माँ तो वृक्ष है जो अपनी सुहानी छाया का आँचल हमेशा साथ रखती है।

पृथ्वी ने कहा – माँ तो वह मिट्टी है जो दूसरों को जीवन देती है।

हमने अपने दिल से कहा – आकाश में जिसका अन्त नहीं, उसे आसमाँ कहते है, जमीं पे जिसके प्यार का अन्त नहीं उसे माँ कहते हैं।

1. पैर की मोच और छोटी सोच, इंसान को कभी आगे नहीं बढ़ने देती है।

2. ईश्वर ने आपके बैंक अकाउंट में प्रेम, आनन्द और शक्ति जमा की है, यदि आपको ATM के द्वारा इन्हें लेना है तो पासवर्ड है – प्रार्थना।

3. किसी फकीर की झोली में जब मैने एक सिक्का डाला ..... तो ये जाना कि इस मंहगाई के जमाने में ''दुआएं'' आज भी कितनी सस्ती है .....

4. ''बादाम'' खाने से उतनी अक्ल नहीं आती जितनी कि ''धोखा'' खाने से आती है।

5. तैरना है तो समुंदर मैं तैरो, किनारों में क्या रखा हैं, मोहब्बत करनी है तो पहले वतन से करो, लडकियों में क्या रखा है।

नारी तू खुद को पहचान

रिचा मिश्रा
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

कौन कब, बहती हवा को रोक पाया है,
कौन कब, उड़ते परिंदे को टोक पाया है,
और हे स्त्री ! कौन है तू क्या है तू,
यह कौन कब तुझसे बेहतर तुझे सोच पाया है।
कोई नहीं पहचानेगा तेरा मान,
तू खुद को खुद से पहचान,
चाहती है अगर जग में सम्मान,
खुद संभाल ले अपनी इज्जत,
जिंदा कर खुद में तू स्वाभिमान,
जो तुझमें आगे बढ़ने की चाह होगी,
सरल तेरी हर एक राह होगी,
तेरे नाम पर चन्द नारे लगाने से,
या कि मर जाने पर तेरे एक मोमबत्ती जलाने से,
तू आगे आएगी,
यह ही सोचा है, तो तू खुद कभी न जीत पाएगी,
बार–बार इस समाज को ही जिताएगी,
अरे! क्यों कोई तुझे हाथ पकड़ कर आगे लाएगा,
क्यों कोई तेरे लिए आवाज उठाएगा,
अपनी आवाज तुझे खुद उठानी होगी,
बांध हौसला अपनी हिम्मत तुझे खुद जुटानी होगी,
इस समाज से तुझे क्यों अपेक्षा है।
इसने क्या नहीं देखा है,
प्रकृति को नहीं जाना जो सबको जान देती है,
वो भी तो खुद इसी बात का ज्ञान देती है,
कि बिन नारी जीवन सबका अधूरा है,
क्या सूरज बिना किरण के पूरा है,
चाँद में यदि चाँदनी न हो,
रात में उजाला कहाँ हो,
और बादल जब कभी आसमान पर छाता है,
क्या घटा को घर छोड़ आता है,
क्या फूल बिना वाली के बन जाता है,
क्या बच्चा बिन माँ के जीवन पाता है,
काम कितना भी कठिन हो या सरल,
पर गौर करो जरा कि, भी सफर जाकर
मंजिल पर ही खत्म होता है,
और सुना तो यह भी है कि,
जब तक बत्ती साथ निभाती है,
उजाला दीपक का कम होता है,
इस सबके बाद भी यदि तू खुद को न जान पाएँ,
न स्वाभिमान अपना पहचान पाएँ,
अपने अन्दर आज भी आत्मनिर्भरता की,
शून्यता को पाएं,
तो तू खुद को नहीं ईश्वर को ठेस पहुँचाए,
अरे स्त्री है तू ! पहचान कर खुद को आगे बढ़,
खुद उठकर, हर आने वाले मौसम का स्वागत कर।

मेरे अल्फाज

नारी तू भी आगे बढ़

क्यों डरती है, निर्भय तू चल,
मत भूल, तू बस अपनी लाज की सीमा,
मत भूल तू बस अपनी गरिमा,
नही है कोई बड़ी बात, बन सकती है,
तू भी अरुणिमा सिन्हा
विना भूले अपनी सभ्यता जो तू चाहती है,
वो तू कर,
''नारी तू भी आगे'' बढ़''
जब – जब तूने कदम आगे बढ़ाया है,
तब – तब देश ने एक नई कल्पना चावला को पाया है,
बनकर रानी – लक्ष्मीबाई समाज को तूने
ही बीरता का पाठ पढ़ाया है,
बनकर सीता तूने ही धर्म सबको बतलाया है,
और लिया है, गर जन्म नारी जाति में,
तो मत फालतू बातों में पड़कर,
बिना कुछ करे, इन महान नारियों को,
और नारी जाति को कलकिंत कर,
''नारी तू भी आगे बढ़''
बेशक मत बन तू मीरा, मत बन तू राधा,
पर किसी की उर्मिला जरूर बन,
मत ले किसी का सहारा,
अपने ही भरोसे पर तू चल
अगर न मिले कहीं से उम्मीद,
तो ले अपना ही बल,
''नारी तू भी आगे बढ़''

स्त्री ने पुरुषों से है, ज्यादा नाम कमाया,
इन्होनें ही है हमारे भारत को महान बनाया,
मत किसी के हाथों जलकर मर,
मत तू अपना जीवन बरबाद कर,
और गर मरना ही है तुझे तो इस वतन पर मर,
मत कर किसी से आस, मत रह किसी के भरोसे,
अपना नाम खुद अमर कर,
''नारी तू भी आगे बढ़''।

श्रृखंला मिश्रा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माना कि, जिन्दगी, में गम है, बहुत,
खुशियाँ बेशुमार नहीं,
पल दो पल भी मुस्कुरा न सके,
इतने भी हम बीमार नहीं,
ढूंढ़ने वाले के लिए तो तिनके का,
सहारा बेकार नहीं,
और मौसम भी पा न सके,
इतने भी हम लाचार नही,
क्या हुआ? जो कोई साथ नही,।
क्या हम खुद के लिए मददगार नही,
जब तक सांसे चलती है,
जीना इतना भी, दुश्वार नहीं,
माना कि, वक्त नाजुक है,
और मौसम खुशगवार नही,
पर इक झोके में ही बिखर जायें,
इतने तो हम सुकुमार नहीं,
कोई सुनें या न सुने,
सुनेगा वो, चाहेगा वो,
जिसमें स्वार्थ की कोई,
दीवार नहीं,.
सब ही का है वो, सब उसी के है,
कभी होते जिसके दीदार ही नही,
अगर ईश्वर है नहीं,
तो फिर जिक्र क्यों है,
और गर ईश्वर है तो,
ऐ इन्सान तुझे फिक्र क्यों है ।

What do problems mean for us

श्रृखंला मिश्रा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

P–Predicato – They help us to mold our future.
R – Reminder – We are not self sufficient, We need God and others help.
O – Opportunities – They pull us out of our rut and cause us to think creatively.
B – Blessing – They open up doors. We usually don't go through.
L – Lesson – Each new talent will be our teacher.
E – Everywhere – No place or person is excluded from them.
M – Message – They warn us about potential disasters.
S – Soluable – No problem is without a solution.

Life

- Life is a challenge – Duke it out
- Life is a gift – Accept
- Life is a sorrow – Rise above
- Life is a duty – Perform
- Life is a game – Play
- Life is a song – Sing
- Life is a promise – Complete
- Life is a mess – Solve out
- Life is a love – Enjoy

The Meaning of "Father" / "Mother"

- F - Friend
- A - Adviser
- T - Teacher
- H - Helper
- E - Encouraging
- R - Reader of your mind

- M - Motivator
- O - Only one
- T - True love
- H - Heartiest
- E - Exceptional
- R - Responsible

Don't Worry

Look at the Flowers in the field,
They don't sow or shop for clothes,
If God takes care of flowers in the field,
He will take care of you.
Don't worry, don't worry
God will take care of you.
Look at the birds up in the sky,
They don't plant or grow their food,
If God can feed the birds up in the sky,
He will take care of you.

The Best

1. The Best Day – Today
2. The Best Teacher – Experience
3. The Best Lesson – Patience
4. The Best Sport – Duty
5. The Best Book – Life
6. The Best Friend – Truth
7. The Best Food – Thought
8. The Best Medicine – Laughter
9. The Best Hobby – Service

माँ

हजारों फूल चाहिए एक माला
बनाने के लिए,
हजारों दीपक चाहिए एक आरती
सजाने के लिए,
हजारों बन्द चाहिए समुद्र बनाने
के लिए,
पर ''माँ'' अकेली ही काफी है,
बच्चो की जिन्दगी को स्वर्ग
बनाने के लिए।
''जब तक मेरे मम्मी–पापा
मेरे साथ है,
तो मुझे कोई फर्क नही पड़ता,
कि कौन–2 मेरे खिलाफ है''

कोशिशें जारी रख

कोशि कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा,
अर्जुन के तीर सा सघ
मरुस्थल से भी जल निकलेगा,
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा,
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दें,
फौलाद का भी बल निकलेगा,
जिंदा रख, दिल में उम्मीदों कों,
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा,
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो है आज थमा – थमा सा, चल निकलेगा,

मेरे अल्फाज

श्रृखंला मिश्रा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

पिता

पिता कितना प्यार करता है,
वो बच्चों को जताता नही हैं,
बच्चों के लिये करता है मेहनत,
मजदूरी कभी शर्माता नहीं हैं,
जिम्मेदारियों का कितना बोझ हैं,
वो कभी घर पर बताता नहीं है,
पिता के लिये कोई शब्द नही हैं।
इसलिये कोई लिख पाता नहीं हैं।
''जिनके होने से में खुद को,
मुक्कमल मानती हूँ,
मेरे रब के बाद बस मैं अपने,
मम्मी – पापा को जानती हूँ,,

श्रृखंला मिश्रा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

Some Lines

दिल जब घबराये तो,
खुद को एक किस्सा सुना देना !
जिन्दगी कितनी भी मुश्किल क्यों न हो,
बस मुस्कुरा देना !
आसानी से सबकुछ, हासिल हो तो, कदर कहा!
जरूरी है, कुछ पाने के लिए, कुछ गवां देना!
जाहिर है, मुसीबतों में साथ,
कोई अपने नही रहता,
चुप रहना बेशक आँख से एक,
कतरा बहा देना !
शिकायतें सिर्फ दिल मैला करती हैं,
और कुछ नही!
आसान है, गले मिलकर कभी
सबकुछ भुला देना !
बीते हुए दौर की बातें याद कर,
क्या हासिल प्यारे।
क्यों जरूरी है?
कल की याद में अपने आज को घटा देना
कुछ कमियां हम सब में है,
''ये जानते है हम''!
बहुत बड़ी बात है, किसी के ऐब को,
बे–वजह छुपा देना।
''तरीका बेशक तेरा, मुझे देने का, थोड़ा अजीब है,
पर हे ईश्वर मिले, तुझसे जो भी,
वो मेरे लिए अजीव है''

UPSC LIFE

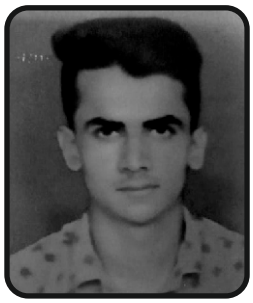

सूर्य प्रताप सिंह
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

कुछ करना है तो डटकर चल ।
थोड़ा दुनियां से हटकर चल !
लीक पर तो सभी चल लेते है।
कभी इतिहास को पलटकर चल॥
बिना काम के मुकाम कैसा।
बिना मेहनत के दाम कैसा?
जब तक ना हाँसिल हो मंजिल
तो राह में आराम कैसा ?
अर्जुन सा, निशाना रहा।
मन में, ना कोई बहाना रहा
लक्ष्य सामने है, बस उसी अपना ठिकाना रख॥
सोच मत, साकार कर।
अपने कर्मो से प्यार कर ।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी और का ना इंतजार कर
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले है....
जो करते रहे इंतजार
उनकी जिंदगी में आज भी झमेले हैं ।

बचपन का जमाना

अर्जुन बाबू
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बचपन का जमाना था, जिस में खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितली का दिवाना था..

खबर न थी कुछ सुबहा की, न शाम का ठिकाना था। हर मौसम सुहाना था, थक कर आना स्कूल सें, पर खेलने भी जाना था,

माँ की कहानी थी, परियों का फसाना था, बारिश में कागज की नाव थी, रोने की वजह ना थी, न हँसने का बहाना था,

क्यूँ हो गए हम इतने बड़े, इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था। वो वचपन का जमाना था.....

देश के वीर जवान

सुमित मिश्रा
कक्षा – बी. ए. सी. द्वितीय वर्ष

एक बार सलामी दे दो उन जवानों के लिए.....
जो शहीद हुए है सरहद पर ओ हो, ओ हो.....
जो शहीद हुए है सरहद पर हिन्दुस्तान के लिए
एक बार सलामी दे दो उन जवानों के लिए
कई माँ के गोद हुए सूने कई बहन के छिन गये भाईएक बार सलामी दे दो उन जवानों के लिए.....
कई मांग के सिन्दूर ढल गये कई बच्चों ने बाप की चिता जलाई एक बार सलामी दे दो उन जवानों के लिए.....
जो पिता न लौटे सरहद से कन्यादान के लिए
एक बार सलामी दे दो उन जवानों के लिए.....
जो शहीद हुए सरहद पर ओ हो, ओ हो.....
हिन्दुस्तान के लिए एक बार सलामी दे दो उन जवानों के लिए .....

क्या लड़की लड़का बराबर हैं

पूजा
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

1. पढ़ने को बाहर भेजने की बात हो तो लड़कों को महत्व दिया जाता है।क्या लड़की लड़का बराबर है?
2. जब बात हो त्याग करने की तो लड़की से त्याग कराया जाता है।क्या लड़की लड़का बराबर है?
3. जब लेना हो निर्णय अपने जीवन का तो लड़के से पूछा जाता है।क्या लड़की लड़का बराबर है?
4. जब बात हो रात में जाने की तो तुम लड़की कहके रोका जाता है।क्या लडकी लडका बराबर है?
5. गलत काम के भागीदार जब दोनों हो तो श्रेय केवल लड़की को दिया जाता है है।क्या लड़की लड़का बराबर है?

अनमोल वचन

दीक्षा यादव
कक्षा – बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

1. इज्जत भी मिलेगी दौलत भी मिलेगी।
सेवा करो माँ बाप की जन्नत भी मिलेगी।
2. जिसके पास कुछ भी नहीं है, उस पर दुनिया हंसती है, जिसके पास सब कुछ है, उससे दुनिया जलती है मेरे पास आप जैसे अनमोल रिश्ते है जिनके लिए दुनिया तरसती है।
3. इतनी मेहरबानी मेरे ईश्वर बनाये रखना, जो रास्ता सही हो उसी पर चलाये रखना न दुखे दिल किसी का मेरे शब्दों से इतनी कृपा मेरे ऊपर बनाये रखना।
4. मेरे गलतियाँ मुझसे कहो दूसरो से नहीं, क्योंकि सुधारना मुझे है दूसरों को नहीं?
5. खुश हूँ और सबको खुश रखती हूँ, फिर भी सबकी परवाह करती हूँ । मालूम है, कोई मोल नहीं मेरा फिर भी अनमोल लोगों से रिश्ता रखती हूँ।

''माँ की दुआ''

संगीता
कक्षा – बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

माँ की दुआ जिन्दगी बना देती है।
खुद रोती है, मगर हमे हँसा देती है
भूल से भी उसे मत रूलाना कभी
माँ की एक दुआ आसमाँ हिला देती है।

हर खुशी में कुछ कमी रह जायेगी
आँख थोड़ी सब नमी रह जायेगी
जिन्दगी को आप कितना भी सबारिए
विना माँ के जिन्दगी अधूरी रह जायेगी।

माँ तो जंनत का फूल है
प्यार करना उसका असूल है
दुनिया की मोहब्बत फिजुल है
माँ को नाराज करना तेरी भूल है
माँ के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है।

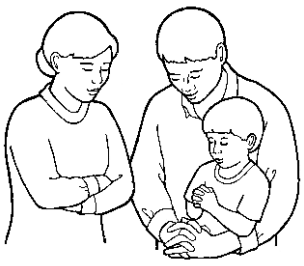

अनमोल वचन

मोहित यादव
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं। पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है, दुख है इसी का नाम जीवन है। जो मुश्किलों में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
यूँ भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं, लिये इन्सान का दिल जो, वहीं परमार्थ करते हैं। स्वयं जो बाँटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं। किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
यह दुनिया है एक उलझन, कहीं धोखा, कहीं ठोकर, कोई हँस–हँस के सहता है, कोई सहता है रो–रो कर, जो गिरकर भी संभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं। किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं
कभी सद्गुण हँसाते हैं, कभी भूलें रुलाती जाती हैं। भला है भूल न होना, मगर वो हो जो करके मान ले गलती, उसे इन्सान कहते हैं किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं

अल्फाज (कलम से)

(सीमा पर जवान कहता है।,)

किसी चिड़िया की आँखों में, उड़ानें छोड़ आया हूँ ।
किसी की आँख में, आँसू की धारा छोड़ आया हूँ ।
मुझे अपनी तू छाती से लगा लेना ऐ धरती माँ,
मैं अपनी माँ की बाँहों को, तरसता छोड़ आया हूँ।–

(मतलबी जमाना)

जहाँ हों दुख की परछाई, वहाँ अपने नहीं होंगे जहाँ खुशियों का हो सावन, वहाँ अपने सभी होंगे मगर मैं इस जमाने से यही हर बार कहता हूँ, जहाँ हम आज हैं लेकिन वहाँ पर कल नहीं होंगे

"पिता"

प्रांजल रस्तोगी
कक्षा – बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

मैं आंख खोलू तो चेहरा मेरे पापा का हो ..
आंख बंद हो तो सपना मेरे पापा का हो...
मैं मर भी जाऊं तो
कोइ गम नहीं
लेकिन सामने बैठे हो
वो चेहरा मेरे पापा का हो .....

इसी का नाम जिन्दगी है

कुछ दबी हुई ख्वाहिशे है, कुछ मंद मुस्कुराहटें
कुछ खोए हुए सपने है, कुछ अनसुनी आहटें
कुछ सुकून भरी यादें है , कुछ दर्द भरे लम्हात
कुछ थमे हुए तूफाँ हैं, कुछ मद्धम सी बरसात कुछ
अनकहे अल्फाज हैं कुछ नासमझ इशारे कुछ ऐसे
मंझधार है, जिनके मिलते नहीं किनारे
कुछ उलझनें हैं राहों में, कुछ कोशिशें बेहिसाब
बस इसी का नाम जिन्दगी है चलते रहिये ...
जनाब....!!

भगवान का स्वरूप

लवली
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

अगर वनाने वाला अपने आप को पहाड़ की चोटियों पर रख देता तो कोई बीमार लंगड़ा कैसे उन पहाड़ियों पर चढ़कर के उसको खोजता? वह होता मजाक। अगर बनाने वाला अपने आप को शब्दों में रख देता तो बहरा कैसे सुनता? अगर वह अपने आप को पेड़, चिड़िया आकाश या पृथ्वी या माला – जैसा रूप दे देता तो सोचने की बात है कि फिर अंधा कैसा रूप दिया? तो बनाने वाले ने अपने आपको कैसा रूप दिया? कि चाहे आंखे हो या न हों फिर भी हम उसे देख सकें। ऐसा रूप दिया, और अपने को ऐसा जगह रखा कि कोई भी हो– लगड़ा हो भाग सकने वाला हो, दौड़ सकने वाला हो, कोई भी हो, वह वहाँ पहुँच सके। तुम मुझको बताओ, ऐसी जगह कहां है? तो क्या स्वरूप दिया?
ऐसा जो सब देख सके।
चश्में की भी जरूरत नहीं।

चुटकले

पति – आज खाना सासू माँ ने वनाया है क्या?
पत्नी – वाह कैसे पहचाना।
पति – जब तुम बनाती थी तो काले बाल निकलते थे।
आज सफेद निकला है।

टीचर – लड़कियां अगर पराया धन होती है तो लड़के क्या होते है।
संता – सर लड़के चोर होते हैं।
टीचर – वह कैसे? क्योंकि चोरो की नजर हमेशा पराए धन पर होती है।

लवली
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ बाप का प्यार

नसीब वाले हैं वो जिनके सिर पर माता – पिता का हाथ होता है, हर इच्छा पूरी होती है ।
अगर माता पिता का साथ होता हैं। अपने बच्चों का हर दुख वो खुद ही सह लेते हैं।

खुदा की उस जीवित प्रतिमा को माता पिता कहते हैं। एक बात यह हमेशा याद रखनी चाहिए,
कि जीवन में माँ का स्थान भगवान से कम नहीं हैं। वो माँ बाप ही है जो हमसे निस्वार्थ प्रेम करते हैं।

ना उसे मजबूरियां रोक सकी, ना ही उसे मुसीबत रोंक सकी,
आ गई माँ जो बच्चों ने याद किया माँ को तो मीलो की दूरियां भी ना रोक सकी।

इस दुनिया में केवल हमारे मां बाप ही एक इंसान है,
जो चाहते है कि हमारे बच्चे हमसे भी ज्यादा कामयाब हो।

इन पैसो में कहां तुम को बफा मिलती हैं,
माता – पिता के हाथ भी चूमो तो दुआ मिलती हैं,

जरा प्यार की नजर से उन्हें देखो तो यारों,
उनकी एक मुस्कान में भी जन्नत की अदा मिलती हैं।

आज हजारों के नोटों में भी वो खुशी कहाँ,
जो खुशी माँ से मिलने वाले एक रुपये के सिक्के में होती थी।

सब कहते तो हैं कि पहला प्यार कभी भुलाया नहीं जाता,
पता नहीं फिर भी लोग अपने माँ बाप को क्यो भुल जाते हैं।

रिंकी यादव
कक्षा – एम.ए. प्रथम वर्ष

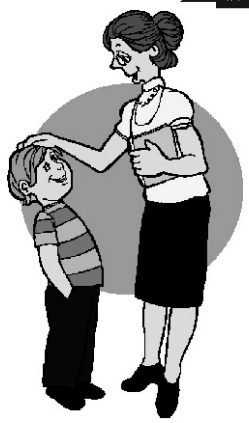

What is Life

Life is an exam,
You have to pass it.
Life is a long path,
You have to cover it.
Life is a store room,
You have to search things.
Life is a drama,
You have to play it.
Life is duty,
It is not only a beauty.
Life is a lesson,
Not only fashion.
Life is a challenge,
But difficult to balance.
Life is a game,
But difficult to get same.
Life is an ice – cream,
Enjoy it before it melts.

महंगा शौक

मधुर वाणी बोलना एक मंहगा शौक है
जो हर किसी के बस की बात नहीं है,
अपने खराब मूड के समय बुरे शब्द न बोले
खराब मूड को बदलने के बहुत मौके मिलेंगे
माना दुनिया बुरी है
सब जगह धोखा है
लेकिन हम तो अच्छे बने
हमें किसने रोका है।

बिटिया क्या है?

अगर बेटा आन है, तो बेटी शान है,
अगर बेटा तन है, तो बेटी मन है।
अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश हैं।
अगर बेटा मान है, तो बेटी गुमान हैं।
अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति हैं।
अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी विधाता है,
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।
बेटा गीत है तो बेटी संगीत है
बेटा धर्म है तो बेटी धार्मिक है।

नीतू मौर्य
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

देश भक्ति गीत

काश मेरे जिंदगी में
सरहद को कोई शाम आए
मेरी जिन्दगी मेरे वतन के काम आए
ना खौफ है मौत का, ना आरजू है जन्नत की
लेकिन जब कभी जिक्र हो शहीदों का
काश! मेरा भी नाम आए।
काश! मेरा भी नाम आए।
तैरना है तो समंदर में तैरो
नदी और नहरों क्या रखा है
प्यार में मरना है तो वतन पे मरो
वतन पे मरोगो तो नाम होगा
किसी के प्यार में मरोगे तो नाम वदनाम होगा।
ना धर्म मेरा है ना रौब मेरा है
ना बड़ा सा नाम मेरा है
मुझे तो एक छोटी सी वात का गर्व है
मै ''हिन्दुस्तान'' का हूँ औ हिन्दुस्तान मेरा है।
मुझे ना तन चाहिए ना धन चाहिए
बस अमन से भरा ये वतन चाहिए
जब तक जिन्दा रहुंगा
इस मातृ–भूमि के लिए
और जब मरूँ तो तिरंगा कफन चाहिए
जय हिन्द, जय भारत

माँ पर कविता

अपनी सारी खुशियाँ हम पर लुटा देती हो,
माँ तुम इतना कैसे कर लेती हो,
अपनी सारी खुशियाँ हम पर लुटा देती हो,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
जब–जब भी ये तकदीर दगा देती है,
माँ की मुस्कराहट उम्मीद जगा देती है।
मेरे हौसले को उड़ान तुम देती हो,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
दूर जब भी तुमसे होती हूँ माँ,
सच कहूँ तो अकेले में रोती हूँ माँ।
मेरी हर ख्वाहिश तुम पूरी कर देती हो,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो,
सच की राह पर चलना सिखाया है हमको,
जीने का मतलब वनाया है हमको,
जीवन को अनमोल बातें सिखा देती है
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
मेरे दुखी होने से तकलीफ मुझसे ज्यादा होती है,
मेरे खुश होने से खुशी तुम्हें ज्यादा होती है।
मुझे जरा सी चोट लगने पर आँसू बहा देती है,
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।

अरूण कुमार गौतम
कक्षा – बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

कविता – सिपाही

सरहद पर गोली खा के जब टूट जाये मेरी साँस, मुझे भेज देना यारों मेरी बुढी मां के पास बड़ा शौक था उसे में घोडी चंढ़ धम धम ढोल बाजे वो ऐसा ही करना मुझे घोड़ी पर ले जाना पूरे गाँव में घुमाना। और ढोल बजाना,

और मेरी माँ से कहना बेटा दुल्हा बनकर आया है बहूँ नहीं ला पाया तो क्या बरात तो लाया है, मेरे बाबूजी पुराने फौजी है। वडे मनमौजी है कहते बे बच्चे तिरंगा लहराकर आना या तिरंगे में लिपट कर आना,

कह देना उनसे मैने उनकी वात रख ली, दुश्मन को पीठ नहीं दिखाई आखिरी गोली भी सीने पर खाई मेरा छोटा भाई उससे पूछना क्या मेरा वादा निभाएंगो, मै सरहद से बोलकर आया था एक बेटा जायेगा तो दुसरा – आयेगा

मेरी छोटी बहन उससे कहना मुझे याद था उसका तोहफा, लेकिन अजीब इत्फाक हो गया, राखी से पहले भाई राख हो गया, वो कुंए के सामने वाला घर दो घड़ी के लिए वहां जरूर ठहरना, वही तो रहती है।

जिसके साथ मरने जीने का वादा किया था। उससे कहना भारत माता का साथ निभाने में उसका साथ छूट गया, एक वादे के लिए दूसरा वादा टूट गया, बस एक अखिरी गुजारिश, मेरी आखिरी ख्वाइस मेरी मौत का मातम न करना मैने खुद यह शहादत चाही है। मैं जीता हूँ मरने के लिये मेरा नाम सिपाही है॥

मुशायरा

अगर टूटे किसी का दिल तो सब भर आँख रोती है।
ये दुनियाँ है गुलों की जिसमें काटें पिरोती है।
हम अपने गाँव में मिलते है। दुश्मन से भी इठलाकर।
तुम्हारा शहर देखते हैं तो बड़ी तकलीफ होती है।
तुम कहो तो चाहत का में अफसाना लिखूँ!,
खुद को दिवानी लिखूँ और तुमको दिवाना लिखूँ।
यह जमाना कह रहा है। रिश्ते ऐ दिल तोड़ दो,
क्या यह मुमकिन है भला में तुमको बेगाना लिखूँ''
जो तुम जाते होतो सुख के सभी आधार जाते है।
फकत तुम तक हमारी जिंदगी के द्वार जाते है।
''जरूरत ही नहीं उस जीत की जिसमें नहीं हो तुम,
तुम्हारे साथ की खातिर चलो हम घर जाते है।''
तेज हो कितनी भी गम, की आधियाँ थम जायेगी।,
इन चिरागों को न छूना अंगुलियाँ जल जायेगी।
आशिकों के खून से सीचा गया है। यह चमन,
शोले फूलों में उठा तितलियाँ जल जायेगी,
मत नहाओ झील में मल–मल कर गोरा वदन,
''आग पानी में लगेगी मछलियाँ जल जायेगी ।
जो खानदानी रईस है वो मिजाज रखते है नरम अपना,''
तुम्हारा लहजा बता रहा है तुम्हारी दौलत नई–नई है
जरासा कुदरत ने क्या नवाजा कि आके बैठे हो पहली सत में,
अभी से उड़ने लगे हवा में अभी तो शोहरत नई नई है''।

प्रियंका
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

बेटियों का नसीब होता है

बेटी बनकर आई हुँ माँ बाप के जीवन में
बसेरा, होगा कल मेरा किसी और के आँगन में
क्यों ये रीत रब ने बनाई है
कहते हैं आज नहीं तो कल तू पराई होगी,
देके, जनम पाल–पोसकर जिसने हमें बड़ा किया और वक्त आया तो उन्ही हाथों ने हमें विदा किया टूट के बिखर जाती, है हमारी जिंदगी वही पर फिर भी, उस बधन में प्यार मिले जरूरी तो नहीं, क्या रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है क्या बस यही बेटियों का नसीब होता है।

प्रेरणादायक विचार

1. रोना उसी के सामने, जो आँसू गिरने का दर्द समझ सके, दुआएँ लेना उसी से जो दिल से दुआ दे सके और रिश्ता रखना उसी के साथ जो रिश्ते का मोल समझ सके।
2. एक दिन सोने ने लोहे से कहा– हम, दोनो ही लोहे की हथोड़ी से पिटते है, लेकिन तुम इतना चिल्लाते क्यों हो। लोहा– जब अपना ही अपने की घाव देता है तब दर्द ज्यादा होता है।
3. अपना हिस्सा मांग कर देखो सारे रिश्ते बेनकाब हो जाएंगे और अपना हिस्सा छोड़ कर देखो सारे कांटे भी गुलाब हो जाएंगे।

वैभवी
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

कविता

छोटी सी है जिन्दगी,
हर बात में खुश रहो।
जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज में खुश रहो।
कोई रूठा हो आपसे,
उसके अदांज में खुश रहो।
जो लौट के नहीं आने बाले,
उनकी याद में खुश रहो।
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुश रहों।

महक
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

माता पिता के सम्मान में शायरी

माता पिता की दुआ जिन्दगी बना देती है।
खुद रोते हैं, मगर हमें हंसा देते है।
भूल से भी उन्हें मत रुलाना कभी उनको एक,
बदुआ आसमा हिला देती है।

बंद किस्मत के लिए कोई ताली नहीं होती, सुखी उम्मीदों की कोई डाली नहीं होती जो झुक जाते माँ–बाप के कदमों में उनकी झोली कभी खाली नहीं होती। माता–पिता के बिना जिन्दगी अधूरी है, माँ अगर धूप से बचाने वाली हवा है, तो पिता ठंडी हवा, का वह झोंका है जो चेहरे से पसीने की बूदों को सोखलेता है आँखे खोलू तो चेहरा मेरी माँ का हो आँखें बंद हो तो सपना मेरी माँ का हो, कहीं में मर भी जाऊँ तो कोई मिले तो गम नही लेकिन, मुझे कफन मिले तो दुपट्टा मेरी माँ का हो।

प्रेरणादायक विचार

1. जिन्दगी बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए समझना पड़ता है वक्त आपका है, चाहो तो सोना बना लो और.....
2. मंजिल न मिले तब तक हिम्मत मत हारो और न ठहरो क्योंकि पहाड़ से निकलने वाली नदियों ने आज तक रास्ते में किसी से नहीं पूछा कि समन्दर कितना दूर है।
3. जमाने भर की दौलत हो तुम्हारे पास पर, छलकते आँसू माँ बाप की आँखो को न पढ़ पाए।
4. यूँ ही नहीं होती हाथों की लकीरों के आगे उंगलियाँ रब ने भी किस्मत से पहले मेहनत लिखी है।
5. जब आप मन्दिर या मस्जिद नहीं जा पाए तो यह मत कहो कि वक्त नहीं मिला, बल्कि यह सोचो कि ऐसा कौन सा काम किया जिसकी वजह से हमें भगवान या अल्लाह ने तुम्हे आज अपने सामने खड़ा करना भी पसंद नहीं किया।
6. कितना अजीब है ना – 84 लाख जीवों में एक मानव – ही धन कमाता है अन्य कोई भी जीव कभी भूखा नहीं मरा और मानव का कभी पेट नहीं भरा।
7. ऊँचाई पर पहुंचने के लिए पहले जमीन, पर दौड़ना पड़ता है, विश्वास नहीं हो तो हवाई जहाज को ही देख लीजिए।
8. जीत और हार अपनी सोच पर निर्भर करती है मान लो तो हार होगी और ठान लो तो जीत होगी।
9. कभी अकेला चलना पड़े तो डरिये मत, क्योंकि श्मशान, शिखर और, सिंहासन पर आदमी अकेला ही होता है।
10. त्याग के बिना कुछ, भी पाना संभव नहीं है क्योंकि सांस लेने के लिए भी पहले सांस छोड़नी पड़ती है।
11. बोल कर नहीं करके दिखाओ क्योंकि लोग सुनना नहीं देखना ज्यादा पसन्द करते है।

विशाल शर्मा
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

कॉलेज है हमारा

जिले में सबसे अच्छा कॉलेज है हमारा छोटा जरूर है लेकिन यह हमको प्यारा दमयंती राज आंनद ने ऐसी मिशाल दी है अपनी खुशी से भूमि कॉलेज को दान दी है।

कॉलेज में हमारी प्राचार्या है निराली, छात्रों की लाइन जैसे मोतियों की माला पेड़ों पर वैठे पक्षी कैसे चहक रहे है फूलों की खुशबुओं से कमरे महक रहे है।

जितने है यहाँ शिक्षक सब में है विशेषता दिल में है देशभक्ति आपस मे है एकता, शिक्षकों ने महाविद्यालय ऊंचा उठा दिया है विद्यार्थियों को बोलने के काबिल बना दिया है।

शिक्षा के बारे में इनका मिजाज है ऐसा कर्तव्य का है पालन मेहनत का लेते पैसा ये मेरा लेख पढकर एक बार मुस्करा दो, कैसा लिखा है मैंने जरा इतना तो बता दो।

दमयंती राज आनंद राजकीय महाविद्यालय की किस विधि से करू प्रशंसा। बने शिरोमणि मोतियों का छवि मय मंजुलानुंशसा ॥

परीक्षा एक दिवसीय क्रिकेट

स्टेडियम	–	महाविद्यालय
खेल का मैदान	–	परीक्षा का कमरा
परीक्षार्थी	–	बल्लेबाज
पेपर	–	50 ओवर
परीक्षक	–	एम्पायर
निरीक्षक	–	लेग एम्पायर
मार्क शीट	–	स्कोर कार्ड
कलम	–	बैट
प्रश्न	–	गेंदबाज
प्रश्न खत्म	–	ओवर
कठिन प्रश्न	–	तेज गेंदबाजी
घुमावदार प्रश्न	–	स्पिन गेंदबाजी
बिना रूके प्रश्न हल करना	–	चौका
सोचकर प्रश्न हल करना	–	छक्का
अधूरा प्रश्न	–	एक रन
तांक –झांक में पकडे जाना	–	कैंच आउट
चिट पकड़े जाना	–	एल.बी.डब्लू.
कोरी उत्तर पुस्तिका	–	शून्य पर क्लीन वोल्ड
पूरक परीक्षा	–	फालोऑन
फेल होना	–	श्रृंखला हारना
पास	–	श्रृंखला जीतना

Vishal Sharma
B.A. (IInd Year)

About the Life

Life is a struggle,
We should face it.
Life is a battle,
We ought to fight it.
Life is a challenge,
Let us confront it.
Life is a problem,
We should try to solve it.
Life is race,
Let us run it.
Life is full of paints,
Let us hear them out.
Life is frustration,
Let us change it into joy.
Life is a short span,
Let us try to active the maximum.

Nandini Mishra
B.Sc. (1st Year)

Difference between Girls and Boys

Gilrs thought Boys are fantastic Boys thought girl life are less hectic. Girl never know life of boys, boys never know life of girls because they did not know the struggle, problems, pains and many more. Life is beautiful without pains and problems brighter side of your life would more interesting than other.

Girls Life - A Struggle

If you thinks that a girl's life is easy, then trust me, you know nothing about girls. struggle of a girl starts when she born...she has to face the world, face the society and lots of stuff in her life. You are not support to this, do that..don't wear short clothes, don't go out with friends, don't talk like that, you should behave properly. Even she has no right to take decisions of her life so she drops plans of her dreams, well that's not all...molestation, Eve teasing, rapes, Marrasement, from infant to old women, from short clothes to sarees, from Twinkle to Nirbhya, They all had to face, and guess what did it cost?.... Thier Life.....

Boys Reality

Boys... Have more dreams...but they sacrifice it all for their parents or a girl! Only with a small and shearing tears in their Heart, Not all boys are same There are some boys who are different, There are some boys who know how to respect a girl. Not every boy want your body, Not every boy questions your character, most of the boys are very sensitive. Little things make them happy. They have soft heart. They are not actually strong, situations makes them strong. Dont Hurt them.....

Poem for Girl - A Girl behind me...

A girl behind me ! laughs with many, Happy with nobody, she smiles randomly, who knows ! she screams so badly, A girl behind me! locks her face with in the pillow, saying everything's all right. But the reality - she locks her pain and cry all night.... A girl behind me! say's she don't care The world says-she is rock hearted but who know! she is broken inside.

तुम लड़के हो!

हम वो हैं जिन्हें पैदा होते ही उम्मीदों से लाद दिया जाता है, फिर थोड़े बड़े होते ही किताबों से लाद दिया जाता है। बड़े लाड़ से रखा जाता है, बड़ा प्यार किया जाता है। कभी-कभी गलतियों पर डॉट भी दिया जाता है तो कभी-कभी शरारतों पर हमें मार भी दिया जाता है। और फिर हमारे रोने पर हमें पुचकार लिया जाता है, और बड़े प्यार से समझा दिया जाता है। तुम्हारे आंसूओं को तुम्हारी आंखों में कैद कर दिया जाता है, तुम्हारी भावनाओं को तुम्हारे दिमाग में बांध दिया जाता है। तुम्हारी काबिलियत Mark पर Judge की जाती है और तुम्हारी औकात तुम्हारे कपड़ों से ही बता दी जाती है। तुम्हारी ताकत तुम्हारी बाजूओं से नाप ली जाती है और तुम्हारी खूबसूरती तुम्हारी शक्ल से ही समझ ली जाती है। तुम्हारी नाकामयाबी पर तुम पर हंसा जाता है और तुम्हारी सफलता पर किस्मत Tag का लगा दिया जाता है। तुम्हारे प्यार को कितना Easily Stupidity कह दिया जाता है। तो तुम्हारी की हुई चीजों को पागलपन समझ लिया जाता है। तुम्हारे दिल टूटने पर हाथ में मदिरा थमा दिया जाता है। तो तुम्हारे अधूरे प्यार का Katva Liya का Tag दे दिया जाता है। तुम्हारी Feelings का गला घोंट दिया जाता है। तुम्हारी Emotions को फांसी पर चढ़ा दिया जाता है। और फिर बढ़ी सरलता से कह दिया जाता है कि तुम लड़के हो ऐसे टूटा थोड़े ही जाता है।

सुमन यादव
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

विद्या है तो

मान है सम्मान है।
यश भी है और धन भी है।
हमारी पहचान भी है।
सब कुछ है यदि विद्या है,
ईश्वर की कृपा भी है।
विनम्रता और सहजता भी हैं।
सब कुछ है यदि विद्या
हमारा आज और कल भी है।
समाज में स्थान भी है
सबकुछ है यदि विद्या है।

प्रेरक शायरी

1. पहचान छोटी ही सही पर, खुद के दम पर होनी चाहिए।
2. शराब पीने से जान जाती है ये जानकर भी लोग शराब पीते हैं, लेकिन मेहनत करने से, सफलता मिलती है ये जानकर भी लोग मेहनत नहीं करते।
3. ख्वाईशे बादशाहों को गुलाम बना देती हैं पर सब्र गुलाम को बादशाह बना देता है।
4. शौक हर किसी को महंगे ही पसन्द लेकिन शौक की बापकी परिस्थिति देख के ही करने चाहिए।

मेरे कंधे पर मेरा बेटा

मेरे कंधे पर बैठा मेरा बेटा।
जब मेरे कंधे पे खड़ा हो गया।
मुझी से कहने लगा...,
देखो पापा मैं तुमसे बड़ा हो गया।
मैंने कहा, बेटा इस खूबसूरत
गलतफहमी में भले ही जकड़े रहना।
मगर मेरा हाथ पकड़े रखना।
जिस दिन यह हाथ छूट जाएगा,
दुनिया वास्तव में उतनी हसीन नहीं है।
देख तेरे पांव तले अभी जमीं नहीं है।
मैं तो बाप हूँ बेटा बहुत खुश हो जाऊँगा,
जिस दिन तू वास्तव में मुझसे बड़ा हो जाएगा।
मगर बेटे तू कंधे पे नहीं तू जमीन पे खड़ा हो जाएगा।
ये बाप तुझे अपना सब कुछ दे जाएगा।
और तेरे कंधे पे दुनिया से चला जाएगा।

सत्य वचन

पैसे से नहीं
मन से अमीर बनें
क्योंकि
मंदिरों में सोने के कलश
भले ही लगे हो
लेकिन
माथा तो पत्थर की
सीढियों पर ही
झुकाना पड़ता है।

अनमोल वचन

1. जिस पैसे को कमाने के लिए व्यक्ति अपना स्वास्थ्य तक नहीं देखता अथवा स्वास्थ्य बिगाड़ देता है उसी पैसे को व्यक्ति बीमार होने पर अपनी बीमारी में बिगाड़ देता है।
2. बड़ा जिसका दिल होता है। ईश्वर परीक्षा उसी की लेता है जो उसके काबिल होता है।

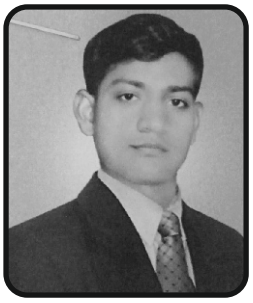

सुधांशु गौड
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

True words for Mother

दुनिया में एक ही जगह है
जहाँ हम बड़े होते है।
जब हम माँ के पेट में होते है ।
क्योंकि जब हम पेट में होते है,
तो वो हमें देख नहीं पाती।
बिना देखे प्यार करना शुरू कर देती है,
तो वो है – **Blind Love .....**
मेरे हिस्से का जगती है,
मेरे हिस्से का सो जाती है माँ।
सारे बच्चे लगते है एक से,
सबकी हो जाती है माँ॥
न करती दिखावा इबादत का,
भूखों को खाना खिलाती है माँ।
ये दुनिया होगी दुनिया के लिए
मेरी दुनिया बनाती है माँ
I Love You Maa.....

बाप बेटे का रिश्ता

ये बाप बेटे का रिश्ता न ऐसा होता है।
माँ तो बोल देती है न I Love You
बाप बोलता नहीं है,
बाप के लिए कम लिखा गया है,
मैं बाप के लिए चार लाइन पढ़ता हूँ।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है।
पिता नन्हे से परिन्दें का बड़ा आसमान है।
पिता है तो घर में प्रतिपल राग हैं,
पिता से माँ की चूड़ी, बिन्दी और सुहाग है।
पिता है तो बच्चों के सारे सपने हैं
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।
बिना आवाज और बिना आँसू के जो रोता है,
बो बाप होता है।
जो अपने बच्चों की तकलीफों के छेदों को,
अपनी बनियान में पहन लेता है।
वो बाप होता है॥.....
ये सच है कि नौ महीने पालती है माँ हमें पेट में,
पर नौ महीने जो दिमाग में ढोता है, बो बाप होता है॥
I Love You Papa.

दोस्ती शायरी

1. एक दोस्त ने दूसरे दोस्त से पूछा.....?
दोस्त का मतलब क्या होता है.....!
दोस्त ने मुस्कराकर जबाब दिया .....!
पागल एक दोस्त ही तो है .....!
जिसका कोई मतलब नहीं होता .....!
जहाँ मतलब हो वहाँ कोई दोस्त नहीं होता .....!
2. दोस्त का रिश्ता कभी पुराना नहीं होता,
दोस्त से बड़ा कोई खजाना नहीं होता।
दोस्ती तो प्यार से भी पवित्र है,
क्योंकि दोस्ती में पागल या दीवाना नहीं होता।
दुनिया का सबसे खूबसूरत पौधा दोस्ती का होता है,
जो जमीन पर नहीं बल्कि दिलों में उगता है॥

उमा भारती
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ का प्यार

कि दुनिया का कोई रिश्ता छोटा या बड़ा नहीं होता,
पर मेरी माँ के बराबर कोई और खड़ा नही होता।
मेरे इंतजार में खुली आँखो से बस वहीं सो सकती है,
मेरे दुख में मुझसे ज्यादा बस वही रो सकती है॥
माथा चूमकर मुकद्दर बदलने का जादू उसी को आता है,
और उसी का हाथ है, जो थर्मामीटर से भी करेक्ट
टेम्परेचर बताता है॥
मैंने मोहब्बत की तमाम किताबें पढ़ डाली,
पहले पन्ने पर माँ का ही नाम लिखा था।
हिसाब लगा के देख लो,
दुनिया के हर रिश्ते में कुछ आधा – अधूरा निकलेगा ॥
एक माँ का प्यार है, जो दूसरो से नौ महीना ज्यादा
निकलेगा ॥
I Love You my Dear Maa

My Super Hero Father

मेरा सुपर हीरो न हवा में उड़ता है
न विलेन से लड़ता है।
फिर भी मेरा सुपर हीरो,
बाकी सुपर हीरो से Best है॥
मेरे सुपर हीरो के पास,
कोई सुपर पावर नहीं है।
फिर भी वो मेरी,
सारी Wish पूरी करता है॥
दुनिया मेरे सुपर हीरो को नहीं जानती,
पर मेरा सुपर हीरो ही मेरी दुनिया है।
बस एक **Problem** है,
मेरा सुपर हीरो मुझसे झूठ बोलता है॥
कि उसके पास ढ़ेर सारा पैसा है॥
वो झूठ वोलता है,
कि उसको भूख नहीं लगती।
वो झूठ बोलता है,
कि उसको रोना नहीं आता॥
वो झूठ बोलता है,
कि वो कभी थकता नहीं है।
पर वो यह सब मेरी खुशी के
लिए करता है।

I Love You Daddy.
My Super Hero my Daddy.

सरस्वती
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

माँ का प्यार

माँ तुझको मैं प्रणाम करती हूँ,
और तेरी दुआये लेना चाहती हूँ,
माँ सरस्वती मुझको इतना ज्ञान
देना कि मैं आपकी प्रार्थना कर
प्रणाम करती है। माँ मुझे प्यार दे

आँसू तेरे निकले तो आँख मेरी हो
माँ दिल तेरा धडके लेकिन धड़कन मेरी हो
भगवान करे कि मेरे
विश्वास मे इतनी ताकत हो कि
कवर तेरी हो तो लाश मेरी हो

जिन्दगी अगर बिछड़ जाये तो माँ सम्भाल लेती है।
अगर बेटी रूठ जाये तो माँ मना लेती है।
माँ का प्यार बच्चों के लिए होता है।
इस लिए माँ सारी उम्र दुआयें देती है।
लड़की अगर पड जाये इज्जत पर बात आती
रोशनी लड़की हो परिवार का नाम रोशन
और माँ–बाप की पहचान होती है।

भगवान की रहमत सारे संसार पर बरसे
मेरे हिस्से की रहमत माँ पर बरसे,
ऐ मेरे भगवान मुझे बना देना पानी
अगर मेरी माँ पानी को तरसे।

प्यार भरी और रूला देने वाली बातें

सब का गम में कागज पे लिखती हूँ,
आज सोचा की माँ तेरी दास्ताँ भी बयान कर दूँ
वैसे तो मेरी हर सांस तेरी रहतम की मोहताज है।
मगर में आज सबसे सामने अपनी जिन्दगी तेरे नाम कर दूँ
मैने अपनी आँखो के सामने जब–जब तुझे बिलकता
देखा माँ तुम दुआ दे रही

अपनी दिल की धड़कने से रोका है। मुझे तो याद नहीं वो मंजर बचपन का लेकिन लोगो से मेरी दांस्ता सुनती आयी हूँ तुझे तकलीफों के

बदले लाख खुशिया दूँ में माँ ऐसे
लाखो अपने आजतक बनता आयी हूँ में
सुना है। तू अपनी एक बेटी को खो
कर टूट सी गयी थी। तब किसी
मन्नतों के बाद रब ने

मुझे भेजकर तेरी गोद से भरी थी।
खुशी से तू फूलसिमटी नहीं थी कहते है। बार–बार मेरा माथा चूमती थी। सुना है उस वक्त तूने मेरे लिए खाना – पीना छोड़ दिया था मुझे तूने सीने से लगा कर जहाँन से मुँह मोड़ लिया थाा पानी टपका था तब सुना है। माँ जब तेरी ममता का अमृत मुझ पर बरसता था।

शिवा उपाध्याय
कक्षा – एम.ए. द्वितीय वर्ष

''हां रे हिन्दू जाग जा''

हां रे हिन्दू जाग जा, होली का रंग लगाने आया रे।
कि हिन्दू जाग जा॥
जात–पांत और भेदभाव की ढपली बहुत बजाई रे।
अपने हाथों ही तो हमने घर को आग लगाई रे
अपनी ढपली राग छोड़कर चंग बजाले रे
कि हिन्दू जाग जा ॥
अपने–अपने रंगों पर ही हम इतराते आये रे
इसीलिए तो जग में अब तक धक्के खाते आये रे
अब तो रंग ले एक रंग में रंग जमा ले रे
कि हिन्दू जाग जा॥
प्रहलाद तो आज देश में जगह– जगह ही जलता रे
और होलिका मग्न नाचती बाल न उसका बलता रे
आग लगा दे होली में तू भक्त बजाले रे
कि हिन्दू जाग जा॥
काश्मीर सी घाटी देखो विष आसुरी घोले रे
हिन्दू भाई भटक – भटकते, सारे देश में डोले रे
खड़ग उठा ले दुष्ट देश से आज भगा दे रे
कि हिन्दू जाग जा॥
''जय हिन्द'' ''जय भारत''

पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए वीर जवानों को समर्पित

आसमान भी रोया था
धरती भी थर्रायी थी
किसी को न मालूम था यारो
किस घड़ी मौत ये आयी थी।
माँ का एक टक चेहरा थाा
आँखों में बहते आंसू थे
पुत्र थे उनके शहीद हुए
जो मातृभूमि के नाते थे।
पत्नी का बिलखना चिल्लाना
सीने में तीर चुभाठाा था
एक मात्र सहारा था उनका
वह भारत माँ का बेटा था।
बेटे के सिर से हाथ गया
चलना वह जिनसे सीखा था
कंधों का भी अब राज गया
वह बैठ जहाँ जग देखा था।
माँ की सूनी गोद हुयी
पत्नी का भी सिन्दूर मिटा
पिता के दिल में आह उठी
पुत्र का हाथ भी छूट गया।
गर्व है इन परिवारों को
अपनी उन संतानों पर
मातृ भूमि के लिए समर्पित
हुए बीर बलिदानों पर।
नेताओं क्यों बैठे हो
बदला लो गद्दारों से
गर खून में गर्मी वाकी है
सर बिछा दो तुम तलवारों से।
बदला ले इस बार का तुम
उन वीरों का सम्मान रखो
मात–पिता और पुत्र के सर
मातृ भूमि का ताज रखो।
''जय हिन्द'' वन्दे मातरम्

शिवा उपाध्याय
कक्षा – एम.ए. द्वितीय वर्ष

''मेरी माँ''

फूल में जिस तरह खुशबू अच्छी लगती है
उसी तरह मुझे मेरी माँ अच्छी लगती है
भगवान खुश और सलामत रखे मेरी माँ को
सारी दुआओं में मुझे ये दुआ अच्छी लगती है
पूजा है तुझको पूजेंगें हर दम माँ को ही अर्पण है ये मेरा जीवन
मेरी माँ एक मन्दिर है और ममता पूजा है एक वो
ही भगवान है और कोई न दूजा है ये मेरी कहानी है
प्यारी जिंदगानी है आज मैं हूँ जो कुछ भी मेहरबानी तेरी है
तेरा वो हँसना और मुझको हंसा देना और मैं जब रोलूँ
फिर तेरा रो लेना तेरी उगली, तेरा आंचल याद आये
पल–पल मैं जहाँ भी जाऊँ माँ तेरा साथ हो वहाँ है
दुआ हमेशा सर पे तेरा हाथ हो
पूजा है तुझको .....
तेरी वो बाते वो ममता भरी नजरे तुझको दुख होता
जब मुझपे बला गुजरे पहला कदम मेरा तुझसे
ही तू ही है वो माँ जो मेरा गुरूर है और
मेरा प्रभू लम्बी उम्र हो माँ तेरी यही आरजू
पूजा है तुझको .....
मेरी प्यारी माँ

''बेटी बचाओ''

मैं भी लेती श्रवास हूँ,
पत्थर नहीं इंसान हूँ।
कोमल मन है मेरा,
वही भोला सा है चेहरा।
जज्बातों में जीती हूँ,
बेटा नहीं पर बेटी हूँ,
कैसे दामन छुडा लिया,
जीवन के पहले ही मिटा दिया।
तुझसे ही बनी हूँ,
बस प्यार की भूखी हूँ,
जीवन पार लगा दूँगी,
अपनालो मै बेटा भी बन जाऊँगी।
दिया नहीं कोई मौका,
बस पराया बनाकर सोचा,
एक बार गले से लगा लो,
फिर चाहे हर कदम आजमालो,
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊँगी,
मैं अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी।
चंद लोगो की सुन ली तुमने
मेरी पुकार न सुनी
मैं बोझ नहीं भविष्य हूँ
बेटा नहीं, पर बेटी हूँ।

नीलम
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

अनमोल वचन

1. इज्जत भी मिलेगी दौलत भी मिलेगी।
सेवा करो माँ बाप की जन्नत भी मिलेगी
2. जिसके पास कुछ भी नहीं है उस पर दुनिया हँसती है जिसके पास सब कुछ है उससे दुनिया जलती है, मेरे पास आप जैसे अनमोल रिश्ते है, जिनके लिए दुनिया तरसती है।
3. इतनी मेहरबानी मेरे ईश्वर बनाये रखना।
जो रास्ता सही हो उसी पर चलाये रखना दुखे दिल किसी का मेरे शब्दो से इतनी कृपा मेरे ऊपर बनाये रखना।
4. मेरी गलतियाँ मुझसे कहो दूसरो से नहीं,क्योंकि सुधारना मुझे है दूसरो को नहीं।
5. खुश हूँ और सबको खुश रखती हूँ लापरवाह हूँ फिर भी सबकी परवाह करती हूँ मालूम है कोई मोल नहीं मेरा फिर भी अनमोल लोगो से रिश्ता रखती हूँ।

राखी बघेल
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

सीख

नीला अम्बर चाँद सितारे बच्चों की जागीरें है,
अपनी दुनिया में तो बस दीवारें है जंजीरे है।
रिश्ते हैं परछाई जैसे उम्मीदें हैं शराबों सी,
बनती है मिटती है पल–पल ये कैसी तस्वीरें हैं
बढ़कर है शैतान से भी इंसानों के काम यहाँ होठों पर,
फूलों सी बातें हाथों में शमशीरें है।
ये वैसा इंसाफ है यारब कैसा खेल है
किस्मत का कुछ हाथों में रंग ए हिना है कुछ में सिर्फ लकीरें हैं।

ओ मेरी प्यारी माँ
सारे जग से न्यारी माँ
हजारों फूल चाहिए एक माला वनाने के लिए,
हजारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए,
हजारों बूंद चाहिए एक समुद्र वनाने के लिए,
पर माँ अकेली ही काफी है,
बच्चों की जिदंगी को स्वर्ग वनाने के लिए।
प्यारी जग से न्यारी माँ, खुशियाँ देती सारी माँ
चलना हमें सिखाती माँ मंजिल हमें दिखाती माँ
सबसे मीठा बोल है माँ, दुनिया में अनमोल है माँ,
खाना हमे खिलाती है माँ, लोरी गाकर सुलाती है माँ,
प्यारी जग से प्यारी माँ, खुशियां देती सारी माँ।

खुशबू आर्या
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

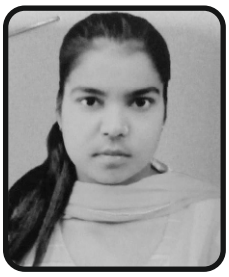

निशा गौतम
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

जिन्दगी के कुछ पल

1. मैने फलों को देखकर इंसानो को पहचाना है, जो बहुत मीठे होते है पर अन्दर से सड़े होते हैं।
2. अगर कोई इग्नोर करे तो उससे दूर हो जाओ रिश्ता अपनी जगह सेल्फ रिस्पेक्ट अपनी जगह।
3. रिश्ता ऐसा हो जो हमें अपना मान सके जो हमारे हर दुख को जान सके, अगर चल रहे हो तेज वारिश में भी तो पानी से अलग आपके आँसू पहचान सके।
4. कीचड़ और लीचड़ दोनों से बचने का प्रयास करे एक तन खराब करता है दूसरा मन खराब कर देता है।
5. न जाने कितनी अनकही बातें साथ ले जाएँगे झूठ बोलते है कि खाली हाथ आये थे खाली हाथ जाएँगे।
6. उतार चड़ाव के बाद भी अगर कोई आपका साथ नही छोड़ता तो उस इंसान की आप हमेशा कदर करना।
7. कांटो पर चलने वाला, इंसान अपनी मंजिल पर जल्दी पहुँच जाता है क्योंकि कांटे कदमो की रफ्तार बढ़ा देते है।

माँ की ममता

माँ की दुआ जिन्दगी वना देती हैं। खुद रोती है मगर हमें हंसा देती हैं। भूल से भी उसे मत रुलाना कभी माँ की एक दुआ आंसमा हिला देती है। हर खुशी में कुछ कमी रह जाएगी। आँख थोड़ी शवनमी रह जाएगी। जिन्दगी को भाप कितना भी संवारिए विना माँ के जिन्दगी अधूरी रह जाएगी।

माँ के लिए कोई दुआ नही करता फिर भी लम्बी उम्र जी लेती है प्रेम करती है राधा की तरह मीरा की तरह विष पी लेती है। स्व. के हम पर करम नहीं होते माँ हैं मौजूद तो मन्दिर की जरुत ही नहीं दास्ता से बड़ी जंजीर नही होती जिगर से बड़कर कोई पीर नहीं होती कोई भगवान हो रहमान या सुलतान हो कोई लेकिन माँ से अच्छी कोई तखीर नहीं होती।

चुटकुले

गधा – मेरा मालिक मुझे बहुत पीटता है।
कुत्ता – तुम भाग क्यों नहीं जाते
गधा – मालिक की खूबसूरत लड़की जब पढ़ाई नही, करती तो मालिक कहता है तेरी शादी गधे से करा दूंगा बस इस उम्मीद पर टिका हूँ।

पुलिस – पप्पू का दरवाजा खटखटाते हुए
पुलिस – हम पुलिस है दरवाजा खोलों
पप्पू – क्यों खोलू
पुलिस – हमें कुछ बात करनी है
पप्पू – तुम कितने लोग हो
पुलिस – हम 3 है।
पप्पू – तो आपस में बाते करलो मेरे पास टाइम नहीं है।।

सुबह सुबह पत्नी नींद से उठते ही सुनते हो जो
पत्नी – वोलो
पत्नी – मुझे सपना आया कि आप मुझे हीरे का हार लेकर आए हो।
पति – ठीक है तो वापिस सो जा और पहन ले।

पति अपनी नाराज पत्नी को रोज रोज फोन करता है सासूजी – कितनी बार कहा है कि वो अव तुम्हारे घर नहीं आएँगी फिर क्यो रोज रोज फोन करते हो।
जमाई – यह सुनकर अच्छा लगता है इसलिए।

विक्की पाराशरी
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

दोस्ती

हकीकत मोहब्बत की जुदाई होती है,
कभी – कभी प्यार में बेवफाई होती है,
हमारे तरफ हाथ वढ़ाकर तो देखो
दोस्ती में कितनी सच्चाई होती है।

कुछ रिश्ते खून के होते हैं,
कुछ रिश्ते पैसे के होते है,
जो लोग बिना रिश्ते के ही रिश्ते निभाते है
शायद वही दोस्त कहलाते है।

जीत और हार आपकी सोच पर निर्भर करती है।
मान लो तो हार होगी ठान लो तो जीत होगी।

जिंदगी में आप कितनी बार हारे थे कोई मायने नहीं रखता
क्यूंकि आप जीतने के लिए पैदा हुए हैं।
अगर सफलता पानी है दोस्त तो कभी वक्त और हालात पर
रोना नहीं मंजिल दूर ही सही पर घवराना मत दोस्तों क्योंकि
नदी कभी नहीं पूछती है कि समुन्दर अभी कितना दूर है।

हेमन्त यादव
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

दोस्ती

1. लोग रूप देखते है, हम दिल देखते है
लोग सपने देखते है हम हकीकत देखते है
लोग दुनिया में दोस्त देखते है
हम दोस्तों में दुनिया देखते है!!

2. कहीं अधेरा तो कहीं शाम होगी,
मेरी हर खुशी तेरे नाम होगी,
कभी मांग कर तो देख हमसे ए दोस्त,
होंठो पर हंसी और हथेली पर जान होगी!!

3. खुदा अगर दोस्त का, रिश्ता ना बनाता तो
इंसान कभी यकीन ना करता कि अजनबी
लोग अपनों से भी प्यारे हो सकते है।

4. एक जैसे दोस्त सारे नहीं होते
कुछ हमारे होकर भी हमारे नहीं होते
आपसे दोस्ती करने के बाद महसूस हुआ
कौन कहता है तारे जमीन पर नहीं होते!!

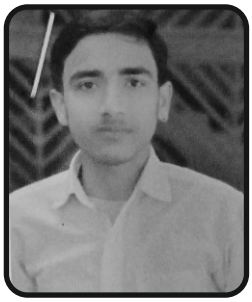

सौरभ पाराशरी
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

कॉलेज में बिताये हुए पल

नगर बिसौली मे स्थित दमयंती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय शिक्षा की देवी का वरदान यह महाविद्यालय है बड़ा महान, इस पर है अभिमान दिया इसीने हम सबको ज्ञान। यह महाविद्यालय धरती पर स्वर्ग के समान है, यहां वातावरण बहुत अच्छा है, यहां के शिक्षक और मेरे प्यारे दोस्त बहुत अच्छे है मेरे पास शब्द नहीं तारीफ करने के लिए, बी.ए. प्रथम वर्ष में महाविद्यालय आया करते थे तब डर लगता था कॉलेज आने में, फिर द्वितीय वर्ष में आते ही नजारा बदल गया दोस्तों से मुलाकात हुई शिक्षकों का प्यार और आर्शीवाद प्राप्त हुआ। इस साल मेरा तृतीय बर्ष है दोस्तो से और शिक्षकों से इतना लगाव हो गया करता है कि कॉलेज छोड़ने का मन ही नहीं करता है डिग्रिया तो सब हासिल कर लेते है पर जो विद्यार्थी कॉलेज आकर प्रतियोगिताओ मे भाग लेते है शिक्षकों का आर्शीवाद लेते है दोस्तो का प्यार लेते है यह सब हर कोई नहीं कर पाता है। महाविद्यालय में बिताये हुए यह पल सदियों तक याद रहेंगे। ''अक्सर याद आयेगी कॉलेज की शरारते और दिल को खुशियों से भर जायेगी, कितने भी कमीने हो कॉलेज के दोस्त लेकिन कॉलेज खत्म होने के उनकी बहुत याद आयेगी॥''

दोस्ती के लिए शायरी

1. रिश्तो से बड़ी जरूरत क्या होगी,
दोस्ती से बड़ी इवादत क्या होगी।
जिसे दोस्त मिल जाये तुम जैसे
जिन्दगी मे उसे और शिकायत क्या होगी ॥

2. छू ले आसमान जमीन की तलाश ना कर, जी लें जिंदगी खुशी की तलाश ना कर, तकदीर बदल जायेगी खुद ही मेरे दोस्त, मुस्कुराना सीख ले वजह की तलाश ना कर ॥

3. दूरियो से फर्क नहीं पड़ता बात तो दिलों की नजदीकियों से होती हैं। दोस्ती तो आप जैसों से है वरना मुलाकात तो जाने कितनों से होती है॥

4. जिन्दगी गुजर जाये पर दोस्ती कम न हो, हमें रखना चाहे पास हम ना हो। कयामत तक चलता रहे ये प्यारा सा सफर दुआ करें कि ये रिश्ता कभी खतम न हो॥

5. हर मोड़ पर मुकाम नहीं होता दिल के रिश्तों का कोई नाम नही होता, चिरागों की रोशनी से ढूंढा है आपको, आप जैसे दोस्तो का मिलना, आसान नहीं होता॥

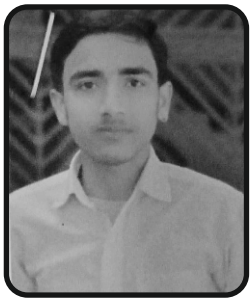

सौरभ पाराशरी
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

गुरू पर शायरी

1. जीवन जितना सजता है माँ बाप के प्यार से उतना ही महकता है गुरू के आर्शीवाद से॥
2. धरती कहती है, नदियाँ कहती है, अंवर कहते है बस यही तराना, गुरू आप ही वो पावन नूर, जिनसे रौशन हुआ जमाना॥
3. एक जैसे होते है शिक्षक और सड़क, खुद जहां है वही पर रहते है, मगर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा देते है।
4. गुरू ही चारो वेद है गुरू है सभी पुराण, शिक्षा देकर कर रहे सबका ही कल्याण।
5. गुरू के बल पर ही सदा, मानव करे विकास, बिन गुरू संभव नहीं, रचना कोई इतिहास॥

प्रेरक विचार

जिन्दगी की कठनाइयों से भाग जाना आसान होता है। जिंदगी में हर पहलू इम्तेहान होता है, इसे वालों को नहीं मिलता कुछ जिन्दगी में लड़ने वालो के कदमों में जहान होता है।

यही जज्बा रहा तो मुश्किलों का हल भी निकलेगा, जमीं बंजर हुई तो क्या वहीं से जल भी निकलेगा, ना हो मायूस ना घबरा अंधेरे से मेरे दोस्त इन्हीं रातों के दामन से सुनहरा कल भी निकलेगा।

''जिन्दगी की सबसे बड़ी खुशी, उस काम को करने में हैं,
जिसे लोग कहते हैं, तुम नहीं कर सकते''

बारिश की बूँदे भले ही छोटी हों लेकिन उनका लगातार बरसना बड़ी नदियों का बहाब बन जाता है, वैसे ही हमारे छोटे–छोटे प्रयास भी जिंदगी में बड़ा परिवर्तन ला सकते है।

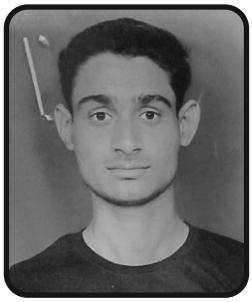

तरूण कुमार शाक्य
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रेरणा विचार

1. कद बढ़ा नहीं होता एड़िया उठाने से,
ऊँचाइयाँ तो हासिल होता है सर झुकाने से॥

2. अगर आप कुछ सोच सकते है, तो यकीन मानिए आप उसे कर भी सकते हैं।

3. सभी को सुख देने की क्षमता भले ही आप के हाथ में न हो, किन्तु किसी को दुख न पहुँचे यह तो के आप हाथ में ही है।

4. पानी की तरह बनो जो अपना रास्ता स्वयं बनाता है, पत्थर की तरह नहीं जो दूसरो का रास्ता भी रोक लेता है।

5. जहाँ तक दिखाई दें, वहाँ तक जाने की कोशिश जरूर करें, जब आप वहाँ पहुँचोगे आप इससे आगे भी देख पाओगे॥

चुटकुले

1. कल रात बिजली चली गई थी,
तो मैने मोमबत्ती जलाई।
थोड़ी देर बाद लाइट आई तो मैंने
मोमबत्ती को बुझाने के लिए फूँक मारी।
बहुत बार फूंक मारने के बाद भी
मोमबत्ती बुझ नहीं पा रही थी।
तो में बहुत टेंशन में आ गया,
सोचा ऑक्सीजन लेवल कम तो नहीं हो गया.....
इस विचार से ही पसीना पसीना हो गया
फिर पत्नी पास आकर बोली
फूंक मारने से पहले मास्क तो हटा लो.....।
हे भगवान, फिर जान में जान आई
दो गज दूरी, पत्नी है जरूरी॥

2. गधा – मेरा मालिक मुझे बहुत पीटता है
कुत्ता – तुम भाग क्यों नहीं जाते
गधा – मालिक की खूबसूरत लड़की जब पढ़ाई नहीं करती तो
मालिक बोलता है कि तेरी शादी गधे से कर दूगाँ
बस इसी उम्मीद से टिका हूँ।

3. पति (पत्नि से) – जरा पानी पिला दो
पत्नि – क्या हुआ प्यास लगी है
पति (गुस्से से) – नहीं गला चेक करना है,
कि कहीं से लीक तो नहीं है॥

रिफत खॉन
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

चुटकुले

1. जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे तुम दिन को अगर रात कहो रात कहेंगे। अर्थात इस गीत में कवि यह संदेश दे रहा है कि हे प्रिये, तुम्हारे मुंह कौन लगे।

2. टीचरः आपके बेटे को 1 से 100 तक की बोलनें को कहते तो वह 45 के बाद 46 बोलता है! बच्चे की माँः मैंने बच्चे को बहुत समझाया कि 45 के बाद 46 आता है, लेकिन जब आप पढ़ा रही थीं तब 45 के बाद नेटवर्क चला गया और जब 66 आया तब नेटवर्क वापस आया, अब वह बोलता है, मैम ने यही पढ़ाया था।

3. दो आलसी कबंल ओढ़कर सो रहे थे। तभी एक चोर आया और कंबल लेकर भाग गया आलसी पड़े–पड़े बोलाः पकड़ो, पकड़ो दूसरा आलसी : रहने दे जब तकियां लेने आयेगा तब पकड़ लेंगे।

4. रेलवे स्टेशन पर बेगम : प्यास लगी है पानी तो ला दो। शेखः क्यों न चिकन बिरयानी खिलाऊँ? बेगमः वाह मुँह में पानी आ गया। शेखः बस इसी पानी से काम चला लो।

5. मरीजः डॉक्टर साहब ये दो इंजेक्शन क्यों लगाए ऑनलाइन डिग्री लिया हुआ डॉक्टरः ऐसा है कि विटामिन बी 12 के इंजेक्शन खत्म हो गये थे, इसलिए बी 6 के दो लगा दिए। मरीज : अच्छा हुआ डॉ0 साहब बी 1 के नहीं मिले!

दीपिका
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

चुटकुले

दुःख क्या होता है, ये उस इंसान से
पूछो जिसे भंड़ारे में पूड़ी भी न मिले
और चप्पल भी चोरी हो जाए!!

कुछ लड़कियाँ तो इतनी चटोरी
होती है कि छोटे बच्चों को
प्यार करने के वहाने उनके चिप्स और
कुरकुरे खा जाती है।

अगर तुम उसे पा न सके
जिसे तुम प्यार करते हो तो
लाओ उसका नम्बर मुझे दो
मैं भी कोशिश करके देखता हूँ
कि कहाँ दिक्कत आ रही है।

'अंहकार' मत पालिये जनाव वक्त के
'समंदर' में कई सिकंदर डूब गए है।

एक बार फेल हो जाये
तो हम फिर से Try मारते है
हम जिददी है ऐ जिंदगी
कहाँ हार मानते है!!

"You don't have to be Great to Start, but you have to Start to be Great".
"You are the Artist of your own Life,
Don't hand the paint brush to anyone else."
"Do Good to Everyone without any Expectation,
Fragrance always remains in the hands of those who distribute roses.
"The best way to predict future is to create it".
"If one Plan doesn't work, change the plan, but never the Goal.
"There is no elevator to Success, You have to take the stairs".

प्रियाँशी शर्मा
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

विचार

1. कभी कभी दोस्ती में ही
दिल लग जाता है
दोस्तों जरूरी तो नहीं है कि
प्यार करने वाला ही
आपकी Care करता हो
Care दोस्त भी कर सकता है!!

दोस्ती

2. D – दूर होकर भी जो पास हो
O – औरों से जो खास हो
S – सबसे प्यारा जिसका साथ हो
T – तकदीर से ज्यादा जिस पर विश्वास हो
I – आई थिंक वो आप हो
3. सच्चे दोस्त हमें कभी गिरने नहीं देते!
ना किसी की नजरों में,
और ना किसी के कदमों में।
4. लोग तो प्यार में पागल होते है,
हम तो दोस्ती में पागल है।
5. मेरी आँखो में बसने वाला
तू चाँद से भी प्यारा है।
तू मेरी दोस्ती में चमकता सितारा है!
6. दोस्ती में कई दोस्त बनाना,
एक आम बात है लेकिन,
एक ही दोस्त से जिन्दगी भर
दोस्ती निभाना खास बात है।
7. दिल की जरूरत हर जान को होती है,
तारों की जरूरत आसमान को होती है।
मेरी तमन्ना है कि तू सलामत रहे, क्योंकि,
अच्छे दोस्त की जरूरत हर इन्सान को होती है।

मुस्कान
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

My Mom

तुम साथ होती हो तो यह जिंदगी नहीं एक सपना लगती है, अगर में पेड़ हूँ तो तुम पत्ती है, तुम पेड़ की छांव में हमें सुलाती हो, मुझे में लड़ने का साहस नहीं है माँ पर तुम साथ होती यह दुनिया जीता लुँ तुम माँ नहीं मेरी जिन्दगी हो अगर तुम घर में नजर नहीं आती हो, मेरी दुनिया बिखर जाती है। कोई पल तुमरे बिन जीना नहीं चाहती, पर आज तुम साथ नहीं हो पर लगता है, कि तुम बस मेरे साथ मम्मी तुम हमेशा मेरे रहना
I Miss You Mom

Poem-Papa

जिनके बिना अधूरी है मेरी जिंदगी की राह,
एक ऐसा नाम है वो कड़ी धूप मेरी छांव है वो,
उस खुदा के बदले जिन्हे मैने पाया,
वो कोई और नहीं मेरे पापा है,
खुद से पहले जिन्हें हमारी फिक्र रहती है,
खुद की जरूरत से पहले जिन्हें हमारी
जरूरत की फ़िक्र रहती है, मेरी छोटी सी
गलती पे दुनिया उगँली उठाती है, पर मेरे
पापा की आवाज उसे माफ कर हमेशा
नर्ह राह दिलाती है। हर सिचुऐशन में
कैसे ढ़लते है, ये आप से सीखा है,
कोई चांद भी लाकर क्यों न दे दे फिर

भी वो आपके मिटटी के खिलौनों में फीका है, माँ से बड़ा हमदर्द और पिता से बड़ा हमसफर कोई और नहीं॥
I Love you Papa

सुजाता

कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

दोस्ती

दोस्ती क्या है, ये मुझे इन सब से मिलने के बाद पता॥ प्रियाँशी शर्मा – ये और मैं 9वीं क्लास से साथ में पढ़ रहे हैं और तभी से हम दोनों बेस्ट फ्रेंड है। हम दोनों की दोस्ती इतनी अच्छी है घर हो, या कॉलेज या फिर कोंचिग में सभी हमारी दोस्ती का उदाहरण देते है कहते है सुजाता और प्रियाँशी को देखो कि कितनी अच्छी दोस्त है।

1. हर सितारा चाँद के करीब नहीं होता दिल की दौलत वाला गरीब नहीं होता है दोस्त तुम जैसा मिला है मुकद्दर से हर किसी का ऐसा नसीब नहीं होता!!

2. एक खूबसूरत सा चेहरा, एक सच्ची सी मुस्कान मासूम से दिल हर गम से अनजान दोस्ती पर यकीन अपनों की जान यही तो है, 'प्रियाँशी' और 'सुजाता' की पहचान॥

ये है, मेरे दोस्त

1. प्रियाँशी शर्मा
2. मुस्कान
3. निकेता
4. खुशबू आर्य
5. सौरभ पाराशरी
6. तरूण कुमार शाक्य
7. विक्की पाराशरी
8. भोजराज
9. विजय प्रताप
10. शशीकान्त
11. अरविन्द्र
12. हेमन्त यादव

ये लाइन मेरे दोस्तों के लिए

1. जिन्दगी लहर थीं आप साहिल हुए ना जाने कैसे हम आपकी दोस्ती के काबिल हुए, ना भूलेंगे हम उस हसीं पल को जब आप हमारी जिन्दगी में शामिल हुए।

2. दोस्ती पर एक किताब लिखेंगे

दोस्तों के साथ गुजरी हर बात लिखेंगे जब बताना होगा कि दोस्त कैसे होते है

तुम्हें सोच–सोच के हर बात लिखेंगे।

प्रियाँशी, सौरभ, तरूण, भोजराज ये जितने भी दोस्त है मेरे ये सभी इतने अच्छे है क्या तारीफ करू मैं इनकी, शब्द कम पड़ जायेंगे मेरे पास इनकी तारीफ करने के लिए।

इस साल मेरा बी.ए. फाइनल है

कॉलेज पूरा करने के बाद पता नहीं कौन क्या करेगा? कहाँ जाकर पढ़ाई करेगा मगर इतना जरूर पता है, कि बिछड़ जाने के बाद मैं तुम सब को बहुत मिस करूँगी तुम सब मुझे हमेशा याद रहोगे तुम सबके साथ बिताये दिन मैं कभी नहीं भूल सकती ....

इसके साथ–साथ मेरी ये दुआ है कि तुम सब जहाँ भी रहो हमेशा खुश रहो॥

Thanks For Coming My Life

सारिका गुप्ता
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ–बाप

1. बहुत देखे अपने मगर माँ–बाप के सिवा कोई अपना ना दिखा। बहुत मिले झूठे प्यार का दिखावा करने वाले मगर माँ–बाप के सिवा कोई चाहने वाला ना मिला। बहुत मिले साथ निभाने के वादे करने वाले मगर माँ–बाप के जैसा कोई साथी ना मिला। बहुत देखे मैने चांद तारे को तोडके जमीन पर लाने के वादे करने वाले मगर माँ–बाप के सिवा कोई ख्वाहिश पूरी करने वाला ना मिला।

Love You my Parents

2. माँ की अजमत से अच्छा जाम क्या होगा, माँ की खिदमत से अच्छा काम क्या होगा, खुदा ने रख दी हो जिसके कदमों में जन्नत, सोचो उसके सर का मुकाम क्या होगा।

3. माँ की एक दुआ जिन्दगी बना देगी
खुद रोएगी मगर तुझको हँसा देगी
कभी भूलके भी माँ को न रूलाना
तुम्हारी एक गलती पूरी अर्ष हिला देगी।

My Friends

1. उम्र भर साथ निभाने वाला मुश्किल वक्त में काम आने वाला.... भँवर में अगर फँसी हो कश्ती मेरी, मेरा दोस्त है पार लगाने वाला।

2. नहीं बन जाता कोई अपना, यूँ ही दिल लगाने से, करनी पड़ती है दुआ, सच्चा दोस्त पाने के लिए रब से, रखना संभालकर ये याराना अपना, टूट ना जाए ये किसी के बंहकाने से।

3. निकलते हैं आंसू जब मुलाकात नहीं होती टूट जाता है दिल जब बात नहीं होती तेरी जान की कसम ऐ मेरे दोस्त तुझे याद ना किया हो, ऐसी कोई रात नहीं होती।

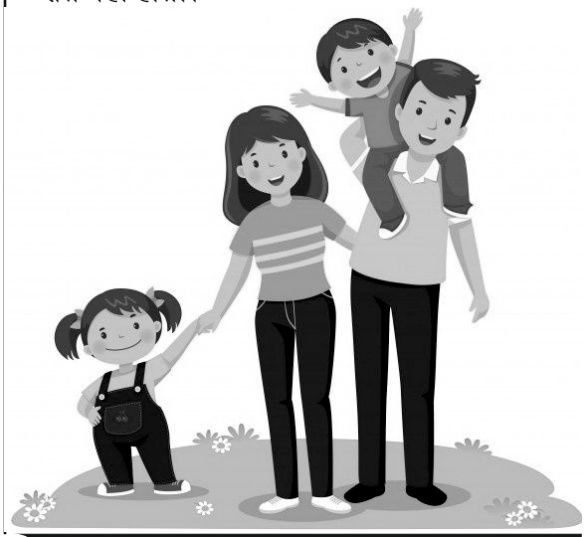

उज़मा
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

''शायरी''

1. आँख दुनिया की हर एक चीज देखता है
मगर जब आँख के अन्दर कुछ चला जाए
तो उसे नहीं देख पाती बिल्कुल इसी
तरह इंसान दूसरो के ऐव को तो देखता है
पर उसे अपने ऐव नजर नहीं आते।

2. सुबह की नींद इंसान के इरादों को कमजोर करती है मन्जिलों को हासिल करने वाले कभी देर तक सोया नहीं करते।

3. कभी किसी को ये मत कहो के तुम मुझे याद रखना तुम अगर याद रखने के काबिल हुए तो यकीनन याद रह जाओगे।

4. कितने भी बड़े स्कूल या कॉलेज में पढ़ लो लेकिन इंसान बनने के लिए इंसानियत जरूरी है।

5. कभी तुम दूसरों के लिए दिल से दुआ मांग कर देखों तुम्हें अपने लिए दुआ मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

6. जब भी कोशिश की दिल से मुस्कुराने की खत्म हो गई हर मुश्किल जमाने की पलकों पर एक आखिरी आँसु थे घड़ी मुनासिब हैं सफर आजमाने की, वरना ये अंधेरे तो रूह में उतर जाते वो तो हमने जरूरत की अपनी दोस्ती निभाने की। आखिरी तमन्ना की एक साँस बाकी है आप हमको मोहलत है हाले दिल सुनाने की।

माँ

कौन कहता है बंद किस्मत बालों की कोई ताली नहीं होती, सूखे पेड़ो पर क्या कभी डाली नहीं होती ओर जो झुक जाते है अपने ''माँ–बाप'' के कदमों में उस इंसान की किस्मत कभी खाली नहीं होती।

I Live My Parents

My Dear Friend.

दोस्त रखते है हमारी सेहत दुरूस्त

घर, परिवार, किचन के फेर में कहीं आपके दोस्त और उनकी दोस्ती पीछे तो नहीं छूट रही अगर हां तो उनके लिए भी वक्त निकालिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोस्त हमें ढ़ेरो बीमारियों से बचाते है तो दोस्तों की मौजूदगी से हमें खुशी होती है, ऐसे में अच्छे हार्मोन्स का स्त्राव होता है। दोस्तों को तनाव कम करने की दवा कहा जाए तो गलत नहीं होगा दोस्तों के साथ Time Spent करना बहुत अच्छा होता है, हमारे सुख दु:ख का साथी होते है हमारे दोस्तों से हम अपनी अच्छी बुरी सारी बातें Share करते हैं।

इसीलिए दोस्ती भी बहुत जरूरी है।

उम्मीदों को टूटने मत देना,
इस दोस्ती को छूटने मत देना
दोस्त मिलेगें हमसे भी अच्छे
पर इस दोस्ती को टूटने मत देना।

सही नहीं हमेशा खुशी की तलाश

खुश रहना अच्छी बात है पर चौबीस घण्टे खुशियों की तलाश में लगा देना टीक नहीं है। एक नए अध्ययन के मुताबिक ऐसा करने वाले लोगों से खुशियाँ और दूर भागती चली जाती है। ये सच है कि खुश रहने से सकारात्मक भावनाएं बढ़ती है, पर खुशी की लगातार तलाश करने से आप सच में खुश रहने लग जाए यह जरूरी तो नहीं।

बीमारियों पर भारी यारी

दोस्ती सिर्फ एक रिश्ता नहीं बल्कि एहसास है, अपनेपन का एक ऐसा एहसास जिसमें एक की खुशी में दूसरा हंसता है। दुख, किसी का भी हो आँसु सबके छलकते है। आपकी दोस्त कभी माँ की तरह पीठ थपथपाती है तो कभी आपको Teacher की तरह फटकार लगाती है। गुस्सा होने पर रूठे दोस्त को मनाती है तो टांग खीचकर सताती है दोस्ती सिर्फ हमारे सुख दुख का हिस्सा नहीं होते बल्कि वे हमारी सेहत को भी दुरुस्त रखते हैं अच्छे दोस्त सेहत के लिये इस तरह अच्छे होते है, क्योंकि वो हमारे सुख में हमारे साथ रहते है अगर हम दु:खी भी हो तो हमें हमारे दोस्त प्यारी सी Smile देकर हमें खुश कर देते हैं इसीलिए दोस्ती बहुत जरूरी है।

शिवानी
कक्षा - बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

पानी बचाएँ बने महान

पानी के लिये तरसते हैं, धरती पे काफी लोग यहाँ।
पानी सा धन–भला कहाँ, पानी की है मात्रा सीमित।
पीने का पानी और सीमित, तो पानी को बचाए।
इसी में है समृद्धि निहित, शेविंग या कार की धुलाई।
या जब करते हो स्नान, पानी की जरूर बचत करें।
पानी से है धरती महान, जल ही तो जीवन है।
पानी ही गुणों की खान, पानी ही तो सब कुछ है
पानी है धरती की शान॥

26 जनवरी का महत्व

1. 26 जनवरी 1530 में हुमायूँ ने शेरशाह को परास्त किया था।
2. 26 जनवरी 1792 में टीपू की अग्रेंजों मे लड़ाई हुई थी।
3. 26 जनवरी 1858 में इनकम टैक्स धारा पास हुई थी।
4. 26 जनवरी 1869 में स्वेज नहर बनकर तैयार हुई थी।
5. 26 जनवरी 1869 में बम्बई में हाई कोर्ट बनकर तैयार हुआ था।
6. 26 जनवरी 1876 में कलकत्ता से पहली गाड़ी बम्बई आयी थी।
7. 26 जनवरी 1882 में कलकत्ता, मद्रास बम्बई में टेलीफोन से बात शुरू हुई थी।
8. 26 जनवरी 1881 में टेलीफोन का आविष्कार हुआ था।
9. 26 जनवरी 1930 पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग की गयी थीं
10. 26 जनवरी 1950 में राष्ट्रीय चिन्ह निश्चय हुआ था।
11. 26 जनवरी 1950 में भारत में गणतन्त्र घोषित हुआ था।

प्रभा मौर्य
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

मेरा प्यारा विद्यालय

1. पढ़ने वालों पढ़ो कही भी इस पर कोई जोर नहीं, दमयन्ती राज आनन्द राजकीय स्नातकोत्तर सा महाविद्यालय कोई और नहीं।
2. नील गगन सा भवन है, इसकी हरियाली सी छाई है, पूरी बिसौली तहसील में इसने अपनी जगह बनायी है। पढ़ने वालो पढ़ों .....
3. सबका वेश एक सा है और सब में हैं भाई चारा, एक–एक कण इस विद्यालय का लगता सबको प्यारा। शिक्षक को अपने विषयों का पूरा ज्ञान है, प्राचार्या जी को देखो अद्‌भुत योग्य महान हैं, पढ़नों वालों पढ़ो .....
4. खेल कूद का है आयोजन सबको रहता ध्यान है, सहगामी क्रियाओं का होता यहाँ सम्मान हैं। ऐसी शिक्षा मिले यहाँ पर ऐसी जगह कोई और नहीं पढ़ने वालों पढ़ो .....

मजेदार चुटकुले

1. विकास साइकिल चला रहा था, तभी अचानक लड़की से टकरा गया लड़की जोर से चिल्लाई घण्टी नहीं मार सकता था? विकास पूरी साइकिल तो मार दी अब घण्टी अलग से मारूँ क्या?
2. पुत्र पिता से – आप कहते है कि ज्यादा लालच मत करो।
   पिता – हाँ बेटा।
   बेटा – इसलिए मैने 100 में से 2 अंक पाये हैं।

जीनू
कक्षा - बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

कविता

पहले खुद को, भली भाँति आँखों सही,
प्यार गैरों में भी बाँटो सही,
सीख देना तो गैरों को आसान है।
पहले अपने गिरे गम झाँको सही–सही ?
गिराने सब यहाँ आते है उठाने कौन आता है।
सही राहें इस जमाने में दिखाने कौन आता है?
जुदा करने के आदि ये जालिम जात वाले है?
जुदा लोगों को फिर से मिलाने कौन आता है।
गीदण की धमकियों से शेर डरता नहीं है।
मुर्दा शिकार किन्तु शेर करता नहीं है?
हिम्मत है तो वो सामने आ जाये,
खुशी से भारत कभी पीछे से बार करता नहीं है।

माँ से एक नवजात लड़की की गुजारिश

हे मायी यूँ न मार, मुझे दे जीने का अधिकार मुझे,
इस रोज से गर्भ में आयी हूँ, चिंता में डूबी जाती है,
मैं लड़की हूँ या लड़का तुम यही जाँच करवाती हो, पापू भी गुमसुम रहते है, भर पेट न खाना खाते हैं,
गुम वो दिन रात सुबह शाम तलक वो सोच घबराते है,
खुशियाँ ही खुशियाँ बरसेगी जिस रोज में घर में आँऊगी,
धन भाग्य लक्ष्मी तीनों को अपने साथ ले आँऊगी, इतनी कृपा करो मायी ले लेने दो आकार मुझे। ऐ मायी यूँ न मार मुझे ले लेने दो आकार मुझे।
है यही धारणा दुनिया की, बेटियाँ परायी होती है। पर बिना बेटियों के तकदीर सभी की सोती है। जब बेटी ही न होगी तो? बेटा फिर कैसे आयेगा बिन बेटी के इस सृष्टि का सब खेल खत्म हो जायेगा। इसलिए बेटियों पर अपने, बेटों जैसा व्यवहार करो
बस दृष्टि समान रखो इन पर न इनके लिए कुछ खास करो
फूल तुम्हारी गोदी का करलो थोड़ा – सा प्यार मुझे मायी
यूँ न मार मुझे देंदें जीने का अधिकार मुझे ॥

चुटकुला

लड़का – तेरा नाम क्या है?
लड़की – तमन्ना
लड़की – और तेरे पापा का नाम सरफिरोशी होगा।
लड़की – क्यों?
लड़का – क्योंकि सरफिरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
पप्पू – यार शादी के जोड़े कौन बनाता है।
राजू – भगवान बनाता है?
पप्पू – ओ तेरी की, मैं तो दर्जी को दे आया।

मुझे ये समझ नहीं आता
ये ''सावधान'' इंण्डिया''
वाले India को सावधान करते है .....।
या नए – नए कांड करना सिखाते हैं।

पढ़ाई छोड़ के सब
खेल रहे हैं आजकल PUBG – PUBG
बाद में नौकरी ना मिली
तो बेचोगे SUBG – G

ज्योति
कक्षा - बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

एक अजन्मी बेटी का सच

सौभाग्य मिला माँ बनने का, तो माँ का कर्म किया होता। क्यों दफन कोख में कर दिया, मुझको भी जन्म दिया होता। तू भी किसी की बेटी है, इस बात को कैसे भुला दिया बेटी होकर एक बेटी, जागने से पहले ही सुला दिया॥ शायद मैं भी तेरे जीवन की, बगिया में खूश्बू भर देती छूकर के नई ऊँचाईया, रोशन नाम मैं तेरा कर देती। मासूम कली मैं खिल जाती, यदि तुमने रहम किया होता। क्यों दफन कोख में कर दिया, मुझको भी जन्म दिया होता। गर्भ में बेटी सुनकर माँ तुम क्यों
इतना लाचार हुई? नारी की दुश्मन नारी है, ये बात आज साकार हुई। लक्ष्मी, सावित्री, शकुन्तला, सीता, पन्ना धाय, हुई। बेटी तो कल्पना चावला और सुनीता थी जो अंतरिक्ष में पार हुई। इतिहास बेटियों का पढ़कर, माँ कुछ तो मनन किया होता। क्यों दफन कोख में कर दिया, मुझको भी जन्म दिया होता होता। दुत्कारेगी दुनिया तुमको तू नजरों में गिर जाऐगी। फिर सोच तू अपने बेटे की बहू कहाँ से लायेगी। ये भी तो एक हत्या है, तू हत्यारिन कहलाएगी। पिघलेगा ममत्व ममता का, और ममता भी शर्माएगी। ममता का ज्ञान नहीं था तो, किसी नारी से पूछँ लिया होता। क्यों दफन कोख में कर दिया मुझको भी जन्म दिया होता।

प्रेरणादायी वाक्य

1. असफलता एक चुनौती है, उसे स्वीकार करो, असफलता को सफलता में बदलने के लिए कार्य करो। यदि सूर्य की तरह चमकना चाहो, तो पहले सूर्य की तरह जलना सीखो

2. प्रार्थना और आशीर्वाद दोनो अदृश्य है परन्तु दोनों में इतनी ताकत है कि नामुमकिन को मुमकिन बना देते है।

3. माना कि अंधेरा धना है
लेकिन दिया जलाना कहाँ मना है।

कुछ मुक्तक (स्वरचित)

करना जो याद कर्ज, मर्ज, फर्ज, ईश्वर को, भूलना तो कृत उपकार भूल जाइये।
छूना यदि चाहते हो। सुपात्र के चरण छूइये। दिल ही लगाना है तो, नंदलाल से लगाइये। जिन्दगी ही मिटानी है तो सीमा पे, मिटा दो मीत। आप किसी सीमा पै न जिन्दगी मिटाइये। वन्दना ही गानी है, तो भारती के गाये गीत, आप किसी वन्दना की वन्दना न गाइये।

सुमन मीना
कक्षा - बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

मंजिल

दिल बिन बताएँ मुझे ले चल कहीं,
जहॉ तू मुस्कराये मेरी मंजिल वहीं,

मुश्किलें जरूर है, मगर ठहरी नहीं हूँ मैं,
मंजिल से जरा कह दो अभी पहुँची नहीं हूँ मैं।

मंजिल मिल ही जायेगी भटकते-भटकते ही सही,
गुमराह तो वो है जो घर से निकले ही नहीं

मंजिल उन्ही को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती,
है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

ना मंजिल, ना मकसद ना रास्ते का पता है,
हमेशा दिल किसी के पीछे ही चला है।

एक रास्ता यह भी है मंजिलों को पाने का,
कि सीख लो तुम भी हुनर हाँ में हाँ मिलाने का।

मंजिल मिले या ना मिले, ये तो मुकदर की बात हैं,
हम कोशिश भी ना करे ये तो गलत बात हैं।

निगाहों में मंजिल थी, गिरे और गिर कर संभलते रहे
हवाओं ने बहुत कोशिश की,
मगर चिराग ऑधियों में भी जलते रहे।

आदित्य नारायण
कक्षा - बी.ए. प्रथम वर्ष

मेरे पापा

1. जिसने खड़ा किया मुझे मेरे पैरों पर में उसके सर पर ताज सजाऊंगा।
मुझे कसम है मेरी इंसानियत कि में एक दिन अपने पिता को राजा बनाऊँगा॥
2. वो जमीं मेरा वो ही आसमान है, वो खुदा मेरा वो ही भगवान है। क्यो में जाऊँ कही उसे छोड के, पापा के कदमों में सारा जहान है।

जय भीम

नींद अपनी खोकर जगाया हमको,
आसुँ अपने छुपाकर हसाँया हमको,
कभी मत भूलना उस महान इंसान को,
दुनिया कहती है बाबा साहब अम्बेडकर जिनको।

हमारा संविधान

रूतबा मेरे सर को तेरे संविधान से मिला है,
ये सम्मान भी हमें तेरे संविधान से मिला है,
औरो को जो मिला है, बो मुकददर से मिला है,
हमें तो मुकद्दर भी तेरे, संविधान से मिला है।

मंजिल

माँ बाप का दिल जीत लो कामयाब हो जाओगे।
वरना सारी दुनिया जीत कर भी हार जाओगे॥

मेरी दुनिया में इतनी जो शौहरत है।
मेरी माता पिता की बदौलत है॥

चाहे लाख करो तुम पूजा और तीर्थ करो हजार।
अगर माँ-बाप को ठुकराया तो सब है बेकार॥

माता-पिता के बिना दुनिया की हर चीज कोरी है।
दुनिया का सबसे सुंदर गीत माँ की लोरी है॥

रिंकी
कक्षा - बी.एस.सी तृतीय वर्ष

मंजिल

1. ''संघर्ष इंसान को इतना मजबूत बना देता है
   फिर चाहे वह कितना भी कमजोर क्यों न हो''
2. ''जो सफर की शुरूआत करते है....
   वे मंजिल भी पा लेते है.....
   बस एक बार चलने का हौसला रखना जरूरी है
   क्योंकि.....अच्छे इंसानों का तो रास्ते भी इंतजार करते है।
3. ''घायल तो यहाँ हर परिंदा है
   मगर जो फिर से उड़ सका वही जिन्दा है''
4. '' मंजिल जरूर मिलेगी भटक तो सही,
   गुमराह तो वे है जो घर से निकले ही नहीं''
5. ''शेर बनो सिहांसन की चिन्ता मत करो,
   तुम जहाँ बैठोगे वहीं सिहांसन होगा''
6. ''हार के भी देख लिया फिर किस बात का गम है
   चल उठ और इस दुनिया को दिखा दे
   कि तेरे अंदर कितना दम है''।
7. ''हालात चाहे जैसे भी हो धड़कनों में नशा जीत का ही होना चाहिए''
8. ''न थकान होनी चाहिए न हार होनी चाहिए जीत के लिए निकले हो, तो बस जीत होनी चाहिए इतनी शिद्दत से परिश्रम करो, की हार भी शर्म से हार जाए''

सलौनी
कक्षा - बी.ए. प्रथम वर्ष

भजन

ऊँचा है भवन, ऊँचा मन्दिर, ऊँचा है शान मईया तेरी
चरणों में झुके बादल भी तेरे, पर्वत पे लागे शैया तेरी,
हे कालरात्रि हे कल्याणी, तेरा जोड़ धरा पे कोई नहीं
मेरी माँ के बराबर कोई नहीं मेरी माँ .....
तेरी ममता से जो गहरा हो, ऐसा तो सागर कोई नहीं
मेरी माँ के बराबर कोई नहीं मेरी माँ .....
जैसे धारा और नदियाँ, जैसे फूल और बगिया मेरे इतना ज्यादा पास है तू, जब ना होगा तेरा आंचल नैना मेरे होंगे जल-थल, जाएँगे कहाँ फिर मेरे आँसू दुःख दूर मेरा सारा, अंधियारो में चमका तारा नाम तेरा जब भी है पुकारा, सूरज भी यहाँ है चंदा भी तेरे जैसा उजागर कोई नहीं,
मेरी माँ के बराबर कोई नहीं मेरी माँ .....
हे कालरात्रि हे कल्याणी, तेरा जोड़ धरा पे कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं मेरी माँ .....

आशीश
कक्षा - बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ – पापा

माँ बाप का दिल जीत लो कामयाब हो
जाओगे, वरना सारी दुनिया जीत कर
भी हार जाओगे। मेरी दुनिया में इतनी जो शौहरत है
मेरी माता पिता की बदौलत है।
चाहे लाख करो तुम पूजा और तीर्थ करो हजार,
अगर माँ बाप को ठुकराया तो सब है बेकार।
माता पिता के बिना दुनिया की हर चीज कोरी है,
दुनिया का सबसे सुंदर गीत माँ की लोरी है।
ना जरूरत उसे पूजा और पाठ की,
जिसने सेवा की हो अपने माँ बाप की॥

दोस्ती

जिन्दगी का नाम दोस्ती
दोस्ती का नाम जिंदगी
प्यार से भी सच्ची और गहरी होती है। दोस्ती
रास्ते बदल गये हम यारों के, मगर रिश्ता
आज भी वही पुराना है।
रिश्ता का नाम भी अजीब है। वो सिर्फ दोस्त है।
मेरा है पर घर वालों के ज्यादा करीब है।
जिदंगी में प्यार हो या ना चलेगा पर एक हरामी दोस्त
होना चाहिए। खुदा ने अगर दोस्तों का रिश्ता ना बनाया
होता तो इंसान कभी यकीन न करता कि अजनबी लोग
अपनो से भी प्यारे होते है।

करिश्मा
कक्षा - बी.ए. प्रथम वर्ष

मुझे अच्छा नहीं लगता

मैं रोज खाना पकाती हूँ।तुम्हें बहुत प्यार से खिलाती हूँ
पर जूठे बर्तन उठाना
मुझे अच्छा नहीं लगता।
कई वर्षो से हम तुम साथ रहते है।
लाजिम है, कि कुछ मतभेद तो होंगें पर तुम्हारा बच्चों के सामने चिल्लाना
मुझे अच्छा नहीं लगता॥
हम दोनो को ही जब किसी फंक्शन में जाना हो तो तुम्हारा पहले कार में बैठकर यू हार्न बजाना।
मुझे अच्छा नहीं लगता॥
जब मैं शाम को काम से थक कर वापस आती हूँ।
तुम्हारा गीला तौलिया बिस्तर से उठाना मुझे अच्छा नहीं लगता।माना कि अब बच्चे हमारे कहने में नहीं है,
पर उनके बिगड़ने का सारा इल्जाम मुझपर लगाना,
मुझे अच्छा नहीं लगाता॥
अभी पिछले वर्ष ही तो गई थी यह कह कर तुम्हारा, मेरी राखी डाक से भिजवाना
मुझे अच्छा नहीं लगता।
तुम्हारी माँ के साथ तो मैने इक उम्र गुजार दी, मेरी माँ से दो बातें करते तुम्हारा हिचकिचाना,
मुझे अच्छा नहीं लगाता।
पूरा वर्ष तुम्हारे साथ ही तो रहती हूँ पर तुम्हारा ये कहना कि मायके से जल्दी लौट आना,
मुझे अच्छा नहीं लगता।
पूरी जिंदगी तो मैने ससुराल में गुजार दी फिर मायके से मेरा कफन मंगवाना, मुझे अच्छा नहीं लगता।

खुशी सक्सेना
कक्षा - बी.ए. प्रथम वर्ष

मेरे पापा

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता,
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता,
जन्म दिया है अगर माँ ने,
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता,
कभी कंधे पे बिठा के मेला दिखाता है पिता,
कभी बनके घोड़ा घुमाता है पिता,
माँ अगर पैरों पर चलना सिखाती है,
पैरों पर खड़ा होना सिखाता है पिता।

एक बेटी के शब्द

बेटी बनकर आई हुँ माँ – बाप के जीवन में
बसेरा होगा कल मेरा किसी और के आँगन में
क्यों ये रीत 'रब' ने बनाई होगी,
कहते है? आज नहीं तो कल तू पराई होगी,
देके जन्म पाल–पोसकर जिसने हमें बड़ा किया
और वक्त आया तो उन्हीं हाथों ने हमें
विदा किया टूट के बिखर जाती है हमारी
जिन्दगी वही पर फिर भी उस बंधन में प्यार
मिले जरूरी तो नहीं क्यों रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है
क्या बस यहीं बेटियो का नसीब होता है॥

''माँ''

माँ तो माँ होती है वो माँ ही है जिसके रहते जिंदगी में कोई गम नहीं होता दुनिया साथ दे ना दे.. पर माँ का प्यार कभी कम नहीं होता ये कैसे दिन आ गये है यारों जब हमें बोलना नहीं आता था तो माँ समझ जाती थी

आज हम हर बात पे कहते हैं कि माँ तू नहीं समझेगी, पता है माँ से बड़ा कोई अलार्म नहीं हैं इस दुनिया में 7 बजे उठाने को कहो तो 6 बजे उठाके कहती है 8 बजे गए।

हम करते रहे सैर जनत की रात भर सुबह जब आंख खुली तो पता चला.. कि सर तो माँ के कदमों में ही था कोई और क्या सिखाएगा हमें प्यार करने का सलीका हमने माँ के एक हाथ से थप्पड़ तो दूसरे हाथ से रोटी खायी हैष जब एक रोटी के चार टुकडे होते है और खाने वाले 5 होते है. तो मुझे भूख नहीं है ये कहने वाली हमारी माँ होती है माँ तो माँ होती है दुनिया में सबसे प्यारी होती है।

मोहनी सक्सेना
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

मेहनत रंग लायी

नहीं बनाया किसी ने टाटा, बिरला, अंबानी
खुद ही बने हैं सव अपने सपनों के सौदागर
राह नहीं थी बनी बनाई, ना ही है कोई बड़ा ज्ञानी
सब ने करी है कडी मेहनत, फिर है मेहनत रंग लाई
एक पल में नहीं बनता सब कुछ
पल – पल मेहनत करके सब ने है मंजिल पाई
कल क्या होगा ना ध्यान दिया, बस काम किया
राह में मुश्किल उनके भी आई।
सुना है बुना उन्होनें भी ताना बाना,
लेकिन फितूर चढ़ा कुछ पाने का।
तोड दिया सब का भ्रम, कर दिया सपनो को साकार,
ताना देने वालो ने हीहंसकर सत्कार दिया।

हमें नया कल बनाना है

बेड़ियो को तोड कर नफरत ही
हर जगह प्यार ही प्यार फैलाना है।
हमें नया कल बनाना है,
जात पात को खत्म कर भाई चारा बढ़ाना है।
हमें नया कल बनाना है।
बेटा–बेटी छोटे बड़े सबको एक साथ में लाना है
हमें नया कल बनाना है।
उज्जवल भविष्य सबका हो ऐसा कल लाना है
हमें नया कल बनाना हैं।

प्रियांशी
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ पर गीत

है कालरात्रि हे कल्याणी, तेरा जोड़ घरा पर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं तेरी ममता से जो गहरा हो, ऐसा तो सागर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, दुख दूर हुआ मेरा सारा अँधियाशें में चमका तारा, नाम तेरा जब भी पुकारा है सूरज भी यहां है, चंदा भी तेरे जैसा उजागर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं। हे कालरात्रि कल्याणी तेरा जोड़ धरा पर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं। खिल जाती है सूखी डाली भर जाती है झोली खाली तेरी ही मेहर है मेहरवाली ममता से तेरी बढ़ के मैया मेरी धरोहर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं हे कालरात्रि है कल्याणी तेरा जोड़ धरा पर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं खिल जाती है सूखी डाली भर जाती है झोली खाली तेरी ही मेहर है मेहरवाली ममता से तेरी बढ़ के मैया मेरी धरोहर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं।

शिवम् कुमार
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

यूपी सरकार की जीत के बारे में

मिया चले थे पहन के कुर्ता सर पर टोपी लाल।
सत्ता आ गई फिर से भगवा, धरे रह गय ख्याल
जोगीरा सा रा–रा–रा बाबा की लाठी के आगे सारे
छोड़ के भागे यूपी सारे ..... चोर माफियाँ डॉन .....
जोगीरा सा–रा–रा–रा..... भेंट चढ़ गए हाथी वाथी.....
पंजा हुआ हताश। धरी रह गई साईकिल बाइकिल।
कमल हो गया पास .....।जोगीरा सा–रा–रा–रा .....।
स्वंय को कहने बाले नेबला .....। चारो खाने चित .....।
यूपी की जनता ने खेला .....। ये बड़ा विचित्र .....।
जोगीरा 7 सा – रा – रा – रा .....
जोगीरा – सा – रा – रा –रा .....

प्रशान्त
कक्षा – बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

विपत्तियो से मनुष्य को जागरूक करना

सच है विपत्ति जब आती है कायर को ही दहलाती है, शूरमा नही विचलित होते सब एक नहीं धीरज खोते विघ्नो को गले लगाते हैं काँटो में राह बनाते हैं। वसुधा का नेता कौन हुआ? भूखण्ड विजेता कौन हुआ, अतुलित यश क्रेता कौन हुआ नव धर्म प्रणेता कौन हुआ जिसने न कभी आराम किया विघ्नों में रहकर नाम किया। जब विघ्न सामने आते हैं सोते से हमें जगाते है, मन को मरोड़ते हैं पल पल तन को झँझोरते है पल पल सत्पथ की ओर लगाकर ही। जाते हैं हमें जगाकर की वाटिका और वन एक नहीं आराम और रण एक नहीं, वर्षा अंधड़ आतप अखंड, पौरूष के है साधन प्रचण्ड वन में प्रसून तो खिलते है, बागो में शाल न मिलते है, है कौन विघ्न ऐसा जग में टिक सके वीर नर के भग में, पर्वत के जाते पाँव उखड मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी वन जाता हैं।

संगीता श्रीवास्तव
कक्षा – एम.ए. प्रथम वर्ष

माँ पर कविता

घुटनों से रेगतें – रेंगते कब पैरों पर खड़ी हुए,
तेरी ममता की छाँव में जाने कब बड़ी हुई।
काला टीका दूध मलाई आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह, माँ प्यार ये तेरा कैसा है।
सीधी – साधी भोली भाली मैं ही सबसे अच्छी हूँ।
कितनी भी हो जाँऊ बड़ी, माँ मैं आज भी तेरी बच्ची हूँ।

प्रेरक कविता

तेरी इस दुनिया में ये मंजर क्यों है,
कहीं अपनापन तो कही पीठ में खंजर क्यों हैं।
सुना है तू हर जरे में रहता है फिर जंमी पर कही मस्जिद कही
मंदिर क्यों हैं जब रहने वाले दुनिया के हर बन्दे तेरे हैं
फिर कोई दोस्त तो कोई दुश्मन क्यों हैं..... तू ही लिखता है
हर किसी का मुकद्दर, फिर कोई बदनसीब कोई मुकद्दर का
सिकंदर क्यों है .....

कविता

हारना तब आवश्यक हो जाता है, जब लड़ाई अपनों से हो!
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है, जब लड़ाई अपने आप से हो।

मंजिल मिले या न मिले ये तो मुकद्दर की बात है,
हम कोशिश ही न करे ये तो गलत बात है।

किसी ने बर्फ से पूछा कि आप इतने ठंडे क्यों हो बर्फ ने बड़ा अच्छा जवाब दिया मेरा अतीत भी पानी मेरा भविष्य भी पानी फिर गरमी किस बात पे रखूँ।

हरिवंश राय बच्चन

पैर की मोच और छोटी सोच हमें आगे बढ़ने नहीं देती।
टूटी कलम और औरों से जलन खुद का भाग्य लिखने नहीं देती।

काम का आलस और पैसो का लालच हमें महान बनने नहीं देता।

अपना मजहब ऊँचा और गैरों का ओछा ये सोच हमें इन्सान बनने नहीं देती।

शशिकान्त
कक्षा – बी.कॉम. प्रथम वर्ष

पिता का महत्व

पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है पिता नन्ने से परिदें का बड़ा आसमान है॥ पिता है तो घर में प्रतिपल राग है पिता से माँ की चूड़ी बिन्दी और सुहाग है॥ पिता है तो बच्चों के सारे सपने है। पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं॥ पिता जीवन है, संबल है शक्ति हैं। पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है॥ पिता उंगली पकडे बच्चे का सहारा है। पिता कभी कुछ खट्टा कभी खारा है॥ पिता पालन है, पोषण है परिवार का अनुशासन है। पिता धाँस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है॥ पिता अप्रदर्शित अनंत प्यार है पिता है तो बच्चों को इंतजार है, पिता है तो बच्चों के ढेर सारे सपने पिता नही तो बचपन अनाथ है, क्योकि माँ बाप की कमी कोई पाट नहीं सकता और ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नही सकता।

माँ का प्यार

उसके पल्लू ने ना जाने कितने, तूफानों को मोड़ दिया।
और छान के जहर को पल्लू से अमृत कर दिया।
और कल आया था समुद्र मुझे भी डुबने माँ ने उसे पल्लू में समेटा निचोड़ दिया॥

खुद को भी अंदाज नहीं था, कि मुझे कुछ यू सुनाई दिया होगा॥ जब कन्धा दे रहा था माँ की अर्थी तो कहने लगी कि कन्धा किसी और को देदे थक गया होगा और कुछ खाया पिया भी है कि यूँ ही शमशान चला आया है और नालायक इतनी धूप हो रही नंगे पैर चला आया है।

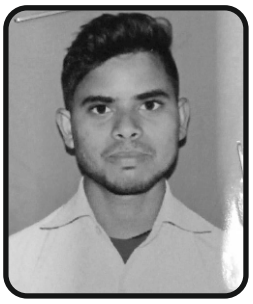

दीपू कुमार
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

कॉलेज लाइफ कविता

सब यारों के याराने दिल को फिर याद आये बह बीते पुराने लम्हें फिर याद आये... वह पहला दिन, वह पहली सी बातें आज वह दोस्त सब बिछडे तो लम्हें याद आये, देखा था जिन्हें कभी अजनबी सा हमने आज बही खास इतने की किसी को क्या बताये... वो यारो की महफिल, वो किताबों के ढेर वो रातों को रतजगे, वो क्लास रुम में सब ढेर देखा आज उस क्लास रूम की तरफ तो वह दोस्त मुस्कुराते बड़े याद आये.... अब यही कुछ दिन है, कुछ दिन की सोहबत बिछड़ेंगे सब ऐसे की हर मुस्कान पर याद आये..... कोई इस शहर कोई इस शहर, कोई इस गली, कोई उस गली, निकलेंगे इस राह से, वो राहगीर याद आये, दिल टूटा यह सोचकर, कितनों को आखिरी दफा देखेंगे वह बात दिल पे छुयी, के जहाकाम आर–पार दिखाई आये..... हुए गले मिलकर जुदा, किया वो वादा अब रहेंगे हमेशा यहाँ आँखे नम हुई, तो चुप करते नजर आये... यही तो जिन्दगी है जो आगे बड़ी अपने मुकाम से शुरूआत है अभी, न जाने आगे कितनो के जाने आये.....

गजब परिवार

एक परिवार में 5 बहने थीं एक का नाम था – टूटी
दूसरी का नाम था – फटी
तीसरी का नाम था – फीकी
चौथी का नाम था – मरी
पाँचवी का नाम था – भूतनी
एक दिन उनके घर पर लड़की देखने के लिए मेहमान आये।
मम्मी ने पूछा, आप कुर्सी पर बैठेंगे या नीचे चटाई पर?
मेहमान – कुर्सी पर
मम्मी – टूटी!! कुर्सी लेकर आओ
मेहमान – नहीं नहीं हम चटाई पर बैठ जायेंगे
मम्मी – फटी!! चटाई लेकर आओ
मेहमान – रहने दीजिए, हम जमीन पर ही बैंठ जायेंगे (मेहमान जमीन पर बैठ गये)
मम्मी – आप चाय पीयेगें या दूध?
मेहमान – चाय
मम्मी – फीकी!! चाय लेकर आओ
मेहमान – नहीं नहीं, चाय रहने दो, हमें दूध ले आओ
मम्मी – मरी!! भेंस का दूध लेके आओ
मेहमान – रहने दीजिए हमें कुछ भी नहीं चाहिए सिर्फ लड़की दिखाइए
मम्मी – बेटियों!! भूतनी को लेकर आओ मेहमान – बेहोश!

स्वाति
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

अनमोल वचन

1. हर सपने को अपनी आँखो में रखो हर मंजिल को अपनी बाहों मे रखो, हर जीत है आपकी बस अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों मे रखो।

2. जो हो गया उसे सोचा नही करते जो मिल गया उसे खोया नही करते हासिल उन्हें ही होती है सफलता, जो वक्त और हालात पर रोया नही करते।

3. बिना मेहनत के तख्तो ताज नहीं मिलते, ढूंढ लेते है अन्धेरों में मंजिल अपनी क्योंकि जुगनू कभी रोशनी के मोहताज नहीं होते।

4. परेशानियों से भागना आसान होता है हर मुश्किल जिंदगी में एक इम्तहान होता है, हिम्मत हारने वाले को कुछ नही मिलता क्योंकि जिंदगी में मुश्किलों से लड़ने वालों के कदमों में ही तो जहाँ होता है।

5. कुछ खास रिश्ते कुछ खास समय में परखे जाते है?
औलाद – बुढ़ापे में
दोस्त – मुसीबत में
पत्नी – गरीबी में
रिश्तेदार – जरूरत में

6. कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदल देते है और नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपना फैसला बदल देते है।

7. दुनिया का हर शौक पाला नही जाता काँच के खिलौने के उछाला नही जाता मेहनत करने से हो जाती है मुश्किलें आसान क्योंकि हर काम तकदीर पर टाला नहीं जाता।

8. घड़ी की फितरत भी अजीब है। हमेशा टिक–टिक करती है। मगर न खुद टिक है और न दूसरों को टिकने देती है।

9. हर दर्द की एक पहचान होती है, खुशी चंद लम्हों की मेहमान होती है, वही बदलते है रूख हवाओं का जिनके इरादों मे जान होती है।

10. भगवान हर एक के घर जाकर उसे प्रेम नहीं दे सकता इसलिये उसमे "माँ" बनाई है? इसी तरह हरएक के घर जाकर उसे सजा नही दे सकता इसलिये भगवान ने पत्नी बनाई है

लक्ष्य

मंजिल जिद्दी होती है।
हासिल कंहाँ नसीब से होती है।
मगर वहाँ तूफान भी हार जाते है।
कहाँ कस्तियां जिद पर होती है।
जीत निश्चित हो तो कायर भी जंग लड़ लेते है
बहादुर तो वो लोग हे जो हार निश्चित हो,
फिर भी मैदान नहीं छोड़ते।
भरोसा ईश्वर पर है तो जो लिखा है तकदीर में,
वो ही पाओगे, मगर
भरोसा अगर खुद पर है तो ''ईश्वर'' वह लिखेगा जो आप चाहोगे।

ममता
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

गीत

मुझे माँ से गिला, मिला ये ही सिला बेटिया क्यों परायी हैं, मेरी माँ, खेली कूदी मैं जिस आँगन में, वो भी अपना ऐसा पराया सा लागे। ऐसा दस्तूर क्यों है माँ, जोर किसका चले इसके आगे। एक को घर दिया एक को वर दिया, तेरी कैसी खुदाई है ॥ मुझे माँ से गिला..... जो भी माँगा मैंने बाबुल से दिया हस के मुझे बाबुल ने, प्यार इतना दिया है मुझको, क्या बयान में करूँ अपने मुख से । जिस घर में पली उस घर से ही माँ, यह कैसी बिदाई है॥ मुझे माँ से गिला..... अच्छा घर सुन्दर घर देखा माँ ने, क्षण में कर दिया उनके हवाले। जिंदगी भर का यह है बंधन, कह के समझाते हैं घर वाले। देते दिल से दुआ खुश रहना सदा, कैसी प्रीत निभायी है॥ मेरी माँ बराबर कोई नहीं मेरी माँ के बराबर कोई नहीं माँ, मेरी माँ, माँ, मेरी माँ।

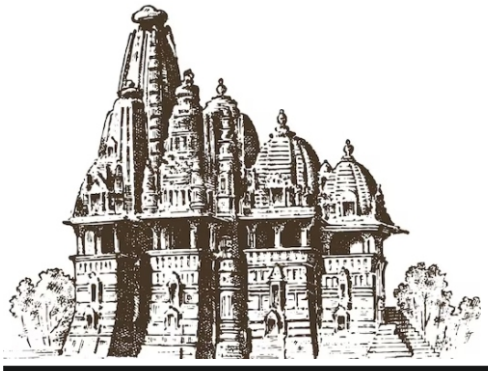

भजन

हे कालरात्रि हे कल्याणी, तेरा जोड़ धारा पर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं। तेरे मंदिरों में माई मैंने जोत क्या जलाई, हो गया मेरे घर में उजाला, क्या बताऊँ तेरी माया, जब जब भी मैं लड़खड़ाया, तूने दस भुजों से संभाला, खिल जाती है सूखी डाली, भर जाती है झोली खाली, तेरी ही मेहर है मेहरावाली, ममता से तेरी बढ़के मैया, मेरी तो धरोहर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं हे कालरात्रि हे कल्याणी, तेरा जोड़ धरा पर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं तेरी ममता से जो गहरा हो, ऐसा तो सागर कोई नहीं, ऊंचा है भवन ऊंचा मंदिर ऊंची है शान मैया तेरी, चरणों में झुके बादल भी तेरे पर्वत पे लगे शैया तेरी, हे कालरात्रि हे कल्याणी तेरा जोड धरा पर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, तेरी ममता से जो गहरा हो न, ऐसा तो सागर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं, जैसे धारा और नदियाँ, जैसे फूल और बगियाँ मेरे इतने ज्यादा पास है तू जब ना होगा तेरा आँचल, नैना मेरे होंगे जल–थल, जाएंगे कहाँ फिर मेरे आँसू, अंधियारों में चमक तारा, नाम तेरा जब भी है पुकारा सूरज भी यहां है चंदा भी तेरे जैसा उजागर कोई नहीं, मेरी माँ के बराबर कोई नहीं।

पूनम
कक्षा - बी.ए. द्वितीय वर्ष

शायरी

1. भरोसा खुद पर है, तो जो लिखा है, तकदीर में वही पाओगे, मगर भरोसा अगर, खुदा पर है तो खुदा वही लिखेगा जो आप चाहोगे

जय हिन्द जय भारत

2. भिगोकर खून में वर्दी कहानी दे गए, देश के लिए मोहब्बत की सच्ची निशानी दे गए, मनाते रह गए वेलेंटाइन-डे यहाँ तुम वहाँ कश्मीर में सैनिक अपनी जवानी दे गए। ''नमन वीर जवानों को''

3. मुझे हर उस बन्दे पर गर्व है जो आर्मी की तैयारी कर रहा है, क्यूंकि जिगरा चाहिये देश कि रक्षा करने के लिए।

जय हिन्द

1. मेरे जज्बातों से मेरा कमल इस कदर वाकिफ हो जाता है, मैं इश्क भी लिखना चाहूँ तो इन्कलाब लिख जाता है।

2. नीदं उड़ गयी यह सोच कर हमने क्या किया देश के लिए आज फिर सरहद पर बहा है खून मेरी नींद के लिए।

3. फौजी की मौत पर परिवार को दुःख कम और गर्व ज्यादा होता है, ऐसे सपुत्रो को जन्म देकर माँ की कोख भी धन्य हो जाता है।

4. कभी ठंड में ठिठुर कर देख लेना, कभी तपती धूप में जल के देख लेना, कैसे होती है हिफाजत मुल्क की, कभी सरहद पर चल के देख लेना।

5. दूध और खीर की बात करते हो, हम तुम्हे कुछ भी नहीं देंगे, कश्मीर की तरफ नजर भी उठाया, तो लाहौर भी छीन लेंगे।

6. जहां हम और तुम हिन्दू मुसलमान के फर्क में मर रहे है, कुछ लोग हम दोनों के खातिर सरहद की वर्षा में मरे रहे है।

7. जहर पिलाकर मजहब का, इन कश्मीरी परबानों को, भय और लालच दिखलाकर तुम भेज रहे नादानों को, खुले प्रशिक्षण खुले शस्त्र है खुली हुई शैतानी है, सारी दुनिया जान चुकी है ये हरकत पाकिस्तानी है।

8. जब हम तुम अपने महबूब की आखों में खोये थे जब हम तुम खोयी मोहब्बत के किस्सों में, सरहद पर कोई अपना वादा निभा रहा था, वो माँ की मोहब्बत का कर्ज चुका रहा था।

9. मिलते नहीं जो हक वो लिए जाते है, है आजाद हम पर गुलाम किये जाते है, उन सिपाहियों को शत-शत नमन करो, मौत के साए में जो जिए जाते है।

10. देश के प्रति अपना कर्ज निभायेंगे, जरूरत पड़ी तो लहू का एक एक कतरा देकर इस धरती माँ का कर्ज चुकायेंगे।

11. किसी गजरे की खुशबू को महकता छोड़ के आया हूँ मेरी नन्हीं सी चिड़िया को चहकता छोड़ के आया हूँ मुझे छाती से अपनी तू लगा लेना ए भारत माँ, मैं अपनी माँ की बाहों को तरसता छोड़ के आया हूँ।

इण्डियन आर्मी

जब हौसला बना लिया ऊँची उड़ान का, फिर देखना फिजूल है कद आसमान का जिन्दगी जीना आसान नहीं होता, बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता, जब तक न पड़े हथौड़े की चोट, पत्थर भी भगवान नहीं होते हैं। ख्वाव टूटे है मगर हौसले अभी जिंदा है, मै वो शक्स हूँ जिससे मुश्किलें भी शर्मिदा है॥

जीतूँगा मै, यह खुद से वादा करो, जितना सोचते हो, कोशिश उससे ज्यादा करो, प्रकदीर भी रुठे पर हिम्मत न टूटे, मजबूत इतना अपना इरादा करो, जीत के लिए जूनून चाहिए, आत्मविश्वास रंगों में खूब चाहिए ये आसमान भी आएगा जमी पर, बस इरादा में जीत की गूँज चाहिए, सफलता हाथों की लकीरों में नहीं,
माथे के पसीना में मिलती है।

कोमल रानी
कक्षा - बी.ए. द्वितीय वर्ष

मेरे प्रिय गुरूजन

शिक्षा से बड़ा कोई वरदान नहीं गुरू का आशीर्वाद मिले इससे वड़ा कोई सम्मान नहीं।

2. जल जाता है वो दिल की तरह कई जीवन रोशन कर जाता है, कुछ इसी तरह से हर गुरू अपना फर्ज निभाता है।

3. माँ बाप की मूरत है गुरू, कलयुग में भगवान की सूरत है गुरू। गुरू संस्कृति के पोषक हैं वे ही ज्ञान प्रदाता है। है साक्षरता के अग्रदूत वे, वे ही राष्ट्र निर्माता है।

4. गुरू आपके उपकार का कैसे चुकाऊँ मैं मोल, लाख कीमती धन भला, गुरू है मेरे अनमोल दिया ज्ञान का भण्डार हमें किया भविष्य के लिये तैयार हमे है आभारी उन गुरूओं के हम जो किया कृतज्ञ अपार हमें।

5. गिरते है जब हम तो उठाते है शिक्षक जीवन की

मोटिवेशन शायरी

1. जमीर जिंदा रख कबीर जिंदा रख, सुल्तान भी वन जाए तो दिल में फकीर जिंदा रख, हौसले के तरकश में कोशिश का वो तीर जिंदा रख, हार जा चाहे जिन्दगी में सब कुछ मगर फिर जीतने की उम्मीद जिन्दा रख।

2. जो आज सपनों में है, कल को हकीकत में भी होगा, अगर करोंगे मेहनत तो जो आज औकात में नहीं, कल वों जेब में होगा।

3. ये मंजिले बड़ी जिद्दी होती है हासिल कहां नसीब से होती है मगर वहां तूफान भी हार जाते है जहां कश्तियाँ जिद्द पर होती है।

4. ना संघर्ष न तकलीफ तो क्या मजा जीने में, बड़े-बडे तूफान थम जाते है जब आग लगी हो सीने में, जिन्दगी में चौके लगाने के लिये मौके का इंतजार मत कीजिए, खुद मौका बनाइए और चौका लगाइए।

6. जुनून - आपसे वो करवाता है, जो आप नहीं कर सकते। हौसला- आपसे वो करवाता है, जो आप करना चाहते है। अनुभव - आपसे वो करवाता है, जो आपको करना चाहिये।

7. कौन कहता है लड़कियाँ बस पैर से स्कूटी रोकना जानती है, ये नये भारत की बेटी है जनाव, जो हवा में दुश्मन को रौंदना भी जानती है।

कोमल रानी
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

8. फौलादी जिस्म नहीं, हौसले रखती हूँ मैं नारी हूँ, खुद को देश में कुरबाँ करती हूँ मेरे हाथ में कंगन नहीं, बन्दूक थमा कर तो देख, मेरे जिस्म पे साड़ी नहीं, खाकी बर्दी लगा कर तो देख, दूर्गा, काली तू देखेगा धरती पर ही बस एक बार मेरी भारत माँ और आँख उठा कर तो देख।

9. काजल कंगन से परे मेरे भी कुछ ख्वाव है दिल तिरंगे की आस में बेताव है बाफिक हूँ लडकियों के दायरो से मगर वतन से मोहब्बत बेहिसाव है। जेहन लड़की का जरूर दिया होगा खुदा ने बरखुरदार पर दिल गलती से फौजी का डाल दिया।

10. बेटी हुँ हिन्दुस्तान की समझना किसी से कम नहीं दिल में है बतन की मोहब्बत कोमल हूँ कमजोर नहीं– जय हिन्द।

11. बेटी को चाँद जैसा मत बनाओ कि हर कोई घूर कर देखे बेटी को सूरज जैसा बनाओ ताकी घूरने से पहले नजर झुकजाए।

देश के वीर जवान

1. आजादी की कभी शाम न होने देंगे शहीदों की कुर्बानी बदनाम न होने देगे बची है लहू की एक बूँद भी रगो में, तब तक भारत माता का आँचल नीलाम न होने देंगे।

2. सरहद पर गिरने वाला हर एक जिस्म नूरानी था मरते–मरते दस मार गिराया हो, वो खून हिन्दुस्तानी था।

3. कभी ठंड में ठिठुर कर देख लेना, कभी तपती धूप में जल के देख लेना कैसे होती है हिफाजत मुल्क की कभी सरहद पर चल के देख लेना।

4. बस ये बात हवाओं को बताये रखना रोशनी होगी चिरागों को जलाये रखना, लहू देकर जिसकी हिफाजत की शहीदों ने उस तिरंगे को सदा दिल में बसाये रखना।

5. करीब मुल्क के आओ, तो कोई बात बने बुझी मसाल को जलाओं तो कोई बात बने सूख गया है जो लहू शहीदों का, उसमें, अपना लहू मिलाओ तो कोई बात बने।

6. दे सलामी इस तिंरगे को जिस से तेरी शान है सर हमेशा ऊँचा रखना इसका जब तक दिल में जान है।

7. आज तिरंगा फहराता है अपनी पूरी शान से, हमे मिली आजादी बीर शहीदो के बलिदान से।

8. मुझे हर उस बन्दे पर गर्व है, जो आर्मी की तैयारी कर रहा है। क्योंकि जिगरा चाहिये देश की रक्षा करने के लिये।

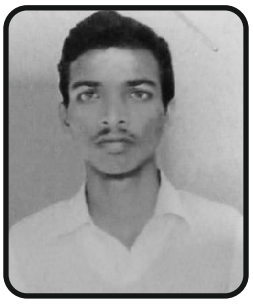

विनीत कुमार
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षा

अंधकार को दूर कर जो प्रकाश फैला दे वुझी हुई आश में विश्वास जो जगा दे।
जब लगे नामुमकिन उसे मुमकिन बनाने का पथ जो दिखा दे वो है।
शिक्षा हो जो कोई असभ्य, उसे सभ्यता का पाठ पढ़ा दे..
अज्ञानी के मन में जो ज्ञान का दीप जला दे...
अच्छे और बुरे में अन्तर करना जो सिखादे हर दर्द की दवा जो बता दे वो है।
शिक्षा वस्तु की सही उपयोगिता जो समझाए दुगर्म मार्ग को सरल जो वनाए चकाचौंध और वास्तविकता में अन्तर जो दिखाए वो है।
शिक्षा जो न होगा शिक्षित समाज हमारा मुश्किल हो जायेगा सबका गुजारा–॥
इसानियत और पशुता के बीच का अंतर है शिक्षा शांति, सुकुन और खुशियों का अन्तर है।
शिक्षा अंधविश्वास, भेदभाव, छुआछूत दूर भगाने का मन्तर है शिक्षा जहाँ भी जलेगी ह।
शिक्षा की चिंगारी नकारात्मकता वहाँ से स्वतः ही हार जायेगी जिस समाज में होंगे।
शिक्षित सभी नर–नारी सफलता, समृद्धि खुद बनेंगे इनके पुजारी॥ इसलिए आओ शिक्षा को समझें हम आओ पूरे मानव समाज को शिक्षित करे हम॥

शायरी

हौसला कम न होगा, तेरा तूफानों के सामने, मेहनते को इबादत में बदल कर तो देख, खुद ब खुद हल होंगी।
जिन्दगी की मुश्किलें, बस खामोशी को सवालों में बदल कर तो देख पसीने की स्याही से जोलिखते हैं।
इरादों को उसके मुक्कदर के पन्ने कभी कोरे नहीं होते...
टूटने लगे होंसले तो ये याद रखना विना मेहनत के तख्तो ताज नहीं मिलते, जीतेंगे हम ये खुद से वादा करो, कोशिश हमेशा ज्यादा करो....
भाग्य के दरवाजे पर सर पीटने से बेहतर कर्म का तूफान पैदा करो सारे दरबाजे खुल जायेंगे।

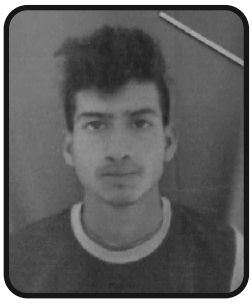

कुलदीप कुमार
कक्षा – बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

देश भक्ति डॉयलॉग

1. हम तो किसी दूसरे की धरती पर नजर भी नहीं डालते, लेकिन इतने नालायक बच्चे भी नहीं है कि कोई हमारी धरती माँ पर नजर डाले और हम चुपचाप देखते रहे।
2. लिख रहा हुँ मैं अंजाम जिसका कल आगाज आएगा मेरे लहू कर हर कतरा इंकलाब लाएगा।
3. किसी गजरे की खुशबू को महकता छोड आया हूँ मेरी नन्हीं सी चिडियाँ को चहकता छोड आया हूँ मुझे छाती से अपनी तू लगा लेना ऐ भारत माँ, मैं अपनी माँ की बाहो को तरसता छोड़ आया हूँ।
4. जमाने भर में मिलते है आशिक कई मगर वतन से खूबसूरत कोई सनम नहीं होता, नोटो में भी लिपट कर, सोने में सिमटकर मरे है कई, मगर तिरंगे से खूबसूरत, कोई कफन नहीं होता।
5. मरने का कोई गम नहीं, लेकिन ये खुदा जिस मिटटी में मिलूँ वो मिटटी हिन्दुस्तान की हो।
6. गीले चावल में शक्कर क्या गिरी, तुम भिखारी खीर समझ वैठे, चंद कुत्तों ने पाकिस्तान जिन्दाबाद क्या बोला तुम कश्मीर को अपने बाप की जागीर समझ बैठे।

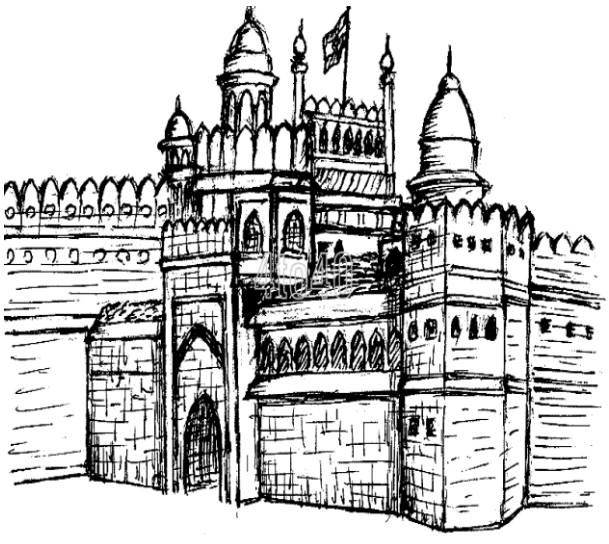

निकेता
कक्षा – बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

बेटियाँ

भाई की लाड़ली है, और है हर फिक्र से अनजान माँ का सपना और है, पिता का अभिमान पर क्या जानते है आप की नन्हीं सी इन परियों की एक दायरे से बाहर कभी उड़ान नहीं होती और जितना सोचते हैं हम लड़कियों की जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती।

जन्म लेते ही माँ इनके शादी, के गहने जुटाने लगती है क्या सही है क्या गलत हर बात, पर समझाने लगती है, देखो तुम लड़की हो अपना ध्यान रखना, जमाने को बदलना मुमकिन नहीं इसलिए कपड़ों का खास खयाल रखना सुनो किसी की बातों मे मत आना, और कुछ भी गलत लगे तो सबसे पहले आकर मुझे बताना जमाने के साथ चलना इन्हें बेशक सिखाया जाता है।

पर साथ ही एक दायरा भी समझाया जाता है खुद की ही जन्मी दुनिया में खुद, ही मेहफूज नहीं होती और जितना सोचते है हम, लड़कियो की जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती, बचपन से ही कभी रूप, कभी रंग, कभी व्यवहार को लेकर टोकी जाती है तुम अकेले कैसे करोगी, कहा रहोगी. के न जाने कितने अफसरों से रोकी जाती है कहने को लड़को के बराबर है, आज पर मौका मिलते ही आँखे इनपे, ही सकी जाती है। कभी जन्म से पहले कभी हवस का शिकार वन फिर कूड़े मे फेंकी जाती है।

गलतियां कई नजर अंदाज करती है. बेशक पर नजरिये से कभी ये किसी के अंजान नही होती और जितना सोचते हैं हम लड़कियों की जिन्दगी उतनी आसान नही होती।

एक घर मे बचपन बीते और दूसरे, में जीवन विताना पड़ता है माँ, भाई, वहन, पापा का प्यार मानो एकदिन मे भूलना पड़ता है। एक हाथ से कई रिश्ते छूटे और दूसरा हाथ कई रिश्तों के लिए बढ़ाना पड़ता है।

कई वार मन मिले न मिले पर उम्र भर वेमन ही हर बंधन निभाना पड़ता है।

किसी एक शख्स की खातिर ये अपनी पूरी जिन्दगी बदल लेती है, फिर भी इनकी उम्रभर अपनी कोई अलग पहचान नही होती, और जितना सोचते हैं लड़कियों की जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती।

बात बात पे आँखे इनकी गीली होती है। बेवजह बेतुकी बातों पर ये अक्सर रोती है, हाँ को ना और ना को हाँ कहती है मुँह से कुछ कहे ना कहे पर वात सारी मनवाती है।

बात ये खुद की अपने तक रख नही पाती है वस तुझे बता रही हूँ किसी को कहना मत कह फिर सबको बताती है।

आदतों में गलतियाँ कई शुमार है बेशक पर नियत इनकी कभी के बेईमान नही होती और जितना सोचते है हम लड़कियों की जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती। साल मे सेकड़ों बार इन्हे देवी बना पूजा जाता है फिर महीने के उन दिनों मे ना जाने क्यूं अलग सोचा जाता है बहुत से रिवाज बने है इन दिनों के लिए पर अफसोस इस दर्द पर किसी का ध्यान नही जाता हैं।

लड़की है ठीक से काम ना कर पायेगी कभी बीमारी कभी फैमिली तो कभी कुछ और बहाना बनाएगी भगवान का दिया हर दर्द सराखों पर, पर जमाने तेरी ये सोच बर्दाश्त नहीं होती और जितना सोचते है हम लड़कियो की जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती।

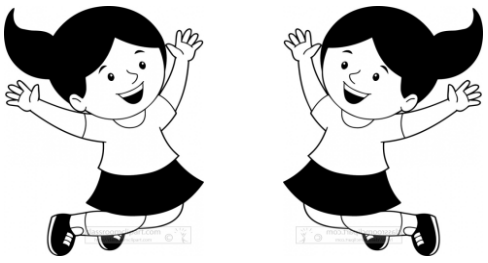

ज्योति पाल
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

बचपन

एक बचपन का जमाना था !
जिसमें खुशियों का खजाना था !
चाहत चाँद को पाने की थी।
पर दिल तितली का दीवाना था !!
खबर ना थी कुछ सुबह की !
ना शाम का ठिकाना था।
थक हार के आना स्कूल से !
पर खेलने भी जाना था !!
परियों का फसाना था !
बारिश में कागज की कश्ती थी।
हर मौसम सुहाना था !
हर खेल में साथी थे ।
हर रिश्ता निभाना था ॥
गम की जुबां ना होती थी।
ना जख्मों का पैमाना था।
रोने की वजह ना थी।
ना हँसने का बहाना था ॥
क्यूँ हो गये हम इतने बड़े इससे अच्छा तो वो
बचपन का जमाना था !!

मत परवाह कर उनकी जो आज देते हैं ताना,
झुका देंगे ये सर जब आएगा तेरा जमाना,
लहरें बन जाए तूफान कश्ती का काम है बहना,
कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना!

जिन्दगी

खुश रह कर जिओ क्योंकि रोज शाम सिर्फ सूरज ही नहीं ढलता बल्कि आपकी अनमोल जिन्दगी भी ढलती हैं!

मुस्कुराओ क्या गम है, जिंदगी में टेंशन किसको कम है,
अच्छा या बुरा तो केवल भ्रम हैं, जिंदगी का नाम ही.....
कभी खुशी कभी गम है !

Time is most important in your life because everything is a return but time is not return-

जीवन उसी का मस्त है, जो स्वयं के कार्य में व्यस्त है,
परेशान वही है जो दूसरों की खुशियों से त्रस्त है

ज्योति वर्मा
कक्षा – बी.ए. द्वितीय वर्ष

सरस्वती वन्दना

हे ज्ञान दायिनी माँ हम शीश झुकाते हैं
शतवार नमन तुमको हम पुष्प चढ़ाते हैं।
हे .....।
बुद्धि का वर दो माँ बुद्धि की दाता हो
हम बच्चे है तेरे तु जग की विधाता है
यह प्यार न टूटे माँ यह विनय सुनाते हैं।
हे .....।
वह ज्ञान हमें दो माँ सारा जग मुस्काये
वह ज्ञान का दीप जलादो अज्ञान न रूक पाये।
अज्ञान हटा दो माँ सुविचार चाहते हैं।
हे .....।
कृपा माँ तुम कर दो सहभाग यह चाहते है।
सहज्ञान जगा दो माँ दुर्भावि उखड़ आये
अन्धकार मिटा दो माँ सहभाव चाहते है।
हे .....।

मुझको मेरा हक दो

मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी, लेने दो खुली हवा में सांसे बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊंगी मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी, उड़ने दो किसी पतंग के जैसे आसमान को हूँ कर दिखलाऊँगी। क्या डरते हो हैवानी दुनिया से अकेली सब पर भारी पड़जाऊँगी मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी, माना डगर कठिन है मंजिल तक फिर भी जाऊँगी मुझ पर करो भरोसा तुम कभी न दु:ख पहुँचाऊँगी। मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी, मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी लेने दों खुली हवा में सांसे, बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊंगी मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी। उड़ने दो किसी पतंग के जैसे आसमान को हूँ कर दिखलाऊँगी। क्या डरते हो हैवानी दुनिया से, अकेली सब पर भारी पड़जाऊँगी मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी। माना डगर कठिन है मंजिल तक फिर भी जाऊँगी, मुझ पर करो भरोसा तुम कभी न दु:ख पहुचाऊँगी। मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी। करो हौसले मेरे बुलंद तुम अधुरे सपने पूर कर दिखलाऊँगी मत आंको कम मेरी ताकत, संतान का हर फर्ज निभाऊँगी मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी, समझा देना माता मेरी को, जिसने नारी का हर दु:ख झेला हैं रखे हौसला अब दिन वो दूर नहीं जब तुम दोनों का सम्मान बढ़ाऊँगी मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी। आएगा कभी बुरा वक्त भी हर सुख दु:ख में, साथ आऊँगी नहीं बनूंगी कमजोर कड़ी में अपने घर की ताकत बन जाऊँगी। मेरा मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी, शान हूँ अपने घर की कभी न नीचा दिखलाऊँगी, खेले अगर कोई मेरी आन से रूप दुर्गा का भर आऊँगी। मुझको मेरा हक दो पापा बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी। लेने दो खुली हवा में सांसे, बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊँगी।

ऊँची सोच

पैर की मोच और छोटी सोच हमें आगे नहीं बढ़ने देती टूटी कलम ओर औरों से जलन खुद का भाग्य लिखने नहीं देती। काम का आलस और पैसों का लालच हमें महान बनने नही देती अपना मजहब ऊँचा और गैरों का ओठा, ये सोच हमें इन्सान बनने नहीं देती। दुनिया में सब चीज मिल जाती है। केवल अपनी गलती नहीं मिलती है भगवान से वरदान माँगा कि दुश्मनों से पीछा छुड़वा दो अचानक दोस्त कम हो गए। जितनी भीड़ रही जमाने में लोग उतने ही अकेले होते जा रहे हैं। इस दुनिया के लोग भी कितने अजीव है ना सारे खिलौने छोड कर जज्बातों से खेलते है। किनारे पर तैरने बाली लाश को देखकर ये समझ आया, बोझ शरीर का नहीं साँसों का था। तारीख हजार साल में बस इतनी सी बदलती है। तब दौर पत्थर का था अब लोग पत्थर के है। सफर का अच्छा हो तो साथ में सामान कम रखिए तजुर्बा है मेरा मिट्टी की पकड़ मजबूत होती हैं संगमरमर हो तो पर तो हमने पाँव फिसलते देखे हैं। पानी मर्यादा तोड़े तो सर्वनाश इसलिए हमेशा अपनी वाणी पर सयंम रखो निखर कर बिखर जाये वो कर्तव्य है, और जो बिखर कर निखर जाए वो व्यक्तित्व है नाम और बदनाम में क्या फर्क है? नाम खुद कमाना पड़ता है। बदनामी आपको कमा के देते हैं।

साधना यादव
कक्षा – बी.एस.सी प्रथम वर्ष

बेटी की पाती माँ के नाम

माँ मैने अभी–अभी एक सनसनी खोज–खोज सुनी है, मैं जानती हूँ कि आपको मेरे होने का पता चल गया है और आप मुझे अपने से अलग कर देना चाहती हो माँ यह खबर सुनकर में सिर से पाँव तक दहल गयी हूँ माँ मेरी प्यारी माँ, मैं जानती हूँ तुम मुझे इसलिए रखना नहीं चाहती कि तुम में तुम लोगों के ऊपर बोझ बनूंगी मेरी करुणामियी माँ मुझे आने से अलग मत कर मत लाकर देना मुझे गुड़िया खिलौना में भईया के टूटे पड़े खिलौना से ही अपना मन बहला लूंगी मत लाकर देना मुझे नयी किताबे में भईया की पुरानी किताबों से ही आगे पढ़–लिख जाऊँगी मत लाकर देना मुझे नये कपड़े में दीदी के पुराने कपड़ो से अपना तन ढक लूँगी। जब दीदी की पुरानी पायलों से छम–छम करती हुई तुम्हारे ऑगन में घूमूँगी तो सारा घर चहक उठेगा जब पापा शाम को थककर घर आयेगे तो उनके पैर दबाऊँगी और उनके गले से लिपटकर उनको खूब हसाऊँगी। मेरी शादी की चिन्ता भी न करे में बड़ी होकर अपने पैरों पर खड़ी होकर कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, किरन वेदी, लता मंगेशकर, इन्द्रागाँधी, सरोज नायडू, झाँसी की रानी आदि शीर्षस्थ महिलाओं की तरह आप लोगो का नाम रोशन करुगी और बुढ़ापे का सहारा बनूँगी मेरी ममतामयी माँ इन्ही सब चिन्ताओं को लेकर ही तुम मुझे मरवा देना चाहती हो ना माँ मेरे हाथ अभी इतने छोटे और मुलायम है कि डॉक्टर की क्लीनिक तक जाते हुए तुम्हारा आँचल खीचकर रोक भी नहीं सकते माँ तुम सोच भी नही सकती हो। कि जब डॉक्टर के औजार मेरे नाजुक बदन को काट–काट कर तुम्हारी कोख से अलग करेंगे तो मुझे कितना दर्द होगा। में तुम्हारे अंदर से ऐसे फिसल जाऊँगी जैसे गीले हाथों से साबुन की डिबिया माँ तुम अपनी लाडली, दुलारी, फूल सी बिटियाँ के साथ ऐसा कैसे कर सकती हो इसलिए मैं तुम्हें यह पाती लिख रही हूँ फिर भी तुम मुझे अपने पास रखना नहीं चाहती हो तो ठीक है मैं भगवान से कहूँगी कि वो मेरे पापा और मम्मी के इस पाप का फल मुझे दें।

कुशाग्र सक्सेना
कक्षा – बी.ए. प्रथम वर्ष

''माँ''

माँ ना होती तो वफा कौन करेगा, ममता का हक भी कौन अदा करेगा रब हर एक माँ को सलामत रखना, वरना हमारे लिए दुआ कौन करेगा।

ये जो सख्त रास्तो में भी आसान सफर लगता है, ये मुझ को माँ की दुआओं का असर लगता है, हमारे कुछ गुनाहों की सजा भी साथ चलती है, हम अब तन्हा नहीं चलते दवा भी साथ चलती है, अभी जिन्दा है, माँ मेरी मुझे कुछ भी नही होगा, मैं जब घर से निकलता हूँ माँ की दुआ भी साथ चलती हैं माँ की एक दुआ जिन्दगी देगी, खुद रोएगी मगर तुम्हें हंसा देगी.... कभी भूल के भी ना माँ को रुलाना, एक छोटी सी गलती पूरा अर्श हिला देगी. ... माँ तेरी याद सताती है, मेरे पास आ जाओ, थक गया हूँ मुझे अपने आँचल मे सुलाओं, उँगलियाँ फेर कर बालों में मेरे, एक बार फिर से बचपन की लोरियाँ सुनाओ, न जाने क्यों आज अपना ही घर मुझे अंजान सा लगता है, तेरे जाने के बाद ये माँ घर – घर नही खाली मकान सा लगता है।

चिराग सक्सेना
कक्षा - बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

मेरे पापा

मेरे पापा की तो बात ही कुछ निराली है।
पापा के राज में हर दिन मनती दीवाली है।
एक हाथ फैलाकर मांगू तो .....
दोनों हाथ फैलाकर खुशियां देते है।
मेरे पापा तो हरदम बच्चों की फिक्र में रहते है।
अपने हिस्से की चीज जब तक
सब में बांट देते नहीं .....
मेरे पापा तब तक खाते नहीं .....
बच्चे जब तक चैन से सो ना जाए,
मेरे पापा रात को सोते नहीं ....।
सही राह पर चलना सिखाया है,
इस फरेबी दुनिया से कैसे बचना है जनाब .....
यह मुझे मेरे पापा ने ही सिखाया है।

ख्यालों में भी मेरा ख्याल रखते हैं,
मेरे हर दर्द का अपनी बाँहो में इलाज रखते हैं,
खरोंच मेरी एक, उन्हें कई रातें जगा जाती है.....
पापा भी ना,
दिल अपने पास और धड़कने .....
मेरे होठों की मुस्कान में रखते हैं॥
हम पानी से नहाते है,
वो पसीने से नहाते हैं,
देखकर मुस्कान हमारे चेहरे की
वो अपना हर दर्द भूल जाता हैं
मुकम्मल हो हमारे सपने,
इसलिए वो हर रोज काम पे जाता है
वो हस्ती कोई आम नहीं, जो पिता कहलाता है।

Parents

* Parents are the most beautiful and valuable god given gifts in our lives.

* They play an immense role in the physical, mental, social, educational, and financial development.

* Parents teach and guide us on the right path and differentiate between the Right and wrong things in life.

* Grandparents are also Considered as parents in our life.

* They listen to our problems and help us make the right life choices.

जागृति
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ पर शायरी

1. तेरे ही आँचल में निकला बचपन तुझसे ही जुड़ी मेरी हर धड़कन कहने को तो सब माँ कहते लेकिन मेरे लिये है तू भगवान।
2. हजारों गम हो फिर भी में खुशी से फूल जाती हूँ जब हँसती है मेरी माँ तो में हर गम भूल जाती हूँ।
3. बिना बताए वो हर बात जान लेती है माँ तो माँ ही है मुस्कुराटों में गम पहचान लेती है।
4. वह माँ ही है जिसके रहते जिन्दगी में कोई गम नहीं होता दुनिया साथ दे या ना दे पर माँ का प्यार कभी कम नहीं होता।

शायरी

1. दोस्ती हर चेहरे की मीठी मुस्कान होती है दोस्ती ही सुख दुख की पहचान होती है। रूठ भी गए हम तो दिल पर मत लेना क्योंकि दोस्ती जरा सी नादान होती है।
2. हर खुशी दिल के करीब नही होती जिन्दगी गमो से दूर नहीं होती, ऐ दोस्त इसी दोस्ती को सजाकर रखना ऐसी दोस्ती हर किसी के नसीब नहीं होती।
3. जिन्दगी न काम हसरत से जल जाते है हम चिराग वन के शमा की तरह जल जाते है, जब आता है हमारा नाम आपके नाम के साथ, जाने क्यो लोग हमारे नाम से जल जाते है।
4. तकदीर लिखने वाले एक एहसान कर दे मेरे दोस्त की तकदीर में एक और मुस्कान लिख दे, न मिले कभी दर्द उनको, तू चाहे तो उनकी किस्मत में मेरी जान लिखदे।
5. किसी को पलको में न बसाओ, पलको में सिर्फ सपने बसते है, अगर बसाना है, तो दिल में बसाओ, क्योंकि दिल में सिर्फ अपने बसते हैं।

प्रिंयका
कक्षा – एम.ए. द्वितीय वर्ष

बेटियां

कही पढ़ा था कि हर व्यक्ति के 100 भाग्य होते हैं? पर उन 100 भाग्यों में से जब 1 भाग्य अच्छा होता हैं। तब उन के घर पर लड़के का जन्म होता हैं। जब 100 के भाग्य अच्छे होते है तब उन के घर पर लड़की का जन्म होता हैं।
इसीलिए ऐसा कहा जाता हैं कि लड़का तो भाग्य से होता हैं लेकिन लड़की सौभाग्य से होती हैं। पराया धन होकर भी कभी पराई नहीं होती। शायद इसीलिए किसी बाप से हंसकर बेटी की विदाई नहीं होती!!

सोनी गौतम
कक्षा - एम.ए. द्वितीय वर्ष

हे शारदे माँ - हे शारदे माँ

हे शारदे माँ हे शारदे माँ अज्ञानता से, हमें तार दे माँ तू स्वर की देवी हैं संगीत तुझमें हर शब्द तेरा हैं हर गीत तुझमें हम हैं अकेले हम हैं अधूरे हे शारदे.....।
माँ तू श्वेतवर्ण कमल पर विराजे, हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे मन से हमारे मिटा दे अंधेरे हमको उजालों का संसार दे माँ हे शारदे माँ, हे शारदे.....।
माँ ऋषियों ने समझी मुनियों ने जानी वेदो की भाषा पुराणों की वाणी हम भी समझे हम भी जाने विद्या का हमको अधिकार दे माँ हे शारदे माँ, हे शारदे माँ!

मेरा भारत

मेरे देश के दिल में झांकों तो, मेरा देश आज मुस्कराया हैं। एक नया सवेरा लाना हैं। मेरे देश ने हैं संकल्प किया।अब रात अंधेरी और नहीं जिद पर हैं आज हर एक दिया एक सच्चा .....मुस्काया?

जब कदमों में दृढ निश्चय हैं कंकर- पत्थर पिस जाते हैं जब देश-प्रेम हो आँखों में काँटे भी शीश झुकाते हैं अब सच्चा मोती पाया है एक सच्चा .....मुस्काया हैं,
कर चुका फैसला देश मेरा अब तो मंजिल तक जाना है, जो विष हैं आज हवाओं में उसे जड़ से आज मिटाना हैं, एक प्रण हैं। जो लहराया हैं। एक सच्चा .....मुस्काया हैं,

आने वाला कल पूछेगा हम गर्व से आगे आएगें हमने भी देश बनाया था, ये सीना तान बताएगें था देखों सूरज उग आया है, एक सच्चा कदम उठाया है, मेरा देश आज मुस्काया है।

शायरी

पत्थर को पीसकर कभी मैदा नहीं हुआ,
हमारे देश को जो झुका दे ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ।

फना होने की इजाजत ली नहीं जाती हैं,
ऐ वतन की मौहब्बत है, जनाब पूछकर की नहीं जाती,

मै भारत का तहे दिल से सम्मान करती हूँ,
यहाँ की चाँदनी मिट्टी का ही गुणगान करती।
में भारत का तहे दिल से सम्मान करती हूँ,
यहां की चांदनी मिट्टी कर ही गुणगान करती हूँ।
मुझे चिंता नहीं स्वर्ग जाकर मेक्ष पानी की तिरंगा हो,
कफन मेरा वस यही अरमान करती हूँ।

किसी को लगता हैं कि हिन्दू खतरे में हैं,
किसी को लगता हैं कि मुसलमान खतरें में हैं,
धर्म का चश्मा उतार कर देखों यारों,
पता चलेगा कि हमारा हिन्दुस्तान खतरे में हैं।

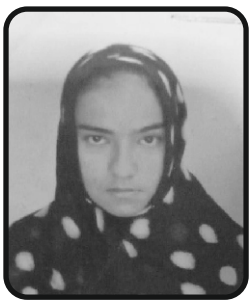

मुस्लिमा
कक्षा – बी.ए. तृतीय सेमिस्टर

गुरू और शिक्षा का महत्व

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरू आपने, जिन्हे गोविन्द दियो बताय॥
''जिस प्रकार बिन मछली तालाब अधूरा है''
''जिस प्रकार बिना खुशबु फूल अधूरी है''
''जिस प्रकार बिन माली बगीचा अधूरा है''
''जिस प्रकार बिन माँझी नाव अधूरा है''
''जिस प्रकार बिन भोजन जीवन अधूरा है''
''जिस प्रकार बिन शिक्षा के व्यक्ति अधूरा है''
''उसी प्रकार बिन गुरू के शिष्य अधूरा है।''
Personality of Teacher,
'Student and Education'

गुरू का महत्व

''नामुमकिन को मुमकिन बनाने का काम सिखलाता है गुरू, सब कुछ कर गुजरने का जज्बा सिखाता है गुरू, एक अच्छा इंसान बनाता है गुरू, छोटे बड़ो का अदब सिखाता है, गुरू शुरू से हमारी कमान पकड़कर उसे लगाम लगाता है गुरू, गुस्सा हो या हँसी मजाक, सबके द्वारा हमें बढ़ाना चाहता है गुरू, डर से डटकर सामना कराता है गुरू, कभी न डरने का जज्बा सिखाता है गुरू, अपनों के लिए कुछ कर गुजरने का नजरिया सिखाता है गुरू, मैं पायलेट हूँ, तो मेरा विमान है गुरू''।

चिराग पाठक
कक्षा – बी.कॉम प्रथम सेमिस्टर

कविता

हम वो परिंदे जो हारने के बाद भी उड़ान की हिम्मत रखते है।
1. हार–जीत तो जीवन के दो पहलू है। जीत के तो हर कोई मुस्कराता है जो हार के मुस्कराते है।
वो और लम्बी उड़ान के लिए तैयार हो जाते है। हम वो परिंदे जो हारने के बाद भी उड़ान की हिम्मत रखते है।
2. हार कर भी वो नहीं हारते है। जो हदय के उत्साह को नहीं मारते है।
जीत उनकी निश्चित होती है। जो मुसीबतों से डरना नहीं जानते है। हम वो परिंदे जो हारने के बाद भी उड़ान की हिम्मत रखते है।

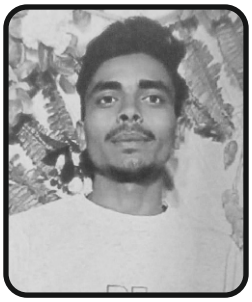

राजकुमार
कक्षा – एम.ए. प्रथम वर्ष

कविता

मुश्किल हो जब जान लगा दो, देश की खातिर शीश कटा दो।
वीर जवानों का मिलकर तुम, अपने दिल में मान बढा लो।
देश की खातिर मर मिट जायें, ऐसा जज्बा दिल में जगालो।
प्रगति अपनी अधर में अटकी, जात धरम का भेद मिटा दो।
घर घर शिक्षा अब पहुंचाकर, देश की अपनी शान बढा लो।
कर के सुरक्षित हर बेटी को, भारत माँ की लाज बचा लो।
दहेजप्रथा व्यापार हुआ है, बेटों का बाजार हटा लो।
रिश्वत खोरी फैल रही है, इस दीमक से देश बचा लो।
शाद कहे ये सबसे सुनो, तुम देश का गौरव मान बढ़ा लो।

New Education Policy - 2022

Recently, the National Education Policy (NEP) 2020 was announced by the Ministry of Education. The Policy is aimed at transforming the indian Education system to meet the needs of 21st century The new policy seeks rectification of poor literacy and numeracy outcomes associated with primary schools. Reduction in dropout levels in middle and secondary schools and adoption of the multi discipline nary approach in higher Education System.

Apart from this, the policy also focuses on early childhood care, restricting curriculm and pedagogy reforming assessments and exams, and investing in teacher training and broad basing their appraisal.

Though the NEP 2020 seeks to bring a holistic change in the education system of India. Its success depends on the will and way in which it will be implemented.

Thais, The New education policy (NEP) 2020, is a good policy as it aims at making the education system holistic, flexible, multi disciplinary aligned to the needs of the 21st Century and the 2030 Sustainable Development Goals. The Intent of policy seems to be ideal in many ways but it is the implementation where lies the to success.

मौसमी
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

1. अपनी जिन्दगी से कभी नाराज मत होना क्या पता आप जैसी जिन्दगी दूसरे लोगों का सपना हो।
2. बहुत मजबूत हो जाते है, वो लोग जो अंदर से टूट जाते है।
3. जिन्दगी को इतनी सस्ती मत बनाओ, दो कौड़ी के लोग खेल कर चले जाएं क्योंकि वो कोई भी चीज बेकार नहीं बनाता।
4. परखता रहा उम्र भर ताकत दवाओं की, दंग रह गया देखकर ताकत दुआओं की।
5. प्रभु कहते है तू सोने से पहले सबको माफ कर, मैं उठने से पहले तुझे माफ कर दूंगा।
6. अकेले रहना अच्छा है बजाय उनके साथ रहने के जिन्हें तुम्हारी कद्र नहीं।
7. जिन्दगी एक ऐसी किताब है, जिसके हजारों पन्ने अभी तक आपने नहीं पढ़े है।
8. किसी ने क्या खूब लिखा है मैं पसंद तो बहुत हूँ सबको, पर जब उनको मेरी जरूरत होती है तब कभी मैं अपनी हाथों के लकीरो में ना उलझा क्यूंकि मुझे पता था कि किस्मत का लिखा भी बदला जा सकता है।
9. दर दर भटक रही थी पर दर नहीं मिला उस माँ के चार बेटे है पर रहने को घर नहीं मिला।
10. जिन्दगी जीने के दो तरीके है, एक तो जो पसन्द है, उसे हासिल करो और दूसरा जो हासिल है, उसे तुम पसन्द करना सीख लो।
11. चीजों की कीमत मिलने से पहले होती है और इंसान की कीमत खोने के बाद।

प्रियंका
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

जिन्दगी का सच

जिन्दगी का तजुर्बा तो नहीं, पर इतना मालूम है। छोटा आदमी बड़े मौके पर काम आ जाता है, और बड़ा आदमी छोटी सी बात पर, औकात दिखा जाता हैं।

2. मिटटी का मटका और परिवार की कीमत सिर्फ बनाने वाले को ही पता होता है, तोड़ने वाले को नहीं!
3. नसीब हर किसी का अच्छा नहीं होता अपना नसीब खुद बनाना पड़ता है जो अपना नसीब बनाता है वही इतिहास रचता है।
4. कुछ रिश्ते खुदा बनाते है, कुछ रिश्ते लोग बनाते है पर दोस्त बिना रिश्ते के हर रिश्ते को निभाते है।
5. खुशबू की तरह मेरी सांसो में रहना, लहू बनके मेरी नस–नस में बहना, दोस्ती होती है रिश्तों का अनमोल गहना, इसलिए दोस्त को कभी अलविदा न कहना।
6. दिन बीत जाते है सुहानी यादें बनकर बातें रह जाती है, कहानी बनकर, पर दोस्त तो हमेशा दिल के करीब रहते है कभी मुस्कान तो कभी आँखों का पानी बनकर।

प्रभा मौर्य
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

किस्मत

जियो इतना की, जिन्दगी कम पड़ जाए हँसो इतना कि, रोना मुश्किल हो जाए किसी चीज को पाना तो, किस्मत की बात है मगर कोशिश इतनी करो, कि ईश्वर देने पर मजबूर हो जाए।

माँ का प्यार

दर्द सहती है सबसे जो और कौन हो सकती है, है बो माँ ही तो जो तड़पती है और दर्द सहती है। फिर हमें नई जिन्दगी देती है। कितनी प्यारी कितनी भोली॥ प्यार और ममता से भरी है उसकी झोली। त्याग बलिदान की यह मूर्ति॥ अमित प्रिय इसकी छवि। बरसता रहे माँ का प्यार।

दोस्ती के लिए

1. प्यार में भले ही जूनून है मगर दोस्ती में सुकुन है।
2. तेरी दोस्ती ने वहुत कुछ सिखा दिया मेरी खामोश दुनिया को जीना सिखा दिया। कर्जदार हूँ मैं उस खुदा का जिसने मुझे तेरे जैसे दोस्त से मिला दिया।
3. टीचर की डॉट से हो जाती थी ऑखे नम मिल जाते सारे दोस्त फिर क्या था कोई गम।
4. बात करने का मजा तो दोस्तो के साथ ही आता है जिसके साथ वोलने से पहले कुछ सोचना नहीं पड़ता।
5. ना तुम जाना ना हम दूर जायेगें अपने अपने, हिस्से की दोस्ती निभायेंगे।
6. दोस्त उसे वनाओ जो दिल से सच्चा हो उसे नहीं जो दिखने में अच्छा हों।
7. तू मुझे भूल जायेगी, तव भी मैं तुझे याद करूंगी। दोस्त हूँ मैं तेरी खुद से पहले तेरे लिए दुआ करूंगी।
8. आपके होठों पर सदा, खिलते गुलाब रहें खुदा न करे आप, कभी उदास रहे, हम आपके पास, चाहे रहे ना रहे आप जिन्हे चाहे वो सदा आपके पास रहें।
9. कौन कहता है कि दोस्तो जुदाई होगी, ये खबर किसी गैर ने उड़ाई होगी, शान से रहेगें, आप के दिल में इन्ही तीन सालो में, कुछ तो जगह वनाई होगी।

रीनू शाक्य
कक्षा – एम.ए. द्वितीय वर्ष

समाज का महत्व

जब इन्सान का जन्म धरती पर होता है तभी से उसका संबंध जुड़ जाता है, क्योंकि कोई भी इंसान
अकेले ही अपनी जिंदगी व्यतीत नहीं कर सकता है।

इंसान को जिंदगी में एक दूसरे की सहायता पड़ती है और इसके लिए समाज अथवा परिवार का होना बहुत ही जरूरी है क्योंकि परिवार से ही समाज और समाज से शहर और राष्ट्र का निर्माण होता है।

मनुष्य की कल्पना सामाजिक जीवन के बिना नही जा सकती है क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण विकास तभी हो जकता है जब वह समाज के साथ जुड़ा रहे। समाज ही वह चीज है जो मनुष्य को सारी सुख सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है जो उसके जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है।

जिस प्रकार से इंसानो को अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए समाज की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से समाज को भी अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इंसानो की आवश्यकता होती है ।

इंसानो की विभिन्न आवश्यकताओं का गठबन्धन होने से एक समाज का निर्माण होता है।

दोस्ती के लिए

1. प्यार में भले ही जूनून है मगर दोस्ती में सुकुन है।
2. तेरी दोस्ती ने वहुत कुछ सिखा दिया मेरी खामोश दुनिया को जीना सिखा दिया। कर्जदार हूँ मैं उस खुदा का जिसने मुझे तेरे जैसे दोस्त से मिला दिया।
3. टीचर की डॉट से हो जाती थी ऑखे नम मिल जाते सारे दोस्त फिर क्या था कोई गम।
4. बात करने का मजा तो दोस्तो के साथ ही आता है जिसके साथ वोलने से पहले कुछ सोचना नहीं पड़ता।
5. ना तुम जाना ना हम दूर जायेगें अपने अपने, हिस्से की दोस्ती निभायेंगे।
6. दोस्त उसे वनाओ जो दिल से सच्चा हो उसे नहीं जो दिखने में अच्छा हों।
7. तू मुझे भूल जायेगी, तव भी मैं तुझे याद करूंगी। दोस्त हूँ मैं तेरी खुद से पहले तेरे लिए दुआ करूंगी।
8. आपके होठों पर सदा, खिलते गुलाब रहें खुदा न करे आप, कभी उदास रहे, हम आपके पास, चाहे रहे ना रहे आप जिन्हे चाहे वो सदा आपके पास रहें।
9. कौन कहता है कि दोस्तो जुदाई होगी, ये खबर किसी गैर ने उड़ाई होगी, शान से रहेगें, आप के दिल में इन्ही तीन सालो में, कुछ तो जगह वनाई होगी।

महक
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

मोटिवेशन शब्द

वो सूर्य क्या जिसमें तपन ना हो, वो चाँद क्या जिसमें शीतलता ना हो, वो बरसात क्या जिसमें बिजली ना हो, वो बाग ही क्या जिसमें हरियाली ना हो, वो डाली क्या जिसमें काँटे ना हो, वो तथ्य क्या जिसमें तर्क न हो, वो वस्तु क्या जो संभव न हो, वो कहानी क्या जिसका अंत ना हो, वो कर्म क्या जिसमें लगन ना हो वो जन्म क्या जिसमें कोई लक्ष्य ना हो .....।

दोस्ती

1. ये दोस्ती का बधंन, भी कितना अजीब होता है
मिल जाये तो बाते लम्बी और बिछड़ जाये, तो यादे लम्बी।

2. जब मजिंल करीब हो तब मेहनत जबरदस्त करना
जीत निश्चित है तुम्हारी बस तुम अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहना।

3. कदम छोटे हो या बडे रूकने नहीं चाहिए। क्योंकि मजिल पाने के लिए चलते रहना बहुत जरूरी है। खुद को एक अच्छा इन्सान बना लीजिए। ताकि दुनिया से एक बुरा इंसान कम हो जाए।

4. पिता की मौजूदगी सूर्य की तरह होती है, रहता जरूर गर्म है, लेकिन न हो, तो अंधेरा छा जाता है।

5. जिस व्यक्ति को आप की कदर नहीं है। उसके पास खड़े रहने से अच्छा है कि अकेले ही रहा जाए।

6. विनम्र रहना, झुकना अच्छी बात है। लेकिन किसी की अकड़ के आगे बिल्कुल नहीं।

7. मंजिल चाहे कितनी भी ऊँची क्यों ना हो रास्ते तो हमेशा पैरो से ही शुरू होते है।

8. भले ही देर से, पर कुछ बनो जरूर क्योंकि वक्त के साथ लोग खैरियत नहीं हैसियत पूछते है .....।

डौली यादव
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

धन से

धन से पुस्तक मिलती है, किन्तु ज्ञान नहीं
धन से आभूषण मिलता है,
किन्तु रूप नहीं धन से सुख मिलता हैं किन्तु आनन्द नहीं धन से साथी मिलते है, किन्तु सच्चे मित्र नहीं धन से भोजन मिलता है किन्तु भूख नहीं धन से दवा मिलती है, किन्तु स्वास्थ्य नहीं धन से एकान्त मिलता है किन्तु शान्ति नहीं धन से बिस्तर मिलते है, किन्तु नींद नहीं।

दुनिया का सबसे वड़ा जेवर आपकी मेहनत जो हाथ सेवा के लिए उठते है वे प्रार्थना करते वाले होठों से अधिक पवित्र होते है स्वार्थ में अच्छाईयाँ ऐसे खो जाती है, जैसे समुन्द्र में नदियाँ!

नीति

सच्ची बात अच्छी नहीं लगती और अच्छी लगने वाली बात कभी सच्ची नहीं होती, अच्छाई कभी झगड़ा नहीं कराती और झगड़ा कभी अच्छा नहीं होता, बुद्धिमान कभी ज्यादा नहीं बोलते और ज्यादा बोलने वाले कभी बुद्धिमान नहीं होते।

अनमोल वचन

इस तरह न कमाओ की पाप हो जाए, इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए, इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए, इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए, इस तरह न सोचो कि चिंता हो जाए, सत्य से कमाया ''धन'' हर प्रकार से सुख देता है छल व कपट से कमाया ''धन'' दु:ख ही दु:ख देता है।

निकिता रानी
कक्षा – बी.ए. तृतीय वर्ष

एक माँ ही है जो

सारे दुखो को हर लेती है, बीमार रहते हुए भी सारे काम कर लेती है, लाख गलतियों को माफ कर देती है खुद की जान दांव पर रख कर जन्म देती है।

अपनी ख्वाहिशों को छोड कर अपने बच्चो की खुशियों को पूरा करने की दुआ करती है।

मेरे प्यारे प्यारे पापा

मेरे दिल में रहते पापा मेरे छोटी सी खुशी के लिए, सब कुछ सह जाते है पापा पूरी करते हर मेरी इच्छा उनके जैसा नहीं कोई अच्छा,मम्मी मेरी जब भी डाटें, मुझे दुलारते मेरे पापा मेरे प्यारे प्यारे पापा।

दोस्त की कविता

प्रेम और त्याग के धागे से जुड़ा, एक विश्वास है दोस्ती।
दुनिया के सभी रिश्तो में, सबसे खास है दोस्ती।
दिलो को जोड़ने वाला रिश्ता है, इसलिए खास है दोस्ती।

प्रियंका माहेश्वरी
कक्षा - बी.ए. तृतीय वर्ष

मिटा दो अंधकार

मुश्किल हो जब जान लगा लो,
देश की खातिर शीश कटा लो,
वीर जवानों का मिलकर तुम,
अपने दिल में मान बढ़ा लो।

देश की खातिर मर मिट जायें,
ऐसा जज्वा दिल में जगा लो,
प्रगति अपनी अधर में जगा लो,
जात धरम का भेद मिटा लो।

घर-घर शिक्षा अब पहुँचा कर,
देश की अपनी शान बढ़ा लो,
कर के सुरक्षित हर बेटी को,
भारत माँ की लाज बचा लो।

दहेजप्रथा व्यापार हुआ है,
बेटों का बाजार हटा लो,
रिश्वतखोरी फैल रही है,
इस दीमक से देश बचा लो।

'शाद' कहे ये सबसे सुनो तुम
देश का गौरव मान बढ़ा लो।

साक्षी
कक्षा - बी.ए. तृतीय वर्ष

अनमोल वचन

इज्जत भी मिलेगी दौलत भी मिलेगी, सेवा करो माँ बाप की जन्नत भी मिलेगी जिसके पास कुछ भी नहीं है उस पर, दुनिया हँसती है, जिसके पास सब कुछ है, उससे दुनिया जलती है। मेरे पास आप जैसे अनमोल रिश्ते है जिनके लिये दुनिया तरसती है। इतनी मे हरबानी मेरे ईश्वर बनाये रखना, जो रास्ता सही हो उसी पर चलाये रखना, न दुखे दिल किसी का मेरे शब्दों से इतनी कृपा मेरे ऊपर बनाये रखना। मेरी गलतियाँ मुझसे कहो दूसरो से नहीं क्योंकि सुधारना मुझे है दूसरों को नहीं। खुश हूँ और सबको खुश रखती हूँ, लापरवाह हूँ फिर भी सबकी परवाह करती हूँ। मालूम है, कोई मोल नहीं मेरा फिर भी अनमोल लोगों से रिश्ता रखती हूँ।

प्रेरक विचार

काम ऐसा करो कि पहचान न जाये, हर कदम ऐसा चलो कि निशान बन जाये, जिन्दगी तो हर कोई काट लेता है दोस्तो, जिन्दगी ऐसी जियो कि मिसाल बन जाये। ख्वाहिशों से नहीं गिरते फूल झोली में, कर्म की साख को हिलाना होगा, कुछ नहीं होगा कोसने से अंधेरे को, अपने हिस्से का दिया खुद ही जलाना होगा। ईश्वर वह नहीं देता जो हमको अच्छा लगता है। ईश्वर वह देता है, जो हमारे लिये अच्छा होता है।

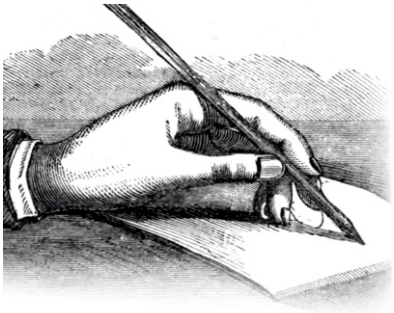

Deepak H Diwakar
Asst. Prof. (Commerce)
D.R.A Govt. (PG) College,
Bisauli, Badaun

"Digital Currency…The future's Currency"

Recently, The Reserve Bank of India (RBI) launched the first pilot of Digital Rupee-Retail segment (e-R) on December 01, 2022. The e-R pilot currently covers the five cities of Mumbai, New Delhi, Bengaluru, Bhubaneswar, and Chandigarh. The e-R is in the form of a digital token that represents legal tender. It is being issued in the same denominations that paper currency and coins are currently issued.

Digital currency is a form of currency that is available **only in digital or electronic form.** It is also called digital money, electronic money, electronic currency, or cybercast. It does not have physical attributes and is available only in digital form.

The transaction involving digital currencies are made **using computer or electronic wallets connected to the internet or designated networks.** Whereas, physical currencies, such as banknotes and minted coins, are tangible, meaning they have definite physical attributes and characteristics.

❖ Important features of Digital Currency :-

1. Digital currencies can be centralized or decentralized.
2. Digital currencies do not have physical attributes and are available only in Digital form.
3. Digital currencies transactions are made using computers or electronic wallets connected to the internet or designated networks.
4. Digital currencies have utility similar to physical currencies.

❖ Three types of Digital Currencies.

1. Cryptocurrencies:

Cryptocurrencies are digital currencies that use cryptography to secure and verify transactions in a network. Cryphotography is also used to manage and control the creation of such currencies.

Examples :- Bitcoin and Ethereum.

2. Virtual Currencies:

Virtual currencies are unregulated digital currencies controlled by developers or a founding organization consisting of various stakeholders involved in the process.

Example : Virtual currency is a gaming network token whose economics is defined and controlled by developers.

3. Central Bank Digital Currencies:

Central bank digital currencies (CBDCs) are regulated digital currencies issued by the central bank of a country. A CBDC can be a supplement or a replacement to traditional fiat currency. Unlike fiat currency, which exists in both physical and digital form, a CBDC exists purely in digital form.

Example :- Digital Rupee-Retail segment (e-R) of Reserve Bank of India.

Various countries such as England, Sweden, and Uruguay are considering plans to launch a digital version of their native fiat currencies.

❖ Advantages and Disadvantage of Digital Currencies.

1. Advantages

1. Faster transaction times & lower transaction costs.
2. No Printing and transportation Cost required.
3. Curb on money laundering and black money.
4. Make it easier to implement monetary and fiscal policy.
5. Offers greater privacy than other forms of currency.

2. Disadvantages

1. Can be difficult to store and use.
2. Can be hacked.
3. Can have volatile prices that result in lost value.
4. May not allow for irrevocability of transactions.
5. Still has limited acceptability.

Digital Currency

A currency or payment method that only exists in electronic form. It is intangible.

FAST
Automatic transactions. Much faster than other systems.

AFFORDABLE
Transaction charges much lower than credit cards, etc.

SECURE
Protection from hackers. Personal data often not needed.

GLOBAL
You can send money to anyone around the globe.

- ₹ RBI to introduce Digital Rupee using Blockchain and other technologies starting 2022-23
- ₹ This will lead to more efficient and cheaper currency management system
- ₹ It will also give boost to digital economy

@PIB_India @PIBHindi @pibindia @pibIndia PIBIndia @PIB_India @PIBHindi @PIBIndia

खेल आख्या 19वाँ (नवदश क्रीड़ा समारोह)

दिनांक 03/02/2023 को महाविद्यालय के क्रीड़ा परिसर में 19वें वार्षिक क्रीड़ा समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ0 हुकुम सिंह, महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 सपना भारती तथा विशिष्ट अतिथिगण श्रीमती कृष्णा गुप्ता, श्रीमती सविता शर्मा एवं श्रीमती हसमुखी मौर्य के कर कमलों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात क्रीड़ा परिसर में छात्र–छात्राओं एवं मुख्य अतिथिगणों एवं महाविद्यालय के समस्त स्टॉफ द्वारा मार्च पास्ट किया गया।। महाविद्यालय में पधारी कृष्णा गुप्ता, सविता शर्मा एवं हसमुखी मौर्य ने महाविद्यालय के समस्त खेल प्रतिभागियों को खेल की महत्वता व खेल से सम्बन्धी अनुशासन से अवगत कराया व उनके उज्ज्वल भविष्य के लिये कामना की। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो0 डॉ0 सपना भारती द्वारा छात्र–छात्राओं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए खेल की महत्वता को बताया तथा साथ ही ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन राजनीतिक शास्त्र की प्राध्यापिका प्रो0 डॉ0 सीमा रानी तथा वाणिज्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 मदन मोहन वार्ष्णेय ने किया।

सर्वप्रथम क्रीड़ा कार्यक्रम में 100 मीटर दौड़ का आयोजन किया गया।इसके बाद 400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में (छात्र वर्ग में) विकास सिंह ने प्रथम, राजिक ने द्वितीय तथा पुष्पेन्द्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ (छात्रा वर्ग में) रश्मि ने प्रथम हर्षवती ने द्वितीय एवं साधना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

निर्णायकों की भूमिका श्री राजेश कुमार, डॉ0 पारूल रस्तौगी, डॉ0 दीपक दिवाकर एवं श्री हिमांशु ने निभायी। समस्त क्रीडाओं का संचालन महाविद्यालय की क्रीड़ा प्रभारी डॉ0 मंजूषा द्वारा किया गया तथा मुख्य अतिथि के रूप में आये डॉ0 हुकुम सिंह जी असि0 प्रो0 शारीरिक शिक्षा राजकीय महाविद्यालय बदायूँ ने सभी प्रतिभागियों को खेल के नियमों से अवगत कराया तथा समस्त क्रीड़ाओं को बखूबी ढंग से शुरू कराया। गोला फेंक प्रतियोगिता में छात्र वर्ग में विशाल सिंह ने प्रथम, सवेन्द्र कुमार सिंह द्वितीय एवं मो0 कैफ सैफी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्रा वर्ग में डिस्कस थ्रो में दीक्षा प्रथम निधि द्वितीय, एवं साधना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डिस्कस थ्रो (चक्का फेंक) में छात्र वर्ग से हेमन्त प्रथम, मो0 कैफ सैफी द्वितीय व गौरव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गोला फेंक में छात्रा वर्ग से दीक्षा प्रथम, निधि द्वितीय, पुष्पा तृतीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर दौड़ मैं छात्रा रश्मि प्रथम, हर्षवती द्वितीय, व जीनू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र वर्ग से प्रवीन प्रथम, राजिक द्वितीय व पुष्पेन्द्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 1500 मी0 दौड़ में छात्रवर्ग से लक्ष्मी प्रथम, रश्मि द्वितीय व हर्षवती ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र वर्ग से प्रवीन प्रथम, पुष्पेन्द्र द्वितीय एवं शिवम् में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

खेल प्रतियोगिता के दिनांक 04/02/2023 को द्वितीय दिवस का शुभारम्भ विशिष्ट अतिथि दानदाता परिवार के सदस्यों ने प्राचार्या डॉ0 सपना भारती ने माँ सरस्वती समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया गया। सर्वप्रथम 5000 मीटर दौड़ की शुरूआत की गयी। तत्पश्चात 3000 मी0 दौड़ की तैयारी की गयी। 5000 मीटर दौड़ में छात्र वर्ग से नवीन प्रथम, राजन द्वितीय तथा पुष्पेन्द्र ने तृतीय स्थान प्राप्तकिया 3000 मीटर दौड़ में रश्मि प्रथम, जीनू द्वितीय व राधा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ऊँची कूद में जीनू प्रथम लक्ष्मी द्वितीय एवं शिवांगी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ऊँची कूद छात्र वर्ग से हेमन्त ने प्रथम मो0 कैफ सैफी द्वितीय व मुनीश ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लम्बी कूद में छात्रा वर्ग से लक्ष्मी प्रथम जीनू द्वितीय व इलमा तृतीय पायदान पर रहें।

खेल आख्या 19वाँ (नवदश क्रीड़ा समारोह)

छात्र वर्ग से लम्बी कूद में हेमंत प्रथम, राजिक द्वितीय व गौरव तृतीय स्थान पर रहें। 200 मीटर दौड़ में छात्रा वर्ग में रश्मि प्रथम, लक्ष्मी द्वितीय व प्रिंयका तृतीय स्थान पर रहें। छात्रा वर्ग से 200 मीटर दौड़ में रश्मि प्रथम, लक्ष्मी द्वितीय व प्रिंयका तृतीय स्थान पर रहें। छात्र वर्ग में राजिक प्रथम, हेमन्त द्वितीय, व विक्की तृतीय स्थान पर रहे। अंत में सबसे रोमांचक 100 मीटर दौड़ की शुरूआत डॉ0 दीपक दिवाकर, दानदाता परिवार से श्री केशव अग्रवाल जी एवं श्री जतिन अग्रवाल जी ने छात्र–छात्राओं का उत्साहवर्धन करते हुये तथा बेहतरीन कमेंटरी करते हुये की। 100 मीटर दौड में प्रथम स्थान पर गौरव मुनीश द्वितीय एवं राजिक तृतीय पायदान पर रहे छात्रा वर्ग की 100 मीटर दौड़ की शुरूआत डॉ0 सीमा रानी, डॉ0 पारुल रस्तोगी तथा डॉ0 मंजूषा ने की जिसमें प्रथम स्थान पर लक्ष्मी, इलमा द्वितीय व संगीता तृतीय स्थान पर रहे। समस्त प्रतियोगिताओं के समापन के बाद छात्र चैम्पियन व छात्रा चैम्पियन की घोषणा की गयी। छात्र चैम्पियन प्रवीण पाल बी.ए. प्रथम से. एवं छात्रा चैम्पियन रश्मि बी.ए. प्रथम सेमिस्टर रहे। समापन समारोह के पश्चात प्राचार्य डॉ0 सपना भारती द्वारा सभी का आभार ज्ञापन किया गया। समस्त प्रतिभागियों को दोनों दिन लंच पैकेट वितरित किये गये। तथा चैम्पियन छात्र–छात्रा को चैम्पियन ट्राफी देकर पुरुस्कृत किया गया। क्रीड़ा समारोह में दोनों दिवसों में स्वयं सेवक/सेविकायें सौरभ पाराशरी, विशाल, रवि, प्रंशात, प्रतीक, शिवम, प्रिंयका, महक, प्रिंयांशी, सुजाता, मीरा, आशा, सरिका, निकेता, उपमा, अर्चना तथा सरिता आदिने उपस्थित रहकर कार्यक्रम की व्यवस्था को बनाये रखा।

क्रीड़ा प्रभारी

डॉ0 मंजूषा

क्रीड़ा समारोह

सत्र 2022 – 23

क्रीड़ा समारोह का उद्घाटन करते हुये मुख्य अतिथि डॉ0 हुकुम सिंह व विशिष्ट अमिथि श्रीमती कृष्णा गुप्ता, श्रीमती सविता शर्मा एवं श्रीमती हसमुखी मौर्य, महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 सपना भारती एवं प्राध्यापक गण

दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेते हुये प्रतियोगी

छात्र – छात्राओं को खेलों के नियमों से अवगत कराते हुये असि0 प्रो0 शिक्षा। (राजकीय महाविद्यालय बदायूँ) डॉ0 हुकुम सिंह

छात्राओं की दौड़ प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका का निर्वहन करते हुये डॉ0 सीमा रानी, डॉ० मदन मोहन वार्ष्णेय डॉ0 दीपक दिवाकर

क्रीड़ा समारोह

सत्र 2022 – 23

विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुये मुख्य अतिथि, महाविद्यालय की प्राचार्या एवं क्रीड़ा प्रभारी डॉ0 मंजूषा, अन्य प्राध्यापक गण

क्रीड़ा समारोह के समापन सत्र में अतिथियों एवं छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुये प्राचार्या डॉ0 सपना भारती

समापन सत्र में छात्र व छात्रा चैम्पियन को चैम्पियन ट्राफी से पुरूस्कृत करते हुये प्राचार्या एवं प्राध्यापक गण

वाणिज्य संकाय परिषद पुनगर्ठन सत्र 2021–22

प्राचार्य डॉ0 सपना भारती की अध्यक्षता एवं डॉ0 मदन मोहन वार्ष्णेय के संयोजकत्व में वाणिज्य संकाय परिषद का पुनर्गठन दिनांक 08/03/22 को वाणिज्य स्मार्ट कक्ष में किया गया जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये–

अध्यक्ष	–	संजीव कुमार	बी0 कॉम0 तृतीय
उपाध्यक्ष	–	निकिता	बी0 कॉम0 द्वितीय
सचिव	–	शशिकान्त	बी0 कॉम0 प्रथम
छात्र प्रतिनिधि	–	दीपक श्रीवास्तव	बी0 कॉम0 प्रथम
छात्रा प्रतिनिधि	–	दीक्षा	बी0 कॉम0 प्रथम

वाणिज्य संकाय द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें निम्न छात्र–छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया।

1. वाद – विवाद प्रतियोगिता –

प्रथम	–	मौ0 दानिश	बी0 कॉम0 द्वितीय
द्वितीय	–	शशिकान्त	बी0 कॉम0 प्रथम
तृतीय	–	दीपक श्रीवास्तव	बी0 कॉम0 प्रथम

2. विषय ज्ञान प्रतियोगिता –

प्रथम	–	दीपक श्रीवास्तव	बी0 कॉम0 प्रथम
प्रथम	–	किशन कुमार	बी0 कॉम0 द्वितीय
द्वितीय	–	मौ0 दानिश	बी0 कॉम0 द्वितीय
तृतीय	–	विकास वार्ष्णेय	बी0 कॉम0 प्रथम

वाणिज्य संकाय अध्यक्ष
डॉ0 मदन मोहन वार्ष्णेय

वाणिज्य संकाय परिषद पुनगर्ठन सत्र 2022–23

दिनांक 21/01/2023 को वाणिज्य संकाय प्रभारी डॉ0 मदन मोहन वार्ष्णेय के संयोजकत्व में वाणिज्य संकाय का पुनर्गठन किया गया। जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये–

अध्यक्ष	–	कु0 मुस्कान	एम0 कॉम0 प्रथम
उपाध्यक्ष	–	फरहीन	एम0 कॉम0 प्रथम
सचिव	–	चिराग पाठक	बी0 कॉम0 सेमिस्टर प्रथम
छात्र प्रतिनिधि	–	शाकिव नवी	बी0 कॉम0 सेमिस्टर प्रथम
छात्रा प्रतिनिधि	–	लक्ष्मी वार्ष्णेय	एम0 कॉम0 प्रथम

इसके अतिरिक्त वाणिज्य संकाय में दो प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ
जिसमें निम्नांकित छात्र/छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया–

1. वाद – विवाद प्रतियोगिता –

प्रथम	–	शाकिव नवी	बी0 कॉम0 सेमिस्टर प्रथम
प्रथम	–	दीपक श्रीवास्तव	बी0 कॉम0 सेमिस्टर तृतीय
द्वितीय	–	अनमोल वर्मा	बी0 कॉम0 सेमिस्टर प्रथम
तृतीय	–	चिराग पाठक	बी0 कॉम0 सेमिस्टर प्रथम

2. विषय ज्ञान प्रतियोगिता –

प्रथम	–	दीपक श्रीवास्तव	बी0 कॉम0 सेमिस्टर तृतीय
द्वितीय	–	विकास वार्ष्णेय	बी0 कॉम0 सेमिस्टर तृतीय
द्वितीय	–	पूजा	एम0 कॉम0 प्रथम
तृतीय	–	चिराग पाठक	बी0 कॉम0 सेमिस्टर प्रथम

वाणिज्य संकाय–

1– डॉ0 एम0 एम0 वार्ष्णेय (वाणिज्य संकाय प्रभारी)
2– श्री दीपक हरपाल दिवाकर (असि0 प्रो0 वाणिज्य)
3– श्री हिमांशु (असि0 प्रो0 वाणिज्य)

राजनीति विज्ञान परिषद

दिनांक 07/01/2022

महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान परिषद के तत्वावधान में आयोजित भाषण प्रतियोगिता विषय शिक्षाविद सावित्री बाई फूले–महिला शिक्षा की पुरजोर समर्थक में निम्नलिखित छात्र–छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	पद
प्रियांशी गौतम	श्री जगत पाल	बी.ए. प्रथम	प्रथम
वैभव गुप्ता	श्री प्रदीप कुमार गुप्ता	बी.ए. प्रथम	द्वितीय
सौरभ पाराशरी	श्री हरिओम पाराशरी	बी.ए. तृतीय	तृतीय

संयोजक
प्रो० (डॉ0) सीमा रानी

राजनीति विज्ञान परिषद

महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान परिषद के तत्वावधान में आयोजित चार्ट प्रतियोगिता में निम्नलिखित छात्रो ने स्थान प्राप्त किया–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
वैभव गुप्ता	श्री प्रदीप गुप्ता	बी.ए. प्रथम	प्रथम
शिवानी	श्री ब्रजपाल	बी.ए. प्रथम	द्वितीय
स्वाति पाठक	श्री प्रवीन पाठक	बी.ए. प्रथम	तृतीय

संयोजक
प्रो० (डॉ0) सीमा रानी

राजनीति विज्ञान परिषद

दिनांक 20/01/2023

महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान परिषद के तत्वावधान में आयोजित सेमिनार प्रतियोगिता विषय – मौलिक अधिकार'' में निम्नलिखित छात्र/छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
मुस्कान	श्री संजीव कुमार सिंह	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	प्रथम
प्रियांशी गौतम	श्री जगत पाल	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	द्वितीय
लक्ष्मी	श्री भूदेव	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	तृतीय

संयोजक
प्रो० (डॉ0) सीमा रानी

राजनीति विज्ञान परिषद

महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान परिषद के तत्वावधान में आयोजित चार्ट प्रतियोगिता में निम्नलिखित छात्र/छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
तनु कश्यप	श्री रामकिशोर	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	प्रथम
आभा	श्री जगत पाल	बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	द्वितीय
अरविन्द	श्री भूपराम	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	द्वितीय
साक्षी	श्री अमरपाल	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर	तृतीय

संयोजक
प्रो० (डॉ0) सीमा रानी

अंग्रेजी विभाग परिषद 2022 – 23

दिनांक 19/01/2023 को अंग्रेजी विभाग परिषद का पुर्नगठन महाविद्यालय प्राचार्य डॉ0 सपना भारती के निर्देशन में व विभाग प्रभारी डॉ0 पारूल रस्तोगी के संयोजन में किया गया। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों के नियुक्त किया गया।

अध्यक्ष	–	सलौनी शर्मा	एम0 ए0 द्वितीय
उपाध्यक्ष	–	साहिबा	एम0 ए0 प्रथम
सचिव	–	प्रियांशी भारद्वाज	एम0 ए0 प्रथम
कोषाध्यक्ष	–	प्रभा मौर्य	बी0ए0 तृतीय
छात्र प्रतिनिधि	–	अरविन्द शाक्य	बी0 ए0 प्रथम सेमिस्टर
छात्र प्रतिनिधि	–	तनु कश्यप	बी0 ए0 द्वितीय सेमिस्टर

दिनांक 19/01/2023 को अंग्रेजी विभाग परिषद के तत्वावधान में त्वरित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व प्राचार्य डॉ0 सपना भारती द्वारा प्रतिभागी छात्रों में स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया जिसका परिणाम निम्नवत है–

1. वाद – विवाद प्रतियोगिता –

प्रियांशी भारद्वाज	–	प्रथम स्थान	एम0 ए0 प्रथम
गुडडो	–	द्वितीय स्थान	एम0 ए0 प्रथम
देवकी	–	तृतीय स्थान	बी0 ए0 द्वितीय सेमिस्टर

दिनांक 19/01/2023 को अंग्रेजी विभाग परिषद के तत्वावधान में विषय ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका परिणाम निम्नवत हैं

तनुकश्यप	–	प्रथम स्थान	बी0 ए0 द्वितीय सेमिस्टर
सलौनी शर्मा	–	द्वितीय स्थान	एम0 ए0 द्वितीय
करिश्मा	–	तृतीय	बी0 ए0 द्वितीय सेमिस्टर

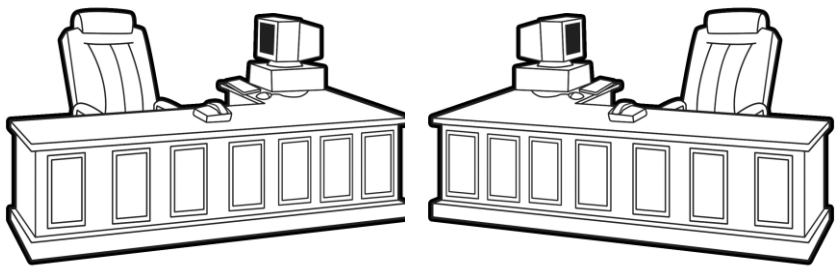

भौतिकी विभाग परिषद

सत्र 2022 – 23

दिनांक 28/12/2022 को महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 सपना भारती की अध्यक्षता में भौतिकी विभाग परिषद का गठन किया गया जिसमें निम्न पदाधिकारी मनोनीत किये गये।

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
शनि कुमार शाक्य	श्री किशनलाल	बी.एस.सी. तृतीय	अध्यक्ष
प्रवेन्द्र कुमार मौर्य	श्री कैलाश मौर्य	बी.एस.सी. तृतीय	उपाध्यक्ष
साधना	श्री महावीर सिंह	बी.एस.सी. द्वितीय सेमिस्टर	सचिव
आमिर खान	श्री अलीरजा	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	छात्र प्रतिनिधि
प्रिंयका	श्री सुरेशपाल	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	छात्रा प्रतिनिधि

दिनाँक 28/12/2022 को भौतिक विभाग परिषद के तत्वावधान में विषय ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम निम्नवत है–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
शनि कुमार शाक्य	श्री किशनलाल	बी.एस.सी. तृतीय	प्रथम
अंशिका शाक्य	श्री जीतेन्द्र कुमार	बी.एस.सी. द्वितीय सेमिस्टर	द्वितीय
काजल त्रिपाठी	श्री सुशील कुमार शर्मा	बी.एस.सी. द्वितीय सेमिस्टर	द्वितीय
प्रवेन्द्र कुमार मौर्य	श्री कैलाश मौर्य	बी.एस.सी. तृतीय	द्वितीय
गुलफशा	श्री मोहम्मद आरिफ	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	तृतीय
अनामिका	श्री भुवनेश्वर मिश्रा	बी.एस.सी. द्वितीय सेमिस्टर	तृतीय
प्रिंयका	श्री सुरेश पाल	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	तृतीय

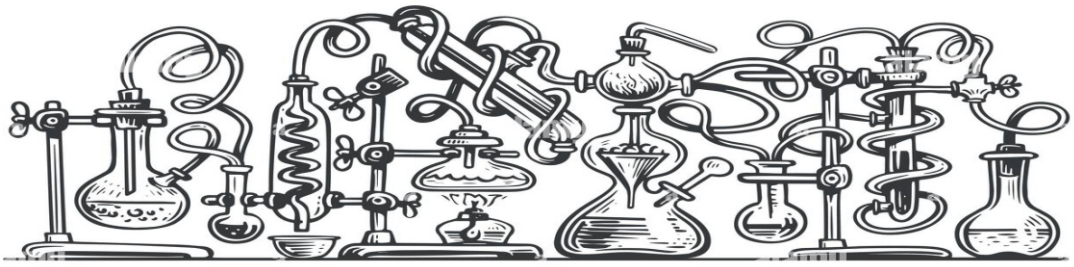

भौतिकी विभाग परिषद

सत्र 2022 – 23

चार्ट /मॉडल प्रतियोगिता का परिणाम है–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
आमिर खान (मॉडल)	श्री अलीरजा	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	प्रथम
गुलफशा (चार्ट)	श्री मोहम्मद आरिफ	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	द्वितीय
प्रिंयका (चार्ट)	श्री सुरेशपाल	बी.एस.सी. द्वितीय सेमिस्टर	द्वितीय
शनि कुमार शाक्य (चार्ट)	श्री किशनलाल	बी.एस.सी. तृतीय सेमिस्टर	तृतीय

सेमिनार प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत है–

छात्रा–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
आमिर खान	श्री अलीरजा	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	प्रथम
शनि कुमार शाक्य	श्री किशनलाल	बी.एस.सी. तृतीय सेमिस्टर	प्रथम
काजल त्रिपाठी	श्री सुशील कुमार शर्मा	बी.एस.सी. द्वितीय सेमिस्टर	द्वितीय
प्रिंयका	श्री सुरेश पाल	बी.एस.सी. प्रथम सेमिस्टर	तृतीय

क्रीड़ा प्रभारी

डॉ0 मंजूषा

विभागाध्यक्ष भौतिकी

डॉ0 मंजूषा

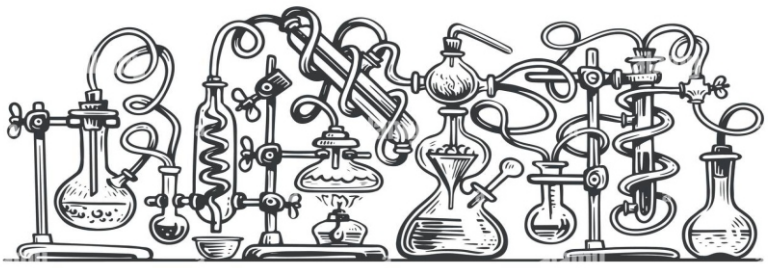

DRA Govt. Degree P.G. College Bisauli (Budaun)

Department of Mathematics

Council of Mathematical Sciences (2022-23)

Date : - 24/01/23

Post	Student's Name	Father's Name	Class
President	Sani Kumar Shakya	Sh. Kishan Lal	B.Sc.-III
Vice President	Smriti	Sh. Khushpal Singh	B.Sc.-II
Secretary	Pravendra Kumar Maurya	Sh. Kailash Maurya	B.Sc.-III
Treasurer	Shivani	Sh. Aaram Singh	B.Sc.-II
Boy's Representative	Ashutosh Tripathi	Sh. Sushil Tripathy	B.Sc.-1st Semester
Girl's Representative	Mati	Sh. Yahodanandan	B.Sc.-1st Semester

COMPETITIONS

Seminar : -

Student's Name	Father's Name	Class	Positions
Sani Kumar Shakya	Sh. Kishan Lal	B.Sc.-III	Ist
Mati	Sh. Yahodanandan	B.Sc.-1st Semester	IInd
Gulafsa	Sh. Mohd. Arif	B.Sc.-1st Semester	IIIrd

Chart Competition:-

Student's Name	Father's Name	Class	Positions
Shivani	Sh. Aaram Singh	B.Sc.-II	Ist
Smriti	Sh. Khuspal Singh	B.Sc.-II	IInd
Priyanka	Sh. Suresh Pal	B.Sc.-1st Semester	IIIrd
Gulafsa	Sh. Mohd Arif	B.Sc.-1st Semester	IIIrd

Subject Aptitude Test:-

Student's Name	Father's Name	Class	Positions
Ashutosh Tripathi	Sh. Sushil Tripathi	B.Sc.-1st Semester	Ist
Pravendra Kumar Maurya	Sh. Kailash Maurya	B.Sc.-II	IInd
Rakhi	Sh. Shripal	B.Sc.-1st Semester	IInd
Mati	Sh. Yashodanandan	B.Sc.-1st Semester	IIIrd
Chhaya Yadav	Sh. Satyendra	B.Sc.-1st Semester	IIIrd
Dilip Kumar Singh	Sh. Ravindra Kumar Singh	B.Sc.-II	

Rajesh Kumar
Convener

विभागीय परिषद पुर्नगठन की एक झलक

राष्ट्रीय सेवा योजना वार्षिक आख्या :– 2022–2023

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के तहत छात्र/छात्राओं का व्यक्तित्व विकास ही नहीं अपितु सर्वागीण किवकास होता है यह शिक्षा का तृतीय आयाय है इस कार्यक्रम के द्वारा छात्र/छात्राओं का ग्रामवासियों से रुबरु होना व उनकी समस्याओं को जिम्मेदार नागरिकों व अधिकारियों तक प्रतिनिधि के रुप में पहुँचाना व सतत् तैयार होकर शासन की उवयोगी व सुलभ योजनाओं का लाभ जन जन तक पहुँचाना व उनको उनके अधिकारों व कर्तव्यों का ज्ञान कराना व संगठित होकर कार्य करना यही राष्ट्रीय सेवा योजना का मूल उद्देश्य है।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाईयों द्वारा वार्षिक कार्यक्रमों व आजादी के अमृत महोत्सव, मिशन शक्ति के तहत कार्यक्रमों में 01/07 जुलाई वन महोत्सव सप्ताह 01 अगस्त से 07 अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह 01 सितम्बर से 07 सितम्बर तक राष्ट्रीय पोषण सप्ताह 19 नवम्बर से 25 नवम्बर तक विश्व विरासत सप्ताह 11 से 17 जनवरी सड़क सुरक्षा सप्ताह आदि साप्ताहिक कार्यक्रमों में विभिन्न गतिविधियों जैसे पोस्टर प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, नारा लेखन, रंगोली प्रतियोगिता जागरुकता अभियान के तहत रैली का आयोजन किया गया।

इसी क्रम में आजादी के अमृत महोत्सव व मिशन शक्ति के तत्वाधान में शासन से प्राप्त सूची के अनुसार दिवसों का आयोजन किया गया। जिसमें उपविषयों के अनुसार गोष्टियों का आयोजन किया गया व छात्र छात्राओं का ज्ञान वर्धन किया गया व बड़े-बड़े राष्ट्रीय पर्वों को बड़े उत्साह से मनाया गया। राष्ट्रीय पर्वो के अतिरिक्त आर्य समाज स्थापना दिवस 10 अप्रैल, 11 अप्रैल महात्मा ज्योतिबा फूले जयंती, 14 अप्रैल बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती, 22 अप्रैल पृथ्वी दिवस, 31 मई तम्बाकू निरोधक दिवस, 5 जून पर्यावरण दिवस, 14 जून विश्व रक्तदान, 21 जून अन्तराष्ट्रीय योग दिवस, 5 दिसम्बर शिक्षक दिवस, 16 सितम्बर ओजोन दिवस 24 सितम्बर छै दिवस, 09 अक्टूबर महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, 31 अक्टूबर राष्ट्रीय एकता दिवस, 25 नवम्बर अन्तराष्ट्रीय हिंसा अमूल्य दिवस, 26 नवम्बर संविधान दिवस, 23 दिसम्बर किसान दिवस, 25 दिसम्बर सुशासन दिवस, 25 जनवरी राष्ट्रीय मतदाता दिवस, 26 जनवरी गणतन्त्र दिवस, 30 जनवरी शहीद दिवस इत्यादि मनाये गये जिसमें संगोष्ठियों के माध्यम से छात्राओं का ज्ञान वर्धन किया गया। सत्र 2022-23 में दोनों ईकाईयों द्वारा ग्राम हतसा व मदन जुड़ी में चार एक दिवसीय समान्य व सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन निम्न कार्यक्रम अनुसार किया गया।

प्रथम एक दिवसीय शिविर	07/02/2023	स्वयं सेवक दिवस
द्वितीय एक दिवसीय शिविर	08/02/2023	कौशल विकास दिवस
तृतीय एक दिवसीय शिविर	09/02/2023	बैकिंग एवं वित्तीय जागरुकता
चतुर्थी एक दिवसीय शिविर	29/03/2023	महिला सुरक्षा एवं सशक्ति करण दिवस

इसी क्रम में का सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम हतसा (छात्रा ईकाई) व ग्राम मदन जुड़ी (छात्र ईकाई) आयोजित किया गया।

शिविर स्थलः - संवितित उच्च प्राथमिक विद्यालय हतसा छात्रा ईकाई

दिनांक	विषय	दिवस
15/02/2023	उद्घाटन एवं संकल्पना	प्रथम दिवस
16/02/2023	कौशल विकास	द्वितीय दिवस
17/02/2023	मतदाता जागरुकता	तृतीय दिवस
18/02/2023	विधिक साक्षरता दिवस	चतुर्थ दिवस
19/02/2023	महाशिवरात्रि पर्व सड़क सुरक्षा दिवस	पंचम दिवस
20/02/2023	योग एवं ध्यान दिवस	षष्ठ दिवस
21/02/2023	समापन	दिवस

सात दिवसीय विशेष शिविर में प्रत्येक दिवस पर विषय वार बौद्धिक संगोष्ठियो का आयोजन किया गया प्राध्यापकों व छात्र छात्राओं द्वारा विचार प्रस्तुत किये गये प्रतिदिन लक्ष्य गीत से दिन की शुरुआत की गयी, पोस्टर प्रतियोगिता, नारा लेखन, गाँव में छात्रों द्वारा शासन की जनहित योजनाओं के लाभ का सर्वे व अवगत कराना इत्यादि कार्य सराहनीय कार्य छात्राओं व प्राध्यापक वन्धओं द्वारा किया गया समय समय पर डॉ० सीमा रानी सहयोगी कार्यक्रम अधिकारी व कार्यक्रम अधिकारी व कार्यक्रम अधिकारी डॉ. पारुल रस्तोगी व डॉ० दीपक हरपाल दिवाकर जी द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य चिन्ह व अन्य जानकारी छात्र छात्राओं को दी गयी। कैम्प का औचक निरीक्षण प्राचार्य डॉ० सपना भारती द्वार किया गया। छात्रा ईकाई में सर्वश्रेष्ठ स्वयं सेविका सोनाली को चुना गया। छात्र-ईकदिये सर्वश्रेष्ठ स्वयं सेवक आशीष कुमार व स्वयं सेविका जीनू रही उद्घाटन व सामापन सत्र में प्राचार्य डॉ० सपना भारती, डॉ० सीमारानी, डॉ० एम०एम० वार्ष्णेय, डॉ० राजेश कुमार डॉ० मंजूषा आदि उपस्थिति रहे। शिविर के दौरान ग्राम हतसा की प्रधानाध्यापिका श्रीमती चंचल ठक्कर व ग्राम प्रधान श्री रामबाबू जी का सहयोग सराहनीय रहा ।

डॉ पारुल रस्तोगी
कार्यक्रम अधिकारी - छात्रा इकाई
राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ दीपक हरपाल दिवाकर
कार्यक्रम अधिकारी - छात्र इकाई
राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना

रा0 से0 यो0 के विशेष शिविर के उद्घाटन सत्र में स्वयं सेवक व स्वयं सेविकाओं की रैली को मदनजुड़ी व ग्राम हतसा के लिए खाना करती प्राचार्य डॉ0 सपना भारती व अन्य प्राध्यापक

संवलित उच्च प्राथमिक विद्यालय हतसा की प्रधानाध्यापिका चंचल ठक्कर जी के स्मृति चिन्ह भेंट रा0 से0 यो0 के स्वयं सेवक व स्वयं सेविका

रा0 से0 यो0 के विशेष शिविर के सातवें दिन समापन सत्र में कार्यो का सराहना व आशीष वचन देते प्राचार्य डॉ0 सपना भारती

रा0 से0 यो0 के विशेष शिविर के सातवें दिन समापन सत्र के उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्जवलन करते अतिथि गण, प्राचार्य डॉ0 सपना भारती

रोवर्स - रेंजर्स की वार्षिक आख्या 2022-23

डॉ० सीमा रानी
रेंजर्स प्रभारी

डॉ० राजेश कुमार
रोवर्स प्रभारी

रोवर्स रेंजर्स के तीन दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का दिनांक 25-01-23 को महाविद्यालय प्राचार्य प्रो सपना भारती उद्घाटन द्वारा स्काउट गाइड ध्वज का ध्वजारोहण कर किया गया। कैम्प में पंजीकृत रोवर्स रेंजर्स को प्रशिक्षक श्री सतपाल गुप्ता (जिला प्रशिक्षण आयुक्त) द्वारा स्काउट गाइड की प्रार्थना व झण्डा गीत कराया गया। प्राचार्य प्रो० सपना भारती द्वारा शिविरार्थियो को कैम्प प्रारम्भ पर शुभकामनाएं दी तथा कैम्प के दौरान सीखी गई बातों को अपने जीवन में पालन करने को कहा। रेंजर्स प्रभारी प्रो. सीमा रानी ने आत्म-अनुशासन के विषय में शिविरार्थियो को बताया। उन्होने कहा कि आत्म अनुशासन के द्वारा ही हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते है। रोवर्स प्रभारी डॉ० राजेश कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। उद्घाटन सत्र में समस्त महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा। इस दिवस को मतदान दिवस के रुप मे मनाया गया तथा शिविरार्थियों को मतदाता शपथ भी दिलाई। शिविर का द्वितीय दिवस 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया गया। प्राचार्य अपना भारती द्वारा वजारोहण किया गया तथा उच्च शिक्षा निदेशक का संदेश पढ़ा। प्राचार्य ने कहा कि सरकारों द्वारा विद्यार्थियों के लिए अनेक योजनाएं बनाई जाती है जिसका लाभ उन्हें उठाना चाहिए रेंजर्स प्रभारी प्रो0 सीमा रानी ने कहा कि देशभक्ति सिर्फ 26 जनवरी या 15 अगस्त पर ही नही वरन सम्पूर्ण जीवन में उतारनी चाहिए। रोवर्स प्रभारी डॉ० राजेश कुमार ने कहा कि जरुरी नहीं कि आप बड़े-बड़े काम करके ही देश के काम आ सकते है वरन अपने छोटे - छोटे प्रयासो से भी देश सेवा कर सकते है। प्रशिक्षक श्री सतपाल गुप्ता द्वारा शिविरार्थियो को गाठे बंधन प्राथमिक चिकित्सा, वीपी सिक्स बिना वर्तन का भोजन, ध्वज शिष्टाचार, पुल तथा टैन्ट निर्माण सम्बन्धी जानकारियां दी। 27-01-23 से महाविद्यालय में रोवर्स रेंजर्स के तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन हो गया। शिविर के पूर्वान्ह में शिविरार्थियों के मध्य विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमे टैन्ट, गेट। द्वारसज्जा, टावर, पुल, रंगोली, अनुशासन स्काउटिंग जानकारी, झांकी, बिना वर्तन के खाना एवं फूड प्लाजा, तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्मिलित थे। शिविर के अपराह्न में मुख्य अतिथि प्रिया कश्यप, मैनेजर भारतीय स्टैंट बैंक ने शिविरार्थियों को पुरस्कार वितरण किया तथा कहा कि प्रत्येक शिविरार्थी विशेष योग्यता लिए होता है और उसे अपनी योग्यता को आगे लाना चाहिए तथा अपने निरन्तर प्रयास से ये किया जा सकता है, महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा शिविरार्थियों को आशीष वचन दिए गए। रोवर्स प्रभारी डॉ० राजेश कुमार द्वारा शिविरार्थियो को प्रेरणादायक विचारों से ओतप्रोत किया गया, उन्हें सही दिशा में चलने की शिक्षा प्रदान की। रेंजर्स प्रभारी डॉ० सीमा रानी ने कहा की शिविराधियो को अपने प्रशिक्षु श्री सतपाल गुप्ता द्वारा सिखाई गई बातो को अपने जीवन में उतारना है तथा समाज की लाभान्वित करना है। इस कार्यक्रम में रोवर्स-रेंजर्स की विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण सम्मानित अतिथि व प्राचार्य महोदय द्वारा किया गया। साथ ही रोवर्स रेंजर्स के प्रशिक्षण प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया।

युवा महोत्सव

उद्यमिता रोजगार मेले में स्टॉल का निरीक्षण करती उपजिलाधिकारी बिसौली सुश्री ज्योति शर्मा

उद्यमिता रोजगार मेले में छात्राओं द्वारा लगाई गयी स्टॉल

छात्राओं द्वारा बनाये गये उत्पादों का निरीक्षण करती प्राचार्य प्रो० सपना भारती एवं अन्य प्राध्यापक गण

मेहन्दी लगे हाथ प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में प्राचार्य प्रो० सपना भारती एवं अन्य प्राध्यापक गण

युवा महोत्सव/वार्षिकोत्सव

युवा महोत्सव "लहर" में आर्शीवचन देते हुए अध्यक्ष – नगर पालिका परिषद बिसौली श्री अवरार अहमद

वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह 2022 में छात्राओं को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक बदायूँ डॉ० प्रवेश कुमार यादव

मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक बदायूँ डॉ० प्रवेश कुमार यादव को स्मृति चिन्ह प्रदान करती हुई प्राचार्य

वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह में उपस्थित मेधावी छात्र-छात्रायें

वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह की झलकियां

वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा अलंकरण समारोह 2023 का संचालन करते हुए समारोहक डॉ० मदन मोहन वार्ष्णेय एवं मंचासीन अतिथि गण

मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए अतिथि गण

मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए अतिथि गण

शैक्षिक उत्कृष्टता पुरूस्कार प्रदान करते हुए मुख्य अतिथिगण

महिलाएं जागरूक होंगी तभी तरक्की करेगा देश

माता-पिता सबसे अच्छे मित्र उनसे शेयर करें अपनी हर बात

युवा ही होते देश के भाग्यविधाता

महिला हो सशक्त तो मिलेगी समाज को दिशा

साक्षात समाचार

युवा महोत्सव लहर के दूसरे दिन छात्र छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्रः सपना भारती

भौतिक विज्ञान परिषद का गठन किया गया

डीआरए राजकीय महाविद्यालय में जलियांवाला बाग मनाया शहीदी दिवस

महाविद्यालय में अंग्रेजी व भौतिक विज्ञान परिषद का किया गठन

दो दिवसीय युवा महोत्सव लहर का आयोजन किया गया

खुद भी समझें और दूसरों को भी समझाएं शिक्षा का महत्व

एक नजर

अंग्रेजी विभाग परिषद की अध्यक्ष बनी हर्षवती

प्रतियोगिताओं का आयोजन

मेरी बचत मेरा खाता पर प्रशिक्षण

रोवर-रेंजर्स शिविर के समापन समारोह में प्रतियोगिताओं का आयोजन

डीआरए राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में छात्र एवं छात्राओं ने देशभक्ति गीत गायन में भाग लिया

कैंपस 30

जूनियर्स ने सीनियर्स को दी विदाई

अध्यक्ष हर्षवती, सचिव मनोनीत

ऑनलाइन शिक्षा रही सिरदर्द

डीपीएस में 200 सीट के लिए प्रवेश परीक्षा संपन्न

डीआरए राजकीय महाविद्यालय में जलियांवाला बाग शहीदी दिवस मनाया गया